राजनीति में मतदाता का निर्णय ही सर्वोपरि होता है। यदि कांग्रेस अपने गठबंधन के माध्यम से किसी तरह सत्ता हासिल करने में कामयाब हो जाती है, तो ये सारे कयास हवा हो जाएंगे। इतिहास विजेताओं पर लगे दाग-धब्बों की अनदेखी करने का अभ्यस्त जो है। क्या आपको लगता है कि ऐसा होने जा रहा है?

# राहुल, रणछोड़ या रणनीतिज्ञ

शशि शेखर

'मैंने पहले ही यह भी बता दिया था कि शहजादे वायनाड में हार के डर से अपने लिए दूसरी सीट खोज रहे हैं। अब इन्हें अमेठी से भागकर रायबरेली सीट चुननी पड़ी है। ये लोग घूम-घूमकर सबको कहते हैं- डरो मत! मैं भी इन्हें यही कहूंगा- डरो मत! भागो मत!'- अपनी चुटीली शैली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आगे जोड़ते हैं- 'मैं पहले भी आपसे कहता था कि इनकी सर्वोच्च नेता भाग जाएंगी, वह भाग गईं। उन्होंने उत्तर प्रदेश छोड़कर राजस्थान से चुनाव लड़ा।'

प्रधानमंत्री को सोनिया और राहुल गांधी पर तंज कसने का यह मौका खुद कांग्रेस पार्टी ने दिया है। गए गुरुवार की शाम से ही संकेत मिलने लगे थे कि राहुल गांधी रायबरेली से और किशोरी लाल शर्मा उर्फ केएल शर्मा अमेठी से ताल ठोकेंगे। शर्मा जी अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सचिव हैं और पिछले तीन दशकों से 'परिवार' की ओर से रायबरेली व अमेठी निर्वाचन क्षेत्रों में 'कामकाज' संभाल रहे हैं।

**आजकल**

जो उनके इतिहास और भूगोल से वाकिफ नहीं हैं, उन्हें बता दें कि वह मूलतः पंजाब के रहने वाले हैं, पर परिवार का स्थायी प्रतिनिधि होने के नाते उनके दोनों संसदीय सीटों के कार्यकर्ताओं से बेहतरीन संबंध हैं। कांग्रेस का कहना है कि इस नाते केएल शर्मा अमेठी से चुनाव लड़ने के हकदार हैं, और वह स्मृति ईरानी को हरा देंगे।

क्या ऐसा संभव है?

लोकतंत्र में असंभव तो कुछ भी नहीं। जब 1977 में राज नारायण इंदिरा गांधी को हरा सकते हैं और 2019 में स्मृति ईरानी राहुल गांधी को क्लीन बोल्ड कर सकती हैं, तो नतीजे घोषित होने तक इस सिलसिले में कुछ न बोलना ही बेहतर रहेगा। हालांकि, स्मृति ईरानी और केएल शर्मा की 'फेस वैल्यू' में जमीन-आसमान का अंतर है। शर्मा अब तक नेपथ्य से कामकाज सम्हालते थे, जबकि स्मृति बेहद आक्रामक हैं। यह लड़ाई फिलहाल बराबर की प्रतीत नहीं होती है।

नेहरू-गांधी परिवार का अमेठी से पुराना नाता रहा है। 1977 में संजय गांधी यहां से चुनाव लड़े, पर हार गए थे। संजय अकेले नहीं थे, उनकी मां इंदिरा गांधी भी पड़ोस की रायबरेली से रपट गई थीं। अगला चुनाव मध्यावधि था और 1980 के मतदान ने संजय और इंदिरा, दोनों के पक्ष में मुनादी की थी। तब से 2019 तक नेहरू-गांधी परिवार और अमेठी दूध-शक्कर माने जाते थे। अब, राहुल की रुखसती से बीच चुनाव में यह संदेश जरूर जाएगा कि कांग्रेस कहीं-न-कहीं हिचक रही थी। भाजपा ने बिना समय गंवाए हमला बोल दिया है। प्रधानमंत्री, रक्षा मंत्री, गृह मंत्री सहित सभी के शब्दबाण चुनावी फिजां को गरमा रहे हैं।

नेहरू-गांधी परिवार ने अमेठी का परित्याग क्यों किया?

कांग्रेस के कर्णधारों ने संभवतः सोचा होगा कि अगर प्रियंका और राहुल पड़ोसी सीटों से चुनाव लड़ते हैं, तो उन पर परिवारवाद का आरोप सघन हो जाएगा। जीत जाने की स्थिति में भाई-बहन सदन में खुद भले ही सहज रहते, पर विपक्ष और नुक्ताचीनी के अभ्यस्त आलोचक, दोनों को मौका मिल जाता, वे तुलना शुरू कर देते। किसने क्या, कितना और क्यों बोला, सत्र-दर-सत्र यह बहस चलती, इससे गलत संदेश जा सकता था। गांधी परिवार इस मामले में बेहद सजग रहता है। वहां जिम्मेदारियां साफ तौर पर विभाजित की जाती रही हैं। यही वजह है कि किसी पारिवारिक कलह के संकेत एक बार के अलावा कभी बाहर नहीं आए। वह मौका था, संजय गांधी के दुखद अवसान के बाद मेनका गांधी की '1 सफदरजंग रोड' से रवानगी। तब से अब तक मेनका और वरुण गांधी के राजनीतिक रास्ते राहुल गांधी और उनके परिवार से अलग हैं।

कांग्रेस के नेता इस तथ्य से वाकिफ हैं कि अमेठी को छोड़ना गलत संदेश दे सकता है, इसीलिए वे तर्क दे रहे हैं कि रायबरेली से नेहरू-गांधी परिवार का नाता अमेठी के मुकाबले

दशकों पुराना है। वर्ष 1952 में फिरोज गांधी यहां से जीते थे। उनके बाद इंदिरा गांधी, इंदिरा के पश्चात सोनिया और सोनिया के रोजमर्रा की राजनीति से 'बैक सीट' पर जाने के बाद राहुल इस विरासत को संभालने के लिए आगे आए हैं। उनके नामांकन में समूचे परिवार के साथ कांग्रेस के आला पदाधिकारी जुटे। समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता एकजुटता दिखाते हुए उनके साथ थे। मतलब साफ है, गठबंधन अमेठी परित्याग को तार्किक जामा पहनाना चाहता है।

इस विमर्श में एक और अहम सवाल उठता है कि अगर राहुल गांधी जीत भी जाते हैं, तो इससे कांग्रेस को कितना लाभ होगा? पार्टी प्रदेश की 17 सीटों पर यह चुनाव लड़ रही है, लेकिन क्या आपको उसके पांच प्रत्याशियों के भी नाम ध्यान आते हैं? कांग्रेस प्रदेश में पहले से दयनीय स्थिति में है। पिछले विधानसभा चुनाव में प्रियंका गांधी पार्टी की प्रभारी महासचिव थीं। कांग्रेस ने कुलजमा 398 सीटों पर ताल ठोकी थी, मगर जीती कितनी? सिर्फ दो! इनमें से एक आराधना मिश्र हैं। रामपुर खास की जिस सीट पर वह पिछले लगभग दस साल से जीत रही हैं, उसे उनके पिता प्रमोद तिवारी ने बड़े जतन से गढ़ा है। प्रमोद तिवारी के ही संबंधों, संपर्कों का असर था कि समाजवादी पार्टी ने यहां से उम्मीदवार न उतारकर उनकी राह आसान की। दूसरे हैं, महाराजगंज जनपद के फरेंदा से वीरेंद्र चौधरी। चौधरी साहब अब कांग्रेस के टिकट पर लोकसभा चुनाव लड़ रहे हैं। क्षेत्र में उनका जो भी प्रभाव हो, पर समूचे प्रदेश में उन्हें जानने वालों की संख्या कुछ खास नहीं है।

ऐसे में, राहुल अगर जीत भी जाएं, तो उससे कांग्रेस को उत्तर प्रदेश में कोई खास फायदा होता नहीं दिख रहा है। इसके लिए उन्हें उत्तर प्रदेश में अधिक समय लगाने के साथ लोगों को समझाने के लिए पर्याप्त नैतिक आधार भी जुटाना होगा। सोशल मीडिया के इस दौर में सभी जानते हैं कि वह कुछ दिनों पहले वायनाड में वायदा कर रहे थे कि यही मेरा परिवार है और मैं इसे छोड़कर नहीं जाऊंगा। आज रायबरेली में वह विरासत के नाम पर ताल ठोक रहे हैं। अगर वह दोनों सीट जीत जाते हैं, तो किसका परित्याग करेंगे? केरल छोड़ेंगे, तो यह उन लोगों की अवहेलना होगी, जिन्होंने संकट के समय में उन्हें जिताया। यदि रायबरेली छोड़ेंगे, तब भी इसी तरह की बातें उठेंगी।

यहां एक और तथ्य गौरतलब है। कन्नौज में अखिलेश यादव ने अपने भतीजे तेजप्रताप यादव को चुनावी मैदान में उतारा था। पता नहीं क्यों, दो दिन के भीतर उनका इरादा बदल गया और वह खुद चुनावी मैदान में ताल ठोकने उतर आए। क्या उन्हें आभास हो गया था कि गांधी परिवार इस बार अमेठी को अलविदा बोलने वाला है? अब अगर राहुल और अखिलेश, दोनों विजयी घोषित होते हैं, तब भी अखिलेश यादव लोकसभा में उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा चेहरा होंगे। इससे उनकी राजनीतिक छवि मजबूत होगी। कभी मायावती ने भी लोकसभा की सदस्यता का बेहतरीन उपयोग किया था।

यहां एक चेतावनी। राजनीति में मतदाता का निर्णय ही सर्वोपरि होता है। यदि कांग्रेस अपने गठबंधन के माध्यम से किसी तरह सत्ता हासिल करने में कामयाब हो जाती है, तो ये सारे कयास हवा हो जाएंगे। इतिहास विजेताओं पर लगे दाग-धब्बों की अनदेखी करने का अभ्यस्त जो है। क्या आपको लगता है कि ऐसा होने जा रहा है?

@shekharkahin
@shashishekhar.journalist

स्कैन करें
आजकल स्तंभ के तहत प्रकाशित आलेखों के लिए

**जीना इसी का नाम है**

भावेश चौधरी
किसान और उद्यमी

# सिर्फ सरकारी नौकरियां बेरोजगारी का हल नहीं

**परिचितों ने मजाक उड़ाना शुरू कर दिया। पिता तो खैर नाराज थे ही। भावेश को अब अक्सर व्यंग्य सुनना पड़ता- यह किसी काम का नहीं है... इसे जायदाद से बेदखल कर दो, वरना घर-जमीन, सब बेच देगा... ऐसे निठल्ले को भला कौन अपनी बेटी देगा?**

हिन्दुस्तान नौजवानों का देश है। इसकी 65 फीसदी से अधिक आबादी की उम्र 35 साल से कम है। ऐसे में, रोजगार देश का सबसे अहम मुद्दा होना चाहिए और है भी। 'सेंटर फॉर दी स्टडी ऑफ डेवलपिंग सोसायटीज', यानी सीएसडीएस ने अपने हालिया सर्वे में इस बात की पुष्टि भी की है। इस समस्या से जुड़ी एक कटु हकीकत यह भी है कि कोई सरकार इतनी विशाल युवा आबादी के लिए सरकारी नौकरियों का सृजन नहीं कर सकती, अलबत्ता उनकी आजीविका के उपाय करने का दायित्व उसी का है। मगर इस समस्या के हल का एक ठोस रास्ता भावेश चौधरी जैसे युवा दिखा रहे हैं, जो न सिर्फ तमाम विपरीत परिस्थितियों के बावजूद आज एक सफल उद्यमी हैं, बल्कि उन्होंने अपने आसपास के 150 से भी ज्यादा किसानों की जिंदगी पर सकारात्मक असर डाला है।

राजस्थान के झुंझुनू जिले में एक तहसील है सूरजगढ़। इसी के बेरला-आसलवास गांव में आज से करीब 25 साल पहले भावेश पैदा हुए। पिता शेर सिंह चौधरी सीमा सुरक्षा बल में जवान थे और गांव में अपनी खेती-बाड़ी भी थी, इसलिए भावेश का बचपन कभी किसी अभाव में नहीं गुजरा। गांव के तमाम बच्चों की तरह स्थानीय स्कूल में ही पढ़ाई-लिखाई हुई, पर स्कूल में कभी उनका दिल नहीं लगा। चार भाई-बहनों में दूसरे भावेश यही देखते हुए सयाने हुए कि उनके गांव के लड़कों, बल्कि अब तो लड़कियों का भी एक ही लक्ष्य होता है, फौज या पुलिस में कोई सरकारी नौकरी हासिल करना।

पिता शेर सिंह कभी-कभी बेटे को अपनी पोस्टिंग वाली जगहों पर ले जाया करते थे, जहां उनको तरह-तरह के आदेशों का पालन करते देख या काफी तनाव में भी 'ड्यूटी' निभाते देखकर भावेश का बालक मन नौकरी से विरक्त होता गया। हालांकि, परिवार और खुद पिता की यही अपेक्षा थी कि वह गांव के अन्य बच्चों की तरह फौज या पुलिस में अपना करियर बनाएं। मगर भावेश ने कोई लक्ष्य ही नहीं बनाया। वह बस कक्षाएं पास करते और बढ़ते चले आए। बारहवीं का इम्तिहान पास करने के बाद पहली बार लक्ष्य संबंधी सवाल ने उन्हें परेशान किया कि अब क्या? जाहिर है, जब शहरी इलाकों में ही किशोरों की अभिरुचि जांचने-परखने और उन्हें उनकी पसंद के क्षेत्र में दक्ष बनाने के प्रयास आधे-अधूरे हैं, तो बेरला-आसलवास के युवाओं की सुध कौन लेता?

आगे पढ़ने की बहुत इच्छा नहीं थी, पर परिवार के दबाव में उन्होंने बीएससी में दाखिला ले लिया। पढ़ाई करते हुए सरकारी नौकरियों की कई परीक्षाएं दीं, मगर किसी में कामयाबी हाथ नहीं आई। इस दौरान उनके कई दोस्त सरकारी मुलाजिम बन चुके थे। परिजनों व पड़ोसियों के व्यंग्य का सिलसिला शुरू हो गया था। मगर भावेश के दिमाग में यह साफ हो चुका था कि दूसरों के हुक्म मानने वाली नौकरी उनको करनी नहीं

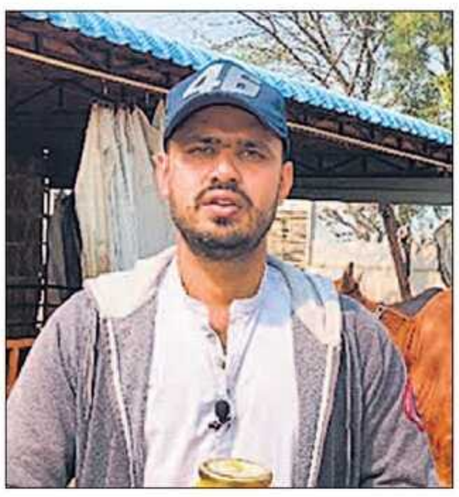

है, और आदेश देने वाली कोई नौकरी उनको मिलने से रही! लिहाजा, उन्होंने कॉलेज के सेकेंड ईयर में पढ़ाई छोड़ परिवार में एलान कर दिया कि वह अपना कोई काम करेंगे।

परिचितों ने मजाक उड़ाना शुरू कर दिया। पिता तो खैर नाराज थे ही। भावेश को अब अक्सर सुनना पड़ता- यह किसी काम का नहीं है... इसे जायदाद से बेदखल कर दो, वरना घर-जमीन, सब बेच देगा... ऐसे निठल्ले को कौन अपनी बेटी देगा? हरियाणा-राजस्थान के इस इलाके की एक निर्मम सच्चाई यही है कि जिन युवाओं के पास सरकारी या मोटी पगार वाली निजी नौकरी नहीं या जिनके पास जमा-जमाया कारोबार नहीं, उनकी शादी नहीं होती।

पिता के दबाव के आगे घुटने टेकते हुए भावेश ने पड़ोस के शहर लोहारू के एक इंजीनियरिंग कॉलेज में दाखिला तो ले लिया, मगर उनके पल्ले कुछ भी नहीं पड़ रहा था, क्योंकि वहां अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाई होती थी और भावेश की अब तक की पूरी पढ़ाई हिंदी माध्यम से हुई थी। एक महीने में ही उन्होंने इंजीनियरिंग कॉलेज को भी छोड़ दिया। सवाल था, अब क्या किया जाए? जो कुछ भी करना था, अपने तईं करना था। भावेश को याद आया कि जब वह हॉस्टल में रहते थे, तब उनके शहरी सहपाठी व कॉलेज शिक्षक उनसे मां के हाथों बना देसी घी लाने की बहुत फरमाइश किया करते और जब वह घी लेकर जाते, तो वे सभी स्थानीय भाव के अनुसार उन्हें भुगतान भी करते थे। भावेश ने देसी घी का अपना उद्यम शुरू करने का फैसला किया। साल 2019 की बात है। अपने दो-तीन दोस्तों से उन्होंने कर्ज के तौर पर 30,000 रुपये जुटाए और उस रकम से एक वेबसाइट बनवाई, मगर इस पर किस तरह से मार्केटिंग करनी है, यह तो उन्हें आता ही नहीं था! उनका सारा निवेश बेकार चला गया।

भावेश को थोड़ी निराशा हुई, पर उन्होंने हार नहीं मानी। यू-ट्यूब पर देशी घी खाने के फायदे के बारे में वीडियो देखे। उनमें नीचे टिप्पणी करने वालों से उन्होंने संवाद करना शुरू किया और फिर ड्राइविंग लाइसेंस बनवाने के लिए मां से मिले 3,000 रुपये से नई शुरुआत की। सितंबर 2019 में वह मुबारक दिन आया, जब बिहार के भागलपुर से उन्हें पहला ऑर्डर मिला। 1,125 रुपये का वह भुगतान भावेश जीवन भर नहीं भूल सकेंगे। काम बढ़ा, कमाई बढ़ी, तो अपनों का भरोसा भी बहाल हुआ। फिर पिता के सहयोग से गायों की तादाद भी बढ़ी, गौशाला का भी विस्तार हुआ। फिर उन्होंने

**सितंबर 2019 में बिहार के भागलपुर से उन्हें पहला ऑर्डर मिला। 1,125 रुपये का वह भुगतान भावेश जीवन भर नहीं भूल सकेंगे। काम बढ़ा, कमाई बढ़ी, तो अपनों का भरोसा भी बहाल हुआ। भावेश आज सालाना करीब आठ करोड़ रुपये का देसी घी का कारोबार कर रहे हैं।**

आस-पड़ोस के छोटे-छोटे 150 देसी गाय पालकों व दुग्ध उत्पादकों को जोड़ा।

भावेश आज सालाना करीब आठ करोड़ रुपये का देसी घी का कारोबार कर रहे हैं। अपनी सरकारी मुलाजिम दोनों बहनों को वह मजाक में छेड़ते हैं- सरकार तुमको जितनी तनख्वाहें देती है, उससे ज्यादा तो हम उसे जीएसटी चुकाते हैं! बकौल भावेश, बेरोजगारी का हल सिर्फ सरकारी नौकरी नहीं, यह बात परिवारों को भी समझने की जरूरत है।

प्रस्तुति : चंद्रकांत सिंह

**वो लम्हा**

आइरीन गट ओपडाइक
समाजसेवी

# उन्हें मंजूर नहीं था तमाशबीन होना

**न शिशु से मोह और न ममता की परवाह, न मानवता का लिहाज! क्या नफरत ही दुनिया का मूल स्वभाव है और बाकी धर्म-पंथ उसके पीछे-पीछे घिसट रहे हैं? क्या ईश्वर भी धर्म देखकर बचाव के लिए आगे आता है? क्या ईश्वर भी विधर्मियों की मौत का तमाशा देखता है?**

दुनिया में ज्यादातर इंसान मन-हारे बैठे रहते हैं कि मुझसे कुछ नहीं हो सकता। मैं छोटा आदमी किस काम का? मेरे पास ज्यादा धन नहीं, ज्ञान नहीं, मैं क्या कर सकता हूं? कई बार तो धनी और ज्ञानी लोग भी अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता जैसे मुहावरे के पीछे छिपने लगते हैं। वह सुंदर युवती भी यही सोचती थी, दुनिया जब द्वितीय युद्ध लड़ने जा रही है, तब वह क्या कर सकती है? उसके देश पोलैंड पर जर्मनी और रूस का कब्जा हो चुका था। वह युवती कभी नर्स का काम करती, तो कभी नौकरानी बना दी जाती। जुल्म के दिन थे। यहूदियों पर कहर टूट रहा था। हिटलरी हैवानियत चरम पर थी। वह युवती ईसाई थी, पर अपने देश की आजादी की पक्षधर थी, तो उसे भी तरह-तरह से सताया जा रहा था। वह अपने परिवार से बिछड़ गई थी।

वह नजरें झुकाए, मुंह छिपाए घर से निकलती थी कि पता नहीं, कब कोई नई मुसीबत टूट पड़े। सामान्य कद की दुबली-पतली, मृदुभाषी, नीली आंखों और घने सुनहरे बालों वाली युवती को तमाम झमेलों से बचकर रहना ही मुफीद लगता था। वह सोचती रहती थी कि वह सोचकर भी क्या कर लेगी, किसे बचा लेगी? अक्सर वह आंखें मूंद लेती थी, जैसे ज्यादातर लोग करते हैं, पर एक दिन हद हो गई। अप्रैल का महीना था। साल 1942 चल रहा था। बाजार में कोहराम मचा था। नाजी दरिंदे लोगों को मार रहे थे। एक नवजात को भी उन्होंने उसकी मां से छीन लिया था। छीनते ही एक नाजी अफसर ने उसे हवा में उछाल दिया था और जमीन पर गिरने से पहले ही गोली मार दी थी। हैवानियत के बेरहम मंजर में नाजी पागल जानवरों से भी ज्यादा खूंखार नजर आ रहे थे। उनकी रगों में सिर्फ नफरत का सैलाब था, जिसमें इंसानियत का नामोनिशान न था। ये नाजी भी कभी बेबस शिशु रहे होंगे, उन्हें किसी ने मां की गोद से नहीं छीना होगा, उन्हें किसी ने हवा में नहीं फेंका होगा, उनके सीने को कोई गोली पार न कर गई होगी! न शिशु से मोह और न ममता की परवाह, न मानवता का लिहाज! क्या नफरत ही दुनिया का मूल स्वभाव है और बाकी धर्म-पंथ उसके पीछे-पीछे घिसट रहे हैं? क्या ईश्वर भी धर्म देखकर बचाव के लिए आगे आता है? क्या ईश्वर भी विधर्मियों की मौत का तमाशा देखता है? उस युवती का ईश्वर से यकीन उठने लगा। शायद कोई ईश्वर नहीं होता। खुद अपनी मदद के लिए इंसान को सजग रहना पड़ता है।

तब बहुत आसान था तमाशबीन बनकर रह जाना, पर उस युवती ने यह नहीं सोचा कि वह इन दिनों बेघर-बेपरिवार नौकरानी है। उसने कहीं सुना था कि किसी इंसान की जान बचाना संसार को बचाने के बराबर है। काश! वह भी किसी की जान बचा सके। चारों तरफ लोग मारे जा रहे हैं, तो सिर्फ तमाशा देखने से तो काम नहीं चलेगा, न नींद आएगी, न चैन मिलेगा।

उन दिनों वह उन्नीस-बीस बरस की युवती शहर से कुछ दूर एक बड़े घर में काम करती थी, उसका मालिक नाजी अफसर था। एक दिन नौकरानी को पता चला कि पास के कारखाने में बंधुआ मजदूरी कर रहे 12 यहूदियों को किसी भी दिन मार दिया जाएगा, तो वह उन सभी को छिपाकर साथ ले आई। सभी यहूदी मुंह पर ताले लगाए, रात भर उस बड़े घर के तहखाने में छिपे रहते थे और तभी ऊपर घर में आते थे, जब नाजी अफसर काम पर चला जाता था। दिन के समय प्यारे यहूदी रसोई से सफाई तक मिलकर घर का पूरा काम करते थे और शाम होने से पहले ही तहखाने में कैद हो जाते थे। महीनों बीत गए, पर एक दिन भेद खुल गया। युवती नाजी अफसर के पैरों में गिर पड़ी कि मैं हर सजा भुगतने को तैयार हूं, पर किसी की जान न लेना।

तब जान बच गई, पर कुछ ही दिन बाद सबको लेकर जंगल में छिपना पड़ा। खैर, एक दिन युद्ध खत्म हुआ और वह युवती किसी तरह अमेरिका पहुंच गई। वहां वह संकोची युवती जीवन के नए संघर्ष में खो गई, पर दुनिया में जब यहूदी कुछ संभले, तब उन्होंने अपने मददगारों को याद किया और मददगारों के इतिहास में युवती आइरीन गट ओपडाइक का नाम स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज हुआ। 5 मई को जन्म लेने वाली आइरीन (1922-2003) को यहूदियों के देश के सर्वोच्च सम्मान इजरायल मेडल ऑफ ऑनर से सम्मानित किया गया। उनकी करुण दास्तान वाली पुस्तक *इन माई हैंड्स : मेमोरीज ऑफ ए होलोकॉस्ट रेस्क्यूअर* की लाखों प्रतियां बिक चुकी हैं। उन्होंने अपने जीवन के अंतिम तीस वर्ष स्कूली बच्चों को अपनी कहानी सुनाने और देशाटन करते बिताए। वह बार-बार कहती थीं कि राष्ट्रीयता, धर्म, रंग या पंथ की परवाह किए बिना सबसे लगाव रखिए। हम एक ही परिवार हैं, प्यार करना सीखिए और मौका मिलते ही एक-दूजे की मदद कीजिए, तभी दुनिया रहने लायक रहेगी।

प्रस्तुति : ज्ञानेश उपाध्याय

# अपने-अपने कठघरे के कैदी

**तिरछी नजर**

सुधीश पचौरी हिंदी साहित्यकार

दिल्ली में एक राष्ट्रीय सेमिनार चल रहा है : सुबह के भाषण-भूषण हो चुके हैं, लंच टाइम हुआ है। एक से एक नामी साहित्यकार, बुद्धिजीवी, एक्टिविस्ट लाइन से अपनी-अपनी प्लेट में अपने-अपने भोजन का हिस्सा लेकर इधर-उधर बिखर गए हैं। कई मेजों के चारों ओर बैठकर खा रहे हैं, पर उनके बीच कोई बात नहीं हो रही। कोई यह तक नहीं कहता कि अभी जिसने जो बोला, वह कैसा था?

लगता है, मैं साहित्य की जगह किसी 'मसान' में आ गया हूं। सबके बीच खामोशी पसरी है। सब एक-दूसरे से बेहद सावधान दिखते हैं। कोई किसी के गले नहीं लगता। बहुत हुआ, तो एक मरे चूहे जैसा हाथ दूसरे मरियल चूहे जैसे हाथ से एकाध सेकंड मिलकर बिछड़ जाता है। उनके बीच कोई गर्मजोशी या आत्मीयता नहीं नजर आती। यूं तो सब सबको जानते हैं, कई तो एक-दूसरे को जरूरत से ज्यादा जानते हैं, पर उनके बीच 'हलो-हाय' तक नहीं सुनाई पड़ती।

यह सीन एक युवा साहित्यिक गोष्ठी का है : एक से एक चमकते, पढ़े-लिखे, हाईफाई, तकनीक सेवी; एक से एक नामी ब्लॉगर, फेसबुकिया, यू-ट्यूबरिया, इंस्टाग्रामिया व एक्स में जीने वाले बैठे हैं, पर आपस में 'नो खुसर-पुसर', 'नो डायलॉग' और 'नो गप्प-शप्प'!

और यह तीसरा सीन है : मैं फोन करता हूं, 'कल आपने बढ़िया बोला।' मित्र कुछ सेकंड हकलाता है, फिर एक धन्यवाद मारता है और बात खत्म होने लगती है। मैं पूछता हूं कि कैसे हैं? नपा-तुला जवाब आता है, ठीक हूं। फिर सूखा-सा प्रतिप्रश्न, आप कैसे हैं? मैं भी कह देता हूं, ठीक हूं और बातचीत खत्म हो जाती है।

जिन दिनों सोशल मीडिया पर हर बंदा ओपिनियनकार, रचनाकार, आलोचक है, उन्हीं दिनों में जब वे किसी गोष्ठी आदि में आमने-सामने होते हैं, तो ऐसे मिलते हैं, जैसे कोई पहचान न थी! सभी हजारों द्वारा 'लाइक्ड' व 'व्यूड' सेलिब्रिटी हैं और अपने-अपने साइबर जगत में असरदार हैं। मगर सबके बीच एक अजीब खामोशी की सरकार है!

मन करता है कि पूछूं, इतने बंद क्यों हो भाई? बात कर लोगे, 'हलो-हाय' कर लोगे, किसी से खुलकर मिल लोगे, तो क्या कुछ लुट जाएगा? क्या है ऐसा, जिसे बचा रहे हो? क्या तुम्हारी कविता, कहानी या ओपिनियन कोई 'स्टेट सीक्रेट' है कि बात-बात में कहीं बाहर न निकल जाए? पुरखे बहुत पहले समझा गए, *वादे वादे जायते तत्वबोधः*, पर अफसोस! आज साहित्य में न एक वाद है, न प्रतिवाद है, न विवाद है और न संवाद है। ऐसा सन्नाटा क्यों है भाई? वह भी हिंदी साहित्य की हंगामेबाज गप्पी दुनिया में।

इतिहास गवाह है, जब एक ने लिखा *टेढ़े-मेढ़े रास्ते*, तो जवाब में दूसरे ने लिखा *सीधे-सादे रास्ते*। एक ने लिखा *नई कविता के प्रतिमान*, तो दूसरे ने लिखा *कविता के नए प्रतिमान*। एक राष्ट्रकवि ने लिखी *उर्वशी*, तो दर्जनों ने उसे ठोक दिया! पर अब ऐसा खुला लेन-देन और खुला विवाद-संवाद कहां? फिर भी, ज्यादातर फासिज्म से लड़ना चाहते हैं, लोकतंत्र और संविधान बचाना चाहते हैं!

अपनी कविता *मुनासिब कार्रवाई* में कभी कवि धूमिल ने कहा था, *अकेला कवि कठघरा होता है।* वह तब के अकवि का कठघरा था। यह आज के साइबरिया कवि के 'फॉल्स ईगो' (मिथ्या अहंकार) का कठघरा है। हम सबने अपने को इस कठघरे में बंद कर लिया है और चाहते हैं कि हमारे लिए हमारे हिसाब से यह संसार बदल जाए!

बहादुरशाह जफर ने कभी कहा था, *बात करनी मुझे मुश्किल कभी ऐसी तो न थी*, आज कहीं कोई 'जफर' नहीं, फिर भी बात करनी मुश्किल दिखती है। मैं तो कहूंगा- प्यारे कवि! अपना कठघरा तोड़, बाहर निकल, दिल से दिल को जोड़, कुछ गप्प-शप्प मार, साहित्य एक गप्प ही तो है, उसे बचा। गप्प को क्या छिपाना? वह बचेगी, तो सब बचेगा, तू भी बचेगा!

**कटाक्ष**

राजेंद्र धोड़पकर

**ग्राउंड रिपोर्ट** इस बार उत्तर प्रदेश ही नहीं बल्कि पूरे देश की निगाहें अयोध्या (फैजाबाद) लोकसभा सीट पर रहेगी। भाजपा ने अपने चुनाव घोषणा-पत्र के चिरप्रतीक्षित मुद्दे 'राम मंदिर निर्माण' को पूरा किया है। 2014 और 2019 में यह लोकसभा सीट भाजपा जीत चुकी है। इस बार वह इस सीट पर हैट्रिक बनाने के इरादे से मैदान में है। यह आम चर्चा है कि इस सीट पर भाजपा की जीत राम मंदिर निर्माण में उसके योगदान पर मुहर लगाने का काम करेगी या फिर जातियों के रथ पर बैठी सपा-बसपा उसके मनसूबों पर पानी फेरेगी

# मतदाताओं की खामोशी में सुन रहे कड़े संघर्ष की आहट

## फैजाबाद

■ राजीव ओझा

**अयोध्या।** मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम की जन्मभूमि के कारण पूरी दुनिया में विशेष पहचान रखने वाली अयोध्या (लोकसभा सीट-फैजाबाद) में अभी तक चुनावी रंग नहीं चढ़ पाया है। जन्मभूमि पर निर्मित भव्य मंदिर में रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा के बाद देश-दुनिया के श्रद्धालुओं के आवागमन से भक्ति रस में सराबोर रही अयोध्या अब राजनीतिक पंडितों के मूल्यांकन की कसौटी पर है, जो मतदाताओं की खामोशी में इस सीट के कड़े संघर्ष में फंसे होने की आहट सुन रहे हैं।

**भाजपा की हैट्रिक रोकने को घेराबंदी :** पिछले दो चुनावों से इस सीट पर भाजपा का कब्जा है। उसके मौजूदा प्रत्याशी लल्लू सिंह अपनी जीत की हैट्रिक बनाने मैदान में उतरे हैं तो विपक्षी 'इंडिया' गठबंधन और बसपा अपनी-अपनी व्यूह रचना के सहारे उनकी घेराबंदी में जुटे हैं। भाजपा के साथ एनडीए के सहयोगी दल हैं तो विपक्षी गठबंधन में मुख्य रूप से सपा व कांग्रेस। गठबंधन ने मिल्कीपुर सुरक्षित से विधायक और पूर्व मंत्री अवधेश प्रसाद को सपा के टिकट पर मैदान में उतारा है तो बसपा ने सच्चिदानंद पांडेय को प्रत्याशी बनाया है।

चुनावी चर्चा मोटे तौर पर इन्हीं तीन प्रत्याशियों पर केंद्रित है, लेकिन मुख्य मुकाबला लल्लू सिंह और अवधेश प्रसाद के बीच होने का दावा करने वालों की संख्या ज्यादा है। लल्लू सिंह सांसद चुने जाने से पहले पांच बार अयोध्या से विधायक रहे हैं। वर्ष 2012 में विधानसभा चुनाव हार जाने के बाद 2014 में भाजपा ने उन्हें लोकसभा का उम्मीदवार बना दिया था। इसी तरह उनके मुख्य प्रतिद्वंद्वी अवधेश प्रसाद नौ बार के विधायक हैं। वह मुलायम व अखिलेश सरकार में कैबिनेट मंत्री भी रहे। केवल पिछले विधानसभा चुनाव में उन्हें पराजय का मुंह देखना पड़ा था।

**चुनाव मोदी के समर्थकों व विरोधियों के बीच :** लोकसभा क्षेत्र में आने वाली पांचों विधानसभा सीटों के अलग-अलग जातीय समीकरण हैं। बाराबंकी के अहमदपुर टोल प्लाजा से सटे परसोला गांव के सर्वेश रावत बताते हैं कि भाजपा का जोर है, पर वोट देने के सवाल पर चुप्पी साध जाते हैं। भाजपा के समर्थक सीधे राम मंदिर और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए वोट देने की बात कहते हैं तो सपा के समर्थक पिछड़ों व दलितों की गोलबंदी का दावा करते हैं। सवर्णों से इतर यादव, मुस्लिम, पासी व कुर्मी इस चुनाव में खास महत्व की दृष्टि से देखे जा रहे हैं। फैजाबाद लोकसभा में कुर्मियों की भूमिका तो खासी अहम हो गई है।

हालांकि, राजनीतिक समीक्षक त्रियुग नारायन तिवारी तो सीधे तौर पर कहते हैं कि यह चुनाव नरेंद्र मोदी के समर्थकों व विरोधियों के बीच है। इसमें मतदाता प्रत्याशी को देख ही नहीं रहा है। मवई चौराहे पर मिले राजकुमार गुप्ता की यह टिप्पणी उनके इस विश्लेषण से मेल खाती है कि वह नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने के लिए मतदान करेंगे। मिल्कीपुर के किनौली गांव के इंद्रेश शर्मा इस चुनाव में बसपा प्रत्याशी की किसी बड़ी भूमिका को पूरी तरह खारिज करते हैं।

**भाजपा को बढ़त दिलाती है अयोध्या विधानसभा :** लोकसभा चुनाव में भाजपा को अयोध्या विधानसभा क्षेत्र से बढ़त मिलती रही है। इस क्षेत्र से वह जितना ज्यादा आगे होती है, उतनी ही उसकी राह आसान हो जाती है। राम मंदिर से लेकर सभी प्रमुख मठ-मंदिर इसी क्षेत्र में आते हैं। धार्मिक पर्यटन के ज्यादातर केंद्र भी इसी क्षेत्र में हैं। मधुकरी संत मिथिला बिहारी दास दावा करते हैं कि राम मंदिर निर्माण के बाद भाजपा की राह में कोई अवरोध नहीं रह गया है। नियावां रोड निवासी सुशील राजपाल और फतेहगंज निवासी अमित गोयल भी उनसे सहमत हैं। दोनों अयोध्या की बड़ी वैश्विक पहचान को इस चुनाव का बड़ा मुद्दा बताते हैं।

**नरेंद्र मोदी के दौरे पर भी नजर :** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का अयोध्या दौरा भी चुनाव में चर्चा का विषय है। वह प्रधानमंत्री के रूप में तीन बार अयोध्या आ चुके हैं। अभी इसी साल के पहले महीने में भी वह प्राण प्रतिष्ठा समारोह में अयोध्या आए थे। रविवार को अयोध्या में उनका रोड शो है। ऐसे में इस सीट के चुनाव को उन्होंने सीधे तौर पर अपनी प्रतिष्ठा से जोड़ लिया है। बुधवार को भाजपा प्रत्याशी के नामांकन जुलूस में प्रधानमंत्री के संभावित दौरे की ही सबसे ज्यादा चर्चा रही।

20 मई को पांचवें चरण में होना है मतदान

**05 विधानसभा**
■ अयोध्या ■ बीकापुर
■ रुदौली ■ दरियाबाद
■ मिल्कीपुर

### चुनावी मुद्दे

■ औद्योगिक विकास की सुस्त रफ्तार। इंडस्ट्रियल एरिया का भी अपेक्षित विकास नहीं हो पाया।
■ कुमारगंज में स्थापित नरेन्द्रदेव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय नहीं बना पाया बड़ी पहचान
■ नवस्थापित राजर्षि दशरथ राजकीय मेडिकल कॉलेज में अपेक्षित सुविधाओं का अभाव

### ओडीओपी को मदद की दरकार

एक जिला एक उत्पाद (ओडीओपी) के तहत गुड़ कारोबार से जुड़े उद्यमी चुनाव में समर्थन मांगने वाले प्रत्याशियों के सामने अपनी एक मांग उठाने की तैयारी में हैं। शांतिपुर गांव के वेद प्रकाश सिंह बताते हैं, इस समय लगभग 50 उद्यमी गुड़ के कारोबार से जुड़े हैं, लेकिन वेयर हाउस की कमी होने से अपेक्षित लाभ नहीं हो रहा है। यह कारोबार नवंबर से अप्रैल तक होता है। मंडी में भी गुड़ कारोबारियों को जगह न मिलने से व्यापार गति नहीं पकड़ पा रहा है। हालांकि इस कारोबार के लिए अब बैंकों से लोन आसानी से मिलने लगा है। आफ सीजन में बिजली का फिक्स्ड चार्ज भी भारी पड़ रहा है।

### मैदान में उम्मीदवार

लल्लू सिंह, भाजपा

अवधेश प्रसाद, सपा

सच्चिदानंद पांडेय, बसपा

500 वर्ष की प्रतीक्षा पूर्ण हुई। अयोध्या में भव्य राम मंदिर

### अयोध्या में क्या है खास

■ भगवान राम की जन्मभूमि और उनसे जुड़े अन्य पौराणिक स्थलों की वजह से विश्व प्रसिद्ध धार्मिक नगरी
■ राम मंदिर निर्माण के बाद धार्मिक पर्यटन के बड़े केंद्र के तौर पर पहचान
■ हिंदू धर्म को दशा-दिशा देने वाले मठ-मंदिर और उनसे जुड़े विद्वान संत-महंत
■ दीपावली की पूर्व संध्या पर होने वाला भव्य दीपोत्सव और रामलीला
■ महर्षि वाल्मीकि अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से क्षेत्र को मिली नई पहचान
■ पुनर्निर्माण के बाद आकर्षण का केंद्र बना अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन
■ एक जिला एक उत्पाद के रूप में चयनित गुड़
■ निजी क्षेत्र में मसौधा और रौजागांव चीनी मिल तथा यश पेपर मिल से औद्योगिक पहचान

### बदलता रहा मतदाताओं का मिजाज

फैजाबाद लोकसभा क्षेत्र के मतदाताओं का मिजाज बदलता रहा है। इस सीट पर कांग्रेस व भाजपा के साथ ही जनता पार्टी, कम्युनिस्ट पार्टी के अलावा सपा व बसपा के प्रत्याशी भी जीतते रहे हैं। वर्ष 1977 में जनता पार्टी के बाद 1894 तक कांग्रेस का कब्जा बना रहा। इसके बाद 1989 में मित्रसेन यादव ने कम्युनिस्ट पार्टी के प्रत्याशी के रूप में जीत दर्ज की। फिर 1991 व 1996 में भाजपा के विनय कटियार के बाद 1998 में मित्रसेन यादव सपा से सांसद चुने गए। यह वह दौर था, जब राम मंदिर आंदोलन पूरे देश में चरम पर था। वर्ष 1999 में एक बार फिर विनय कटियार सांसद चुने गए तो 2004 में मित्रसेन यादव बसपा के टिकट पर तीसरी बार सांसद बन गए। फिर 2009 में कांग्रेस के निर्मल खत्री भी दूसरी बार सांसद बने।

# वोट बैंक को बचाने के लिए मायावती ने बदली रणनीति

■ शैलेंद्र श्रीवास्तव

**लखनऊ।** कोर वोट बैंक में लगातार गिरावट से चिंतित बसपा ने इस पर अपनी रणनीति में थोड़ा बदलाव किया है। बसपा सुप्रीमों भी इस बात को समझ रही हैं कि अपने कॉडर वोट को बचाने की उनकी यह कोशिश विफल रही तो शायद वापसी मुश्किल हो जाएगी। यही कारण है कि मायावती ने पहले तो महागठबंधन का हिस्सा बनने से इनकार किया, फिर चुनाव में खुद को फ्रंट पर रखते हुए भतीजे आकाश आनंद को युवाओं की अगुवाई करने का मौका दिया। मायावती के सामने वोट बैंक को बचाने ही नहीं बढ़ाने की उससे भी बड़ी चुनौती है। इसके लिए जहां उन्होंने 2007 वाला सोशल इंजीनियरिंग का फार्मूला दोहराने का प्रयास किया है।

**टिकट बंटवारे में जातीय समीकरण :** बसपा ने जातीय समीकरण के आधार पर टिकट बंटवारे का खेल खेला है। अब तक यूपी में 78 प्रत्याशी घोषित किए हैं, जिसमें 20 सवर्ण उनमें भी अकेले 12 ब्राह्मण हैं। मुस्लिम और ओबीसी को 20-20 एवं एससी को 17 जगह से उतारा है।

**खिसकता जनाधार रोकना बड़ी चुनौती :** बसपा का जनाधार लगातार खिसक रहा है। वर्ष 2014 में अपने दम पर लड़ी कोई सीट नहीं जीती। उसमें मात्र 19.77 फीसदी वोट मिला। 2019 में सपा से गठबंधन के सहारे बसपा ने 10 सीटें जीतीं लेकिन मत प्रतिशत बढ़ने की जगह घटकर 19.43 फीसदी रहा गया। सबसे खराब स्थिति विधानसभा चुनाव 2022 में हुई। वह सिर्फ एक विधायक ही जिता पाईं और वोट प्रतिशत घटकर मात्र 12.8 फीसदी रह गया था। इसके बाद नगर निकाय आदि की चुनावों में भी बसपा का पूरी तरह सफाया हो गया। इसके बाद से ही मायावती ने रणनीति बदली है। पूर्व के हर चुनाव में मायावती चुनिंदा सीटों पर ही प्रचार करती रही हैं। इसके अलावा वह तीन से चार सीटों को मिलाकर एक सभा करती थीं। अब वह एक-एक सीट के लिए रैलियां-सभाएं कर रही हैं।

### पिछले चुनावों की चार खामियां

■ पार्टी में दूसरी पंक्ति के नेताओं की सबसे ज्यादा कमी भी बड़ी वजह
■ मायावती का लखनऊ की जगह दिल्ली में रहना
■ गैर कॉडर नेताओं के आगे कॉडर की उपेक्षा
■ अति पिछड़ी जाति के नेताओं का पार्टी से धीरे-धीरे बाहर हो जाना भी वजह बनी

### कॉडर को बांधने की कोशिश

■ आकाश को दलित बाहुल्य सीटों पर भेज समाज को बांधे रखने का प्रयास
■ कांशीराम की तर्ज पर गांव-गांव कॉडर कैंप कर समाज को जोड़ने का काम
■ बामसेफ व कोआर्डिनेटरों से मशविरा कर उम्मीदवारों का चयन किया गया

**10** सीटें जीतीं सपा गठबंधन के सहारे 2019 में

**दमखम के साथ मैदान में**

मायावती ने इस बार 40 से अधिक सभाओं की तैयारियां की हैं। 2019 में मायावती ने 22 रैलियां की थीं।

### आकाश के जरिए दोहरे शिकार की कोशिश

मायावती ने भतीजे आकाश आनंद के सहारे लोकसभा चुनाव में बड़ा दांव खेला है। पुराने लोग आज भी बसपा के साथ मजबूती से जुड़े हैं। लेकिन नई पीढ़ी समय की नजाकत को भांप रही है। इसी को देखते हुए आकाश के जरिए नई पीढ़ी को साधने का काम कर रही हैं। दूसरा निशाना भीम आर्मी पार्टी पर है। यही कारण है कि मायावती ने आकाश की पहली रैली भी चंद्रशेखर के घर यानी नगीना में कराई।

## रोजनामचा

### साप्ताहिक भविष्यफल

(05 मई से 11 मई 2024)

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

**मेष (21 मार्च-20 अप्रैल)**
मन अशांत हो सकता है। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। परिवार के साथ किसी धार्मिक स्थान पर जा सकते हैं। माता की सेहत का ध्यान रखें। भागदौड़ अधिक रहेगी। सम्मान की प्राप्ति होगी।

**वृष (21 अप्रैल-20 मई)**
आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मन में उतार-चढ़ाव भी रहेंगे। पठन-पाठन में रुचि बढ़ेगी। नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा। तरक्की के मार्ग प्रशस्त होंगे। आय में वृद्धि होगी।

**मिथुन (21 मई-21 जून)**
सप्ताह के प्रारंभ में आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मन परेशान रहेगा। धैर्यशीलता बनाए रखने के प्रयास करें। परिवार की सेहत का ध्यान रखें। वस्त्र उपहार में मिल सकते हैं।

**कर्क (22 जून-23 जुलाई)**
सप्ताह के प्रारंभ में आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। शैक्षिक व बौद्धिक कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी। नौकरी के परीक्षा व साक्षात्कारादि कार्यों में सफल रहेंगे। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा।

**सिंह (24 जुलाई-22 अगस्त)**
आत्मविश्वास से लबरेज रहेंगे, परंतु मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। बातचीत में संतुलित रहें। नौकरी में बदलाव की संभावना बन रही है। जीवनसाथी का साथ मिलेगा। लाभ के अवसर मिलेंगे।

**कन्या (23 अगस्त-22 सितंबर)**
मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। संयत रहें। व्यर्थ के क्रोध व वाद-विवाद से बचें। शैक्षिक कार्यों में सुधार होगा। आय के साधन बनेंगे। यात्रा लाभप्रद रहेगी।

**तुला (23 सितंबर-23 अक्तूबर)**
आत्मविश्वास तो बहुत रहेगा, परंतु मन परेशान भी रहेगा। अपनी भावनाओं को वश में रखें। सेहत का ध्यान रखें। किसी पुराने मित्र से भेंट हो सकती है। खर्चों में वृद्धि होगी।

**वृश्चिक (24 अक्तूबर-21 नवंबर)**
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। मन में उतार-चढ़ाव रहेगा। संतान की सेहत में सुधार होगा। पठन-पाठन में रुचि बढ़ेगी। शैक्षिक कार्यों के सुखद परिणाम मिलेंगे। नौकरी में तरक्की के अवसर मिलेंगे।

**धनु (22 नवंबर-21 दिसंबर)**
आत्मविश्वास में कमी आएगी। संयत रहें। नौकरी में अफसरों से सहयोग बना कर रखें। तरक्की के योग बन रहे हैं। स्थान परिवर्तन हो सकता है। कारोबार में वृद्धि होगी। लाभ में भी वृद्धि होगी।

**मकर (22 दिसंबर-19 जनवरी)**
मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। पठन-पाठन में रुचि बढ़ेगी। शैक्षिक कार्यों में सफल रहेंगे। धर्म के प्रति रुचि बढ़ेगी। शैक्षिक कार्यों के लिए विदेश जाने के योग बन रहे हैं। भागदौड़ अधिक रहेगी।

**कुंभ (20 जनवरी-18 फरवरी)**
आत्मविश्वास से लबरेज रहेंगे। आत्मसंयत रहें। 10 मई के बाद कारोबार में व्यस्तता बढ़ेगी। परिश्रम अधिक रहेगा। किसी मित्र व पिता से धन की प्राप्ति हो सकती है। रुके धन की प्राप्ति होगी।

**मीन (19 फरवरी-20 मार्च)**
मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। सप्ताह के प्रारंभ में परिवार की सेहत का ध्यान रखें। लेखनादि-बौद्धिक कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी। संतान सुख में वृद्धि होगी। वाणी के प्रभाव में वृद्धि होगी। परिश्रम अधिक रहेगा।

**स्कैन करें**
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

### वर्ग पहेली : 7593

बाएं से दाएं
1. भरना; लीन होना; समा जाना (3)
6. नशे के कारण कदम ठीक से न पड़ना; हिलना (5)
7. मिथ्या धारणा होना; शंका करना; संदेह करना (3,3)
10. काटना; छांटना; छोटा करना (4)
11. टिकाऊ; दृढ़; मजबूत; शक्तिशाली (4)
14. ध्वनि करना; बोलना; पुकारना; शोर करना (3,3)
15. राज्यकाल; शासन का काल; शासन की अवधि (5)
16. खराबी; तबाही; नाश; हानि (3)

ऊपर से नीचे
2. शोक मनाना; दुख प्रकट करना (3,3)
3. कोई वस्तु लेने की इच्छा प्रकट करना; मांग करना; हाथ फैलाना (3)
4. अग्निखंड; दहकता हुआ कोयला; शोला (3)
5. देखने का कार्य; देखभाल; निरीक्षण (5)
6. खौफ खाना; भयभीत होना; हिचकना (3)
8. इच्छा करना; ख्वाहिश रखना; मन में चाह होना (3,3)
9. बसना; स्थायी तौर पर रहना; समृद्ध होना (2,3)
12. प्रश्न; मांग; प्रार्थना (3)
13. जिसमें केसर पड़ा हो; केसर के रंग में रंगा हुआ; केसरिया; पराक्रमी; सिंह (3)
14. अंबर; आसमान; गगन; नभ (3)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली

(उत्तर अगले अंक में)

### वर्ग पहेली 7592 का उत्तर

### सुडोकू : 7577

* कठिन

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | | | | | | | 5 | |
| | | | 7 | 2 | | | 9 | |
| | | 7 | | | 9 | 2 | 4 | 1 |
| | | | | | | | 1 | |
| 2 | | | | 6 | | | | 3 |
| | 5 | | | | | | | |
| 4 | 7 | 9 | 5 | | | 1 | | |
| | 2 | | | 7 | 1 | | | |
| | 1 | | | | | | | 8 |

**खेलने का तरीका :** दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। तर्क से इसे हल कर सकते हैं। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3x3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

### हल : सुडोकू नं.7576

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | 7 | 2 | 5 | 9 | 1 | 3 | 6 | 8 |
| 8 | 9 | 5 | 7 | 3 | 6 | 2 | 4 | 1 |
| 6 | 3 | 1 | 2 | 4 | 8 | 5 | 9 | 7 |
| 5 | 4 | 3 | 8 | 2 | 9 | 7 | 1 | 6 |
| 2 | 8 | 9 | 6 | 1 | 7 | 4 | 3 | 5 |
| 1 | 6 | 7 | 4 | 5 | 3 | 8 | 2 | 9 |
| 7 | 1 | 6 | 3 | 8 | 4 | 9 | 5 | 2 |
| 3 | 2 | 8 | 9 | 6 | 5 | 1 | 7 | 4 |
| 9 | 5 | 4 | 1 | 7 | 2 | 6 | 8 | 3 |

### व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋषिकांत गोस्वामी

**05 मई,** रविवार, 15 वैशाख (सौर) शक संवत् 1946, 23 वैशाख मास प्रविष्टे 2081 (पंजाब पंचांग), 25 शव्वाल सन् 1445, वैशाख कृष्ण द्वादशी सायं 05.42 मिनट तक (विक्रमी संवत्), रेवती नक्षत्र, वैधृति योग प्रातः 07.37 मिनट तक उपरांत विष्कुंभ रात्रि 04.03 मिनट तक तदनंतर प्रीति योग, कौलव करण। चंद्रमा मीन राशि में (दिन-रात)।

**सूर्य उत्तरायण।** सूर्य उत्तर गोल। ग्रीष्म ऋतु। सायं 04.30 मिनट से सायं 06 बजे तक राहुकालम्। रवि प्रदोष व्रत। गंडमूल सायं 07.57 मिनट से। पंचक।

### वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

**मैं बड़ा आदमी बनना चाहता हूं। इसके लिए क्या करूं?** -राज, बरेली (उ.प्र.)

● प्रतिदिन धुले हुए साफ कपड़े ही पहनें। एक दिन पहले के पहने हुए कपड़े दूसरे दिन नहीं पहनें। अपने बेड के सामने विजन बोर्ड बनाएं, जिसमें पीले रंग के कागज पर नीले पेन से अपनी लॉजिकल इच्छाओं को नीले पेन से लिखें और ऐसे रखें कि आपको हर समय दिखाई दें। थोड़ी देर के लिए अपने घर या ऑफिस की पूर्व दिशा में अवश्य बैठें। पूर्व उत्तर पूर्व में एक बरसते हुए बादलों का चित्र लगाएं। किसी पौधे को लगाकर उसकी देखभाल करें और उसकी बड़ा होने में सहायता करें। उसे बड़ा होते हुए देखें और उससे अपनी इच्छा रोज कहें। जब भी नकारात्मक विचार मन में आए तो उसको तुरंत बोलें मैं तुम्हें रिजेक्ट करता हूं। अपनी जेब में एक मोरपंख रखें।

**वे दिन** किस्सा : 1979 का

# वैन से पता चल जाती थी इंदिरा गांधी की मौजूदगी

यह सातवीं लोकसभा के लिए हुए आम चुनावों की बात है। वर्ष 1979 का कोई दिन रहा होगा। उस समय मेरी उम्र कोई 18-20 साल की थी और मैं दिल्ली विश्वविद्यालय के देशबंधु कॉलेज का छात्र था। उस समय इंदिरा गांधी की लोकप्रियता अपने चरम पर पहुंच रही थी।

इंदिरा गांधी को देखने और उन्हें सुनने के लिए लोगों में भारी क्रेज था। रैलियों में भीड़ जुटाने के लिए अलग से कुछ करने की जरूरत नहीं होती थी। लोग खुद-ब-खुद पैदल या स्कूटर पर सवार होकर रैली स्थल पर पहुंच जाते थे। हैंडबिल और दीवार पर लिखे नारों के जरिए प्रत्याशी अपना चुनाव प्रचार करते थे। ऐसे में एक दिन हमें नेहरू प्लेस पर पारस सिनेमा के पास होने वाली इंदिरा गांधी की जन सभा का पता चला। हम अपने कॉलेज के कुछ दोस्तों के साथ वहां पहुंच गए। उस समय इंदिरा गांधी ग्रे (धूसर या भूरा) रंग की मेटाडोर वैन से चलती थीं। इस वैन के दरवाजे स्लाइडिंग वाले हुआ करते थे। यह मेटाडोर वैन ही इंदिरा गांधी की पहचान बन चुकी थी। यह मेटाडोर वैन जहां पर होती, यह पता चल जाता कि इंदिरा गांधी उसके आसपास ही मौजूद हैं।

हम लोगों ने पहली बार वहीं पर इंदिरा गांधी का भाषण सुना था। इसके बाद सफदरजंग चौक चौराहा पर भी उनका भाषण सुनने गए। तब इंदिरा गांधी बिना किसी हिचक और बिना किसी खौफ के लोगों के बीच घुस जाती थीं और उनसे सीधा संवाद बनाती थीं। उनकी इस कार्यशैली को देखकर हम लोग बहुत प्रभावित हुए थे।

-जितेंद्र कुमार कोचर, दिल्ली नगर निगम के पूर्व नेता सदन व वरिष्ठ कांग्रेस नेता

**बायस्कोप**

# लस्सी-इमरती की दावत के बाद दिया था जीत का मंत्र

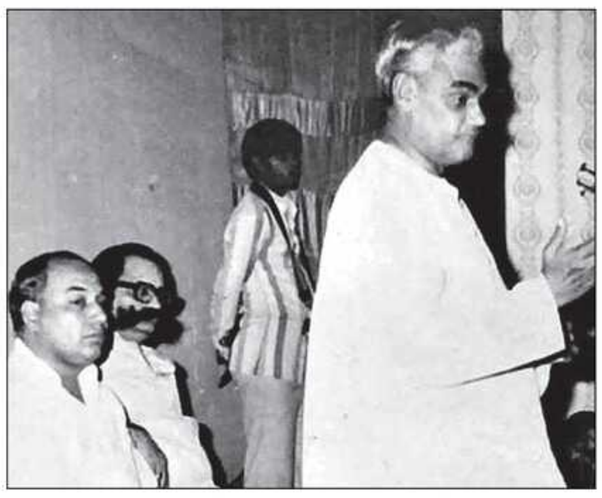

**कानपुर।** पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी कानपुर में ही पढ़े थे, लिहाजा उन्हें यहां के स्ट्रीट फूड की पूरी जानकारी थी। बैठकों-सभाओं में वह इनका स्वाद भी लेते थे। दिसंबर, 1990 की एक बैठक में उन्होंने शर्त रख दी कि पहले चौक की लस्सी और मेस्टन रोड की इमरती की दावत होगी, उसके बाद ही वह जीत के मंत्र देंगे। भाजपा के मीडिया प्रभारी मनीष त्रिपाठी बताते हैं कि तब अटलजी दो दिन के प्रवास पर कानपुर आए थे। पार्टी दफ्तर में संगठन की बैठक के लिए वह पहुंचे, जहां तत्कालीन जिलाध्यक्ष गोपाल अवस्थी बैठक का इंतजाम संभाल रहे थे। अटलजी की दावत की बात सुनकर उन्होंने तुरंत बताई गई दुकानों से लस्सी और इमरती मंगवाई। दावत हुई। उसके बाद अटलजी का भाषण। उस चुनाव में भाजपा ने कानपुर सीट जीत ली थी।

**चुनावी चकल्लस**

# पुराने कार्यकर्ता हैं कि पिघल ही नहीं रहे

बुंदेलखंड की एक सीट पर दिलचस्प समीकरण बन गए हैं। एक बड़ी पार्टी के प्रत्याशी के चुनाव की कमान ऐसे नेता के हाथ दे दी गई, जिन्हें चुनाव में हरवाने की तोहमत आज के प्रत्याशी पर लगाई जाती है। जाति का खेल अब पूरा असर कर रहा है। जिन्हें उनके चुनाव की कमान दी गई, वे नेता कम अफसर जैसे हैं, लिहाजा खामोशी से काम कर रहे हैं पर उन्हीं के समर्थक खुलेआम कह भी रहे हैं कि इस बार इन्हें 'जाति का खेला' समझा देंगे। नेताजी अब गांव-गांव माफी मांगते घूम रहे हैं। पुराने कार्यकर्ता पिघल नहीं रहे। वे तुलसी बाबा को उद्धृत करते हैं, 'जद्यपि जग दारुण दुख नाना, सब ते कठिन जाति अवमाना।'

*कोई भी सुधार तभी हुआ है, जब साहसी व्यक्तियों ने समाज में प्रचलित अमानवीय प्रथाएं और रीति-रिवाज स्वयं तोड़ डाले हैं।*

*- महात्मा गांधी*

# मोदी की स्वीकारोक्ति

## दूसरी नजर

पी चिदंबरम

**झूठ को सामने रखकर और कांग्रेस के घोषणापत्र की सच्चाई चुनावी बहस में लाने में सक्षम बनाकर तथा भाजपा के घोषणापत्र का कोई संदर्भ न देकर, मोदी जी ने स्टालिन का समर्थन किया है। उन्होंने स्वीकार कर लिया है कि कांग्रेस का घोषणापत्र 2024 के लोकसभा चुनावों का असली नायक है।**

इस लोकसभा चुनाव के लिए कांग्रेस का घोषणापत्र 2019 से ही तैयार हो रहा था। राहुल गांधी ने प्रत्यक्ष रूप से यह देखने और जानने-समझने के लिए कन्याकुमारी से कश्मीर तक की ऐतिहासिक पदयात्रा की थी कि आम लोग कैसे और किन परिस्थितियों में रह रहे हैं और उनकी आकांक्षाएं क्या हैं। उदयपुर सम्मेलन एक ऐसा अवसर बना था, जिसमें कांग्रेस पार्टी के नेताओं को तीन दिनों तक एक साथ रहने और देश के सामने आने वाली चुनौतियों और उन पर संभावित प्रतिक्रियाओं को लेकर विचार-विमर्श करने का मौका मिला था। अखिल भारतीय कांग्रेस समिति (एआइसीसी) के रायपुर सम्मेलन के बाद पार्टी नीतियों का एक ऐसा व्यापक और विश्वसनीय मंच तैयार करने में सक्षम हुई थी, जो राज्यों के साथ-साथ राष्ट्रीय चुनावों में भी भाजपा को चुनौती दे सकता है।

नव संकल्प आर्थिक नीति की रचना उदयपुर में की गई थी। 'केंद्र में गरीब' विषय पर रायपुर में विचार-विमर्श किया और उसे अपनाया गया था।

कांग्रेस का घोषणापत्र 5 अप्रैल को जारी हुआ था, जिसे 'न्याय पत्र' नाम दिया गया। इस दस्तावेज के छियालीस पृष्ठों को जो एक सूत्र पिरोता है, वह है 'न्याय', जिससे लोगों के एक बड़े वर्ग को वंचित कर दिया गया था। 'न्याय' शब्द में सामाजिक न्याय, युवाओं के लिए न्याय, महिलाओं के लिए न्याय, किसानों के लिए न्याय और श्रमिकों के लिए न्याय शामिल हैं। लोगों के बड़े वर्ग के साथ भेदभाव किया गया और उन्हें देश की तेज या धीमी विकास गाथा में भागीदारी के उचित अवसर से वंचित किया गया। कांग्रेस का घोषणापत्र 'सबका साथ सबका विकास' के नारे पर से पर्दा हटाने और देश के शासकों को आईना दिखाने वाला है। इसने समता और न्याय के साथ वृद्धि और विकास का एक वैकल्पिक दृष्टिकोण भी प्रस्तुत किया है। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने कांग्रेस के घोषणापत्र को 2024 के चुनावों का 'हीरो' बताया।

शुरू में, मोदी जी और भाजपा ने कांग्रेस के घोषणापत्र को नजरअंदाज करने का फैसला किया। मीडिया ने भी इस दस्तावेज पर बहुत कम ध्यान दिया। मगर जैसे-जैसे इसके अनूदित संस्करण राज्यों तक पहुंचे, और उम्मीदवारों और प्रचारकों ने गांवों और कस्बों में इसके मुख्य संदेश पहुंचाए, कांग्रेस का घोषणापत्र लोगों के बीच चर्चा का विषय बन गया। (पढ़ें : कांग्रेस के घोषणापत्र का पुनर्लेखन, जनसत्ता, 28 अप्रैल, 2024)

पांच अप्रैल के नौ दिन बाद भाजपा ने अपना घोषणापत्र जारी किया। इस पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। इस मोदी-पूजक दस्तावेज के गुणों की प्रशंसा खुद मोदी जी ने भी नहीं की, जिसका शीर्षक है 'मोदी की गारंटी'। सात दिन बाद, 21 अप्रैल को 102 निर्वाचन क्षेत्रों में मतदान हुआ। उसकी 'खुफिया जानकारी' जाहिर तौर पर भाजपा के लिए बुरी खबर थी। यह स्पष्ट हो गया कि मतदाताओं ने घोषणापत्र में किए गए 'वादों' के लिए कांग्रेस और उसके सहयोगियों को वोट दिया है, जैसे कर्नाटक और तेलंगाना में 'गारंटी' के लिए वोट किया था। इससे मोदी को एक रास्ता मिल गया और 21 अप्रैल को उन्होंने अपनी रणनीति बदल ली।

भाजपा ने अपने नेताओं और सदस्यों के लिए जो पटकथा तैयार की, उससे शायद 'गोएबल्स' को गर्व महसूस हुआ होगा। वह पटकथा थी: झूठ, और ज्यादा झूठ और उससे भी ज्यादा झूठ; अगर सत्य कहीं झूठ का प्रतिकार करता हो, तो सत्य को नजरअंदाज कर दो। यहां पिछले चौदह दिनों में फैलाए गए झूठों का एक नमूना पेश है:

**झूठ:** कांग्रेस के घोषणापत्र पर मुसलिम लीग की छाप है।

**सच्चाई:** छियालीस पन्नों में से किसी पर भी 'मुसलिम' शब्द नहीं आया है। अल्पसंख्यकों को धार्मिक और भाषाई अल्पसंख्यकों के रूप में परिभाषित किया गया है और कांग्रेस ने वादा किया है कि 'भाषाई और धार्मिक अल्पसंख्यकों को भारत के संविधान के तहत जो मानव और नागरिक अधिकार दिए गए हैं, कांग्रेस उन अधिकारों को बनाए रखने और उनकी रक्षा करने का वचन देती है।' एससी, एसटी और ओबीसी के कई संदर्भ हैं, लेकिन किसी भी धार्मिक समुदाय का कोई संदर्भ नहीं है।

**झूठ:** अगर कांग्रेस सत्ता में आई तो शरीअत कानून वापस लाएगी।

**सच्चाई:** घोषणापत्र में कहा गया है, 'हम व्यक्तिगत कानूनों में सुधार को प्रोत्साहित करेंगे। ऐसा सुधार संबंधित समुदायों की भागीदारी और सहमति से किया जाना चाहिए।'

**झूठ:** कांग्रेस के घोषणापत्र में मार्क्सवादी और माओवादी आर्थिक सिद्धांतों की वकालत की गई है।

**सच्चाई:** दस पृष्ठों के अर्थव्यवस्था वाले खंड के परिचय में कांग्रेस ने कहा है: कांग्रेस की आर्थिक नीति पिछले कुछ वर्षों में विकसित हुई है। 1991 में कांग्रेस ने उदारीकरण के युग की शुरुआत की और देश को नियामक निरीक्षण के साथ एक खुली, स्वतंत्र और प्रतिस्पर्धी अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर किया। देश को धन-सृजन, नए व्यवसायों और उद्यमियों, एक विशाल मध्यवर्ग, लाखों नौकरियों, शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल में महत्त्वपूर्ण नवाचारों और निर्यात के मामले में भारी लाभ मिला। लाखों लोगों को गरीबी से बाहर निकाला गया। हम एक खुली अर्थव्यवस्था के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराते हैं, जिसमें आर्थिक विकास निजी क्षेत्र द्वारा संचालित होगा और एक मजबूत और व्यावहारिक सार्वजनिक क्षेत्र का पूरक होगा।

**झूठ:** चुनाव जीतने पर कांग्रेस एससी, एसटी और ओबीसी के लिए आरक्षण खत्म कर देगी।

**सच्चाई:** घोषणापत्र में कहा गया है कि 'कांग्रेस गारंटी देती है कि वह एससी, एसटी और ओबीसी के लिए आरक्षण की तय पचास फीसद की सीमा बढ़ाने के लिए संविधान संशोधन करेगी। आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों (ईडब्लूएस) के लिए नौकरियों और शैक्षणिक संस्थानों में दस फीसद का आरक्षण बिना किसी भेदभाव के सभी जातियों और समुदायों के लिए लागू किया जाएगा। हम एक वर्ष की अवधि के भीतर एससी, एसटी और ओबीसी के लिए आरक्षित पदों पर सभी लंबित रिक्तियों को भर देंगे। एससी, एसटी और ओबीसी के हितों को आगे बढ़ाने के लिए और भी कई वादे किए गए हैं।

**झूठ:** कांग्रेस विरासत कर लगाएगी।

**सच्चाई:** कराधान और कर सुधारों पर 12-बिंदु अनुभाग में कांग्रेस ने प्रत्यक्ष कर संहिता बनाने का वादा किया है; पांच वर्षों के लिए स्थिर व्यक्तिगत आयकर दरें बरकरार रहेंगी; पांच फीसद पर उपकर और अधिभार की सीमा; जीएसटी का दूसरा चरण लागू होगा; और एमएसएमई और छोटे खुदरा व्यवसायों पर करों का बोझ कम करेंगे। इसमें विरासत कर का कोई जिक्र नहीं है।

झूठ को सामने रखकर और कांग्रेस के घोषणापत्र की सच्चाई चुनावी बहस में लाने में सक्षम बनाकर तथा भाजपा के घोषणापत्र का कोई संदर्भ न देकर, मोदी जी ने स्टालिन का समर्थन किया है। उन्होंने स्वीकार कर लिया है कि कांग्रेस का घोषणापत्र 2024 के लोकसभा चुनावों का असली नायक है।

# थके-हारे मतदाता

## वक्त की नब्ज

तवलीन सिंह

**दोनों तरफ से मतदाताओं को डराने का काम किया जा रहा है। लेकिन जमीन पर यथार्थ यह है कि मतदाता कहते हैं कि उनकी नजर में न लोकतंत्र को खतरा दिखता है न संविधान के समाप्त होने का। अपना वोट जब देने जाएंगे तो यही सोच कर कि उनके लिए किस पक्ष ने ज्यादा काम किया है और भविष्य में कौन उनके लिए ज्यादा काम करने वाले हैं।**

दोनों पक्ष कहते हैं कि ये आम लोकसभा चुनाव नहीं है। नरेंद्र मोदी की नजर में विशेष इसलिए है कि 'इंडी गठबंधन' जीतेगा तो देश को ऐसी सरकार मिलेगी जो माताओं, बहनों के मंगलसूत्र और स्त्रीधन तक छीनने का काम करेगी। राहुल गांधी कहते हैं कि ये आम लोकसभा चुनाव नहीं है, विशेष है, इसलिए कि अगर मोदी तीसरी बार जीतते हैं तो न लोकतंत्र रहेगा और न संविधान। दोनों तरफ से मतदाताओं को डरा कर उनका वोट हासिल करने का काम हो रहा है। असलियत यह है कि मतदाता आज इतने भोले नहीं हैं कि इस तरह के प्रचार के शिकार बन जाएं।

मतदान का दूसरा दौर समाप्त होने के बाद क्या कहा जा सकता है इस चुनाव के बारे में? यहां कहना जरूरी है अपनी तरफ से कि मैं जो भी कहूंगी, गालियां पड़ेंगी दोनों तरफ से, इसलिए कि दोनों पक्षों ने सोशल मीडिया पर ऐसे लोग बिठा रखे हैं जो राजनीति के बारे में इतना कम जानते हैं कि सोचते हैं कि विश्लेषण करने वाले निष्पक्ष हो नहीं सकते हैं। राहुल गांधी के प्रचार के बारे में कुछ कहती हूं तो पीछे पड़ जाते हैं उनके ऐसे समर्थक जो मुझ पर गांधी परिवार से 'नफरत' करने का आरोप लगाते हैं। मोदी के प्रचार के बारे में कुछ कहती हूं तो पीछे पड़ जाते हैं मोदी भक्त जो मुझ पर यही आरोप लगाते हैं। सो, आगे बढ़ने से पहले स्पष्ट करना चाहती हूं कि नफरत के आधार पर नहीं किया जाता है राजनीतिक विश्लेषण। इतना कठिन क्यों है इस बात को समझना?

अब सुनिए मेरी राय में चुनाव कैसी शक्ल ले चुका है। पहली बात यह कि मुझे लगने लगा है कि लोकसभा चुनाव न रहकर अमेरिकी किस्म का राष्ट्रपति चुनाव बन गया है, जिसमें लड़ाई सिर्फ राहुल गांधी और नरेंद्र मोदी के बीच हो रही है। राहुल की बहन प्रियंका के अलावा एक भी दूसरे कांग्रेस राजनेता का कोई महत्त्व नहीं दिख रहा है। बड़ी आम सभाओं को संबोधित यही दोनों बहन-भाई कर रहे हैं और दोनों के भाषणों में निशाना बनते हैं मोदी। कहते हैं इन दिनों कि मोदी इसलिए डर गए हैं कि जानते हैं कि 400 पार तो दूर की बात, उनको 180 से भी कम सीटें मिलने वाली हैं इस बार। पिछले सप्ताह राहुल गांधी ने अपना नामांकन रायबरेली से भरने से पहले कहा कि उनका अपना अनुमान है कि मोदी 150 पर रुक जाएंगे। और चार जून को जब कांग्रेस की सरकार बनेगी दिल्ली में तो हर गरीब महिला के बैंक खाते में 'खटाखट' पहुंच जाएंगे एक लाख रुपए। हर शिक्षित बेरोजगार को कांग्रेस पार्टी देगी पहली नौकरी 'अप्रेंटिसशिप' योजना द्वारा एक साल के लिए।

दूसरी तरफ हैं मोदी और अमित शाह, जिनको सोशल मीडिया पर 'मोशाह' कहा जा रहा है। इनके प्रचार में भी कांग्रेस के 'शहजादे' को मुख्य निशाना बना रखा है। याद दिलाया जा रहा है कि जब इनके परिवार के हाथों में थी देश की बागडोर तो भारत को लूटने का काम ही किया गया था। यही लूट दोबारा होने वाली है और इस बार जो संपत्ति लोग बनाते हैं अपने जीवन में उसका आधा हिस्सा कांग्रेस की सरकार लूटने वाली है उनके मरने के बाद। कहने का मतलब ये है कि दोनों तरफ से मतदाताओं को डराने का काम किया जा रहा है। लेकिन जमीन पर यथार्थ यह है कि मतदाता कहते हैं कि उनकी नजर में न लोकतंत्र को खतरा दिखता है न संविधान के समाप्त होने का। अपना वोट जब देने जाएंगे तो यही सोच कर कि उनके लिए किस पक्ष ने ज्यादा काम किया है और भविष्य में कौन उनके लिए ज्यादा काम करने वाले हैं।

यहां यह कहना जरूरी है कि जब मैं घूमने निकलती हूं ग्रामीण क्षेत्रों में तो भारतीय जनता पार्टी के प्रचारक दिखते हैं, लेकिन कांग्रेस के नहीं। ऐसा लगता है जैसे पिछले दस सालों में कांग्रेस पार्टी के आला नेताओं ने पार्टी की जड़ें दोबारा मजबूत करने के लिए कोई मेहनत नहीं की है। सेवा दल जैसी संस्थाएं जो कभी कांग्रेस के प्रचार में बहुत काम आया करती थीं, अब तकरीबन गायब हो गई हैं। इसलिए अगर राहुल गांधी की बात सही साबित होती है तो सारा श्रेय उनको जाएगा और उनकी बहन को। सोशल मीडिया पर इन दिनों कांग्रेस छाई हुई है मोदी से भी ज्यादा। लेकिन जमीन पर नहीं।

भारतीय जनता पार्टी को अगर तीसरी बार बहुमत मिलता है लोकसभा में तो उसका श्रेय जाएगा मोदी को ही। इसलिए कि मोदी ही सबसे बड़ा मुद्दा बन गए हैं इस चुनाव में। गांवों में जो विकास के कार्य देखने को मिलते हैं उनका सारा श्रेय लोग देते हैं मोदी को, भारतीय जनता पार्टी को नहीं। राजस्थान के कुछ इलाकों में भाजपा की तरफ से ऐसे लोग खड़े किए गए हैं जिन्होंने संसद में पहुंचने के बाद लोगों के लिए कुछ भी नहीं किया है, लेकिन वे जीत सकते हैं दोबारा मोदी के नाम पर।

तो क्या मोदी का जादू फिर से चलने वाला है? यहां निजी तौर पर कहना चाहूंगी कि मोदी बेशक इस दौड़ में सबसे आगे हैं, लेकिन वह 'हर हर मोदी, घर घर मोदी' वाली बातें जो 2019 में सुनने को मिलती थीं, इस बार नहीं सुनाई देती हैं। मतदाता थके-हारे से लगते हैं इस बार। फिलहाल महाराष्ट्र में हूं, जहां गर्मी इतनी है कि बाहर जाना मुश्किल है और इस गर्मी में पानी की इतनी बड़ी समस्या है ग्रामीण क्षेत्रों में कि कुछ गांव मतदान नहीं करना चाहते हैं। सवाल यह है कि जिस देश में पीने के लिए पानी ही न मिले, वहां कैसे कोई देख सकता है क्षितिज पर विकसित भारत के आसार।

# बौद्धिकता बनाम उपभोक्तावाद

## संदर्भ

राकेश सिन्हा

**मस्तिष्क उत्पादक कम, उपभोक्ता अधिक बन गया है। वह सतह से नीचे जाकर चीजों का जानने-परखने की क्षमता खो रहा है, मनोरंजन की आवश्यकता उसके मस्तिष्क की भूख शांत करने के लिए अनिवार्य पहलू बन जाती है। उस मनोरंजन में तात्कालिकता तो है, पर दीर्घकालिकता नहीं है। भौतिकता ने मस्तिष्क को विलासी उपभोक्ता बना दिया है।**

पहले की तुलना में पुस्तक पढ़ने की लालसा और क्षमता दोनों घटी है। इसके बावजूद 2010 में तेरह करोड़ पुस्तकें प्रकाशित हुई थीं। अकेले भारत में 2022 में नब्बे हजार शीर्षक से पुस्तकें प्रकाशित हुई थीं। नई पीढ़ी सोशल मीडिया पर अधिक समय गुजारती है। कम शब्दों में व्यक्त विचार पर सकारात्मक और नकारात्मक प्रतिक्रियाएं आती हैं। इसी को विमर्श मान लिया जाता है। मन हल्के तरह से हल्की भाषा में बोलने और लिखने की आदत के चक्रव्यूह में फंसता जा रहा है। यह वैश्विक प्रवृत्ति है। इसके कारण और परिणामों पर चिंता की जगह चिंतन आज के दौर में उपलब्धि मानी जाएगी।

विज्ञान अपनी तरह से उन्नति कर रहा है। उसकी प्रगति में मनुष्य को श्रमजीवी से तकनीकजीवी बनाना लक्ष्य है। शहरों-महानगरों में आर्थिक संपन्नता और तकनीकी उपलब्धता ने मनुष्य को शारीरिक श्रम से दूर किया है। इसका फलक दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। डर है कि मनुष्य तकनीक की तरह और तकनीक मनुष्य की तरह न व्यवहार करना शुरू कर दे। यह प्रश्न उठता है कि क्या विज्ञान अपने आप में स्वायत्त एवं संप्रभु है। आज ऐसा ही लग रहा है। दूसरे क्षेत्रों, आध्यात्मिक दर्शन, सामाजिक-सांस्कृतिक चिंतन आदि में प्रगति का सूचकांक कम होने से उनका प्रभाव घटा है। सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी को पुरानी संरचना और कर्मकांड में बांधकर रखने का काम उन्हें भौतिकवाद में मुक्ति दिखाता है। इसे भारतीय दर्शन में चार्वाक कहा गया। उदाहरणार्थ, अमेरिका में चर्च की सदस्यता 1937 में 73 फीसद थी, जो 2020 में घटकर 47 फीसद रह गई है। यूरोप और अन्य इसाई भूभागों में भी इस प्रवृत्ति का बोलबाला है। नौजवानों को नई खोज, नए उपभोग की सामग्री उत्तेजित करती है। विज्ञान की सार्थकता समाज के उत्थान में है, पर विज्ञान भौतिकता को बढ़ा कर मनुष्य के मस्तिष्क को सामाजिक स्तर पर बंजर बना रहा है। इसलिए अध्यात्म, दर्शन, संस्कृति की भूमिका अहम हो जाती है।

जब अध्यात्म मानव जीवन मूल्यों को दर्शन के रास्ते परिभाषित करता है और उसे उस विचार को पढ़ने, सुनने, आत्मसात करने में व्यक्ति अपना सशक्तीकरण देखता है, तब आध्यात्मिक दर्शन की चौहद्दी फैलती जाती है। यही मस्तिष्क सृजनकर्ता बनता है। इसे मस्तिष्क की उत्पादकता भी कहते हैं। इसमें मानसिक श्रम और समय दोनों की आवश्यकता होती है। कर्मकांड से बंधी संस्थाएं सृजन का कार्य नहीं कर पाती हैं। मस्तिष्क बंधक बना रहता है। भारत की स्थिति भिन्न रही है। भारतीय दर्शन को अध्यात्म से अलग नहीं किया जा सकता है। इसलिए अध्यात्म कर्मकांड को आवश्यक मानता है, अनिवार्य नहीं। भारतीय परिवेश में जब व्यक्ति में आध्यात्मिक चेतना पैदा होती है, तब वह उसे अपने अधिनायकवाद में तब्दील कर अंतिम सत्य या पथ घोषित नहीं करता है। यही इसकी खूबी और खुशबू दोनों है। बुद्ध, महावीर, शंकराचार्य अपने ज्ञान को मिल रही चुनौती से न पीछे हटते थे, न ही उसे दार्शनिक हिंसा मानते थे।

बौद्धिकता और दर्शन की सृजनशीलता व्यक्तिगत होती है। इसका दायरा भी सीमित होता है। पर यह आम लोगों को सोचने, समझने, उलझने की पूरी स्वतंत्रता देता है। इसीलिए संरचनाओं के निर्माण की आवश्यकता पड़ती है। शंकराचार्य ने चार धामों की स्थापना की। प्रत्येक धाम अपने आप में स्वायत्त है। ये धाम मूलतः दर्शन और मूल्यों के सृजन के पीठ के रूप में थे, जिसमें संस्कृति के प्रवाह को संदर्भित करने की क्षमता होती थी। आठवीं शताब्दी में स्थापित ये धाम इक्कीसवीं शताब्दी में अपनी कितनी सृजनशीलता बनाए हुए हैं, यह अध्ययन का विषय है। महाराष्ट्र में तेरहवीं शताब्दी में समाज परिष्कार की मौलिक परंपरा कीर्तन (भजन मंडली) शुरू हुई थी। एकनाथ, तुकाराम, नामदेव, ज्ञानदेव के प्रवचनों को नृत्य, संगीत, कथा वाचन एवं अभिनय के द्वारा अभिव्यक्त किया जाता था।

बौद्ध विद्वानों के बीच सामयिक प्रश्नों के साथ उसकी सार्थकता को लेकर तीन प्रसिद्ध विशाल परिषदें- राजगीर, वैशाली और पाटलिपुत्र में दो हजार वर्ष पूर्व हुई थीं। ये विचार विनिमय एकांगी नहीं होते थे। समाज, संस्कृति, प्रकृति, विज्ञान, मनुष्य सभी पक्षों को विचारणीय माना जाता था। ये यही मूल दर्शन अंततः साहित्य, समाजशास्त्र, शासन कला और राजनीति को प्रभावित करता था। यह इस बात का भी सूचक है कि संस्थानों का स्वस्थ, स्वायत्त होना और स्वतंत्र विचार-विमर्श का केंद्र होना कितना आवश्यक है। वे मानव की प्रगति को सुनिश्चित करते हैं। प्रगति का तब तात्पर्य भौतिकता का ऐश्वर्य नहीं, समष्टि को प्रभावित और परिष्कृत करने वाले दर्शन का निर्बाध प्रवाह है। उपनिषद तभी तो चिरंजीवी हुआ है। प्रकारांतर से मस्तिष्क उत्पादक कम, उपभोक्ता अधिक बन गया है। वह सतह से नीचे जाकर चीजों का जानने-परखने की क्षमता खो रहा है, मनोरंजन की आवश्यकता उसके मस्तिष्क की भूख शांत करने के लिए अनिवार्य पहलू बन जाती है। उस मनोरंजन में तात्कालिकता तो है, पर दीर्घकालिकता नहीं है। भौतिकता ने मस्तिष्क को विलासी उपभोक्ता बना दिया है। यह व्यक्ति की उदात्तता को न सिर्फ कम कर रहा है, उसे सीमित सामाजिकता में जीने के लिए बाध्य कर रहा है। एक भिन्न प्रकार का व्यक्तिवादी चरित्र विकसित हो रहा है। विज्ञान और भौतिकता की सांठगांठ और भी प्रतिकूलता को जन्म दे रही है। विरासत की चादर ओढ़कर हम अपने कमजोर वर्तमान और बौद्धिक चरित्र को नहीं छिपा सकते है। प्राचीनता की उपयोगिता और उसके प्रभाव की अपनी सीमा है।

# दावे और इरादे

## बाखबर

सुधीश पचौरी

**इसी क्रम में एक दिन चुनाव आयोग ने पहले दो चरणों में हुए मतदान फीसद के आकड़ों को 'अद्यतन' कर नए आंकड़े दिए तो मतदान इतना कम भी न दिखा, जितना बताया जाता रहा। मगर नए आंकड़ों पर चर्चा किसी चैनल ने न कराई।**

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि ईवीएम 'ओके' है... बाकी मुद्दे आयोग के हवाले। कुछ देर तक एक मायूसी-सी हवा में छाई रही। फिर विपक्ष के एक रणबांकुरे ने यह कहा कि हम अदालत के फैसले का सम्मान करते हैं, लेकिन लड़ाई लंबी है। दूसरे विपक्ष के नेता ने कहा कि इस चुनाव में 'मैच फिक्सिंग' कर रहे हैं। एक नेत्री जी भी कहिन कि इन्होंने पहले ही गड़बड़ कर रखी है, वरना कैसे कह सकते हैं कि चार सौ पार..! फिर चार सौ पार की व्याख्या की जाती रही कि चार सौ पार इसलिए, ताकि भाजपा संविधान बदल सके।

इसके बाद तो 'आरक्षण बरक्स आरक्षण' जम कर हुआ। इसी कारण 'कोटा बरक्स कोटा युद्ध' कई दिन चैनल चर्चा में छाया रहा। एक विपक्षी कहिन कि चार सौ पार लाए तो ये आरक्षण हटा देंगे। उधर 'चार सौ पार' वाले कहिन कि कांग्रेस आई तो अनुसूचित जाति-जनजाति और पिछड़ा वर्ग के आरक्षण को काटकर उसकी जगह धार्मिक आधार पर मुसलिम अल्पसंख्यक को आरक्षण दे देगी, जबकि धार्मिक आधार पर कोटा देना गैरकानूनी होगा। जब 'कोटा बरक्स कोटा' खूब हो चुका तो 'चार सौ पार' वाले मोदी ने कहा कि ये सुनिश्चित करें कि कोटा भीतर मुसलिम अल्पसंख्यक को कोटा नहीं देंगे... 370 नहीं हटाएंगे..!

फिर एक बार और स्वयं मोदी ने साफ किया कि कांग्रेस झूठ फैला रही कि संविधान बदल देंगे, आरक्षण खत्म कर देंगे। आज बाबा साहब आ जाएं तो वे भी संविधान नहीं बदल सकते। इसके अलावा एक दिन एक चैनल पर मोदी ने लंबा साक्षात्कार देकर कांग्रेस के घोषणापत्र के एलानों की धज्जियां बिखेरीं। साथ ही अपनी नीतियों के बारे में विस्तार से बताया। फिर अमित शाह ने भी एक रैली में साक्षात्कार देते हुए बहुत से आरोपों का जवाब दिया। इसी बीच भाजपा के एक नेता ने साफ किया कि पहले दो चरण में भाजपा 2.0 से आगे है। फिर एक चैनल पर भाजपा के एक बड़े नेता की मार्फत लाइन आई कि 4 जून को दोपहर 12.30 पर 400 पार।

इसी क्रम में एक दिन चुनाव आयोग ने पहले दो चरणों में हुए मतदान फीसद के आकड़ों को 'अद्यतन' कर नए आंकड़े दिए तो मतदान इतना कम भी न दिखा, जितना बताया जाता रहा। मगर नए आंकड़ों पर चर्चा किसी चैनल ने न कराई। नए आंकड़ों पर विपक्ष के नेता सिर्फ इतना ही कह सके कि आयोग को अधिक पारदर्शी होना चाहिए।

फिर एक दिन कांग्रेस को बड़ा झटका दिल्ली अध्यक्ष अरविंदर सिंह लवली के इस्तीफे ने दिया और दूसरा झटका इंदौर के कांग्रेसी उम्मीदवार ने आखिरी दिन अपना नाम वापस लेकर दिया। यही नहीं, उम्मीदवार भाजपा के एक नेता के साथ जाता दिखा। फिर भी कांग्रेस में कहीं कोई अफसोस और आह-कराह नहीं।

फिर आया मारिया जी का बयान कि 'वोट जिहाद' करें... जो मुसलमान भाजपा को वोट देते हैं, उनका हुक्का-पानी बंद करें। इसे देख एक एंकर ने कटाक्ष किया कि अब तो साफ है कि कुछ मुसलमान भाजपा को भी वोट करते हैं। भाजपा को मुंहमांगी मुराद मिली। उसके प्रवक्ता तुरंत हमलावर कि ये वही 'जिहादी मानसिकता' है, जिसने देश का बंटवारा कराया। एक एंकर ने जब एक मुसलिम विद्वान से 'वोट जिहाद' का मतलब पूछा तो वे बोले कि इसका मतलब है मुसलमान अधिक संख्या में वोट डालने आएं। इसके बाद चर्चा में 'ध्रुवीकरण' छाया रहा। विपक्षी कहते कि भाजपा ध्रुवीकरण करती है तो भाजपा का जवाब आता कि कांग्रेस तो ध्रुवीकरण की मास्टर है। वह तो 'कोटा में कोटा' काटकर अल्पसंख्यकों को देती है।

और फिर एक दिन आया एक 'डीपफेक' यानी 'जाली वीडियो', जिसने गृहमंत्री से वह कहलवाया जो उन्होंने कहा नहीं था। एक चैनल ने 'असली' और 'डीप फेक' को अलग-अलग बजाकर साफ किया कि गृहमंत्री ने तो कहा था कि वे एससी-एसटी, ओबीसी आरक्षण को काटकर अल्पसंख्यकों को दिए जाते आरक्षण को हटाएंगे, जबकि 'डीपफेक' वाला वीडियो बजाता रहा कि वे एससी-एसटी आरक्षण को हटाएंगे। इसके बाद 'डीपफेक' पर केस हुआ। जांच जारी!

इसके बाद आई पूर्व प्रधानमंत्री देवगौड़ा के सांसद पौत्र प्रज्वल रेवन्ना के 'वीडियो' की सनसनीखेज कहानी और उसके विदेश भाग जाने की खबर। इस पर विपक्ष बम-बम कि सदी के सबसे बड़े घोटाले पर केंद्र क्यों सोया रहा? उसे क्यों भागने दिया? भाजपा ने तुरंत साफ किया कि उसका भाजपा से कोई संबंध नहीं। वह जेडीएस का है। फिर तीन महीने से वीडियो की खबर राज्य को थी, तब उसने कुछ क्यों नहीं किया।

अंततः शुक्रवार की सुबह खबर दी गई कि राहुल रायबरेली से नामांकन भरेंगे, जबकि अमेठी से कांग्रेस के केएल शर्मा लड़ेंगे। प्रियंका प्रचार करेंगी। कई एंकर कहे कि ये फैसला पहले भी हो सकता था। इस हिचक को देख अमित शाह ने चुटकी ली कि कांग्रेस आत्मविश्वास खो चुकी है। एक चैनल ने लाइन दी: अमेठी से डर... इसलिए रायबरेली की डगर!

नई दिल्ली

www.readwhere.com

दैनिक जागरण

सुख और दुख हमारे कर्मों के परिणाम हैं

# मुसीबत बने प्रत्याशी

मतदान का तीसरा चरण करीब आ गया, लेकिन कांग्रेस नेताओं के पार्टी छोड़ने या फिर चुनाव लड़ने से इन्कार करने का सिलसिला खत्म होने का नाम नहीं ले रहा है। गत दिवस एक ओर जहां दिल्ली प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष अरविंदर सिंह लवली ने अन्य कांग्रेसी नेताओं संग भाजपा की सदस्यता ग्रहण कर ली, वहीं पुरी से कांग्रेस प्रत्याशी सुचारिता महंती ने यह कहते हुए टिकट लौटा दिया कि पार्टी चुनाव लड़ने के लिए धन नहीं दे रही है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि उनके क्षेत्र में ओडिशा विधानसभा चुनावों के लिए कमजोर उम्मीदवार उतारे गए हैं। वह चुनाव लड़ने से पीछे हटने वाली दूसरी उम्मीदवार हैं। इसके पहले इंदौर के कांग्रेस प्रत्याशी ने चुनाव लड़ने से मना कर दिया था। इसके और पहले सूरत में कांग्रेस प्रत्याशी का नामांकन रद हो गया था, क्योंकि उनके प्रस्तावकों के हस्ताक्षर फर्जी पाए गए थे। पहले तो कांग्रेस ने अपने प्रत्याशी का नामांकन रद होने के लिए भाजपा पर आरोप लगाए, लेकिन बाद में उसी प्रत्याशी को उसके संदिग्ध आचरण के कारण निलंबित कर दिया। राजस्थान के बांसवाड़ा के मामले को भी नहीं भूला जा सकता। वहां कांग्रेस को अपने ही प्रत्याशी को हराने की अपील करनी पड़ी, क्योंकि अंत समय में पार्टी ने दूसरे दल के उम्मीदवार को समर्थन देना तय किया। इस तरह के मामले केवल यही नहीं बताते कि कांग्रेस उपयुक्त प्रत्याशियों का चयन करने में नाकाम है, बल्कि यह भी इंगित करते हैं कि उसके पास अपनी खोई हुई जमीन वापस पाने और अपने कार्यकर्ताओं में उत्साह का संचार करने की कोई ठोस रणनीति नहीं है।

भले ही राहुल गांधी चुनाव प्रचार के दौरान बेहद आक्रामक दिख रहे हों, लेकिन वह अपने नेताओं और कार्यकर्ताओं में जोश नहीं भर पा रहे हैं। इसका एक कारण गठबंधन के नाम पर अपने पुराने गढ़ों में भी अपनी राजनीतिक जमीन छोड़ना है। किसी और यहां तक कि कांग्रेसजनों के लिए भी यह समझना कठिन है कि दिल्ली में आम आदमी पार्टी से समझौता करने से पार्टी को क्या हासिल होने वाला है? इस बार गांधी परिवार दिल्ली में उस आम आदमी पार्टी के प्रत्याशी को वोट देगा, जिसने उसे रसातल में पहुंचाया। राहुल गांधी का अमेठी के बजाय रायबरेली से चुनाव लड़ना भी कांग्रेस की दिशाहीनता का सूचक है। यह हास्यास्पद है कि गांधी परिवार के करीबी राहुल के अमेठी से चुनाव न लड़ने के फैसले को यह कहकर मास्टर स्ट्रोक बता रहे हैं कि पार्टी ने स्मृति इरानी का महत्व कम कर दिया। क्या सच यह नहीं कि कांग्रेस ने अमेठी से स्मृति इरानी की जीत सुनिश्चित करने का काम किया है? इसकी भी अनदेखी नहीं की जा सकती कि कांग्रेस कई राज्यों में बेमन से चुनाव लड़ रही है। आखिर क्या कारण है कि राहुल या प्रियंका ने अभी तक बंगाल का दौरा नहीं किया है?

# बालू के साथ प्रयोग

अगर कोई चाहे तो बिहार सरकार की ओर से बालू के साथ किए गए प्रयोगों पर सुंदर, विस्तृत और रोचक ग्रंथ की रचना कर सकता है। अधिक मेहनत करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। तीन चार-साल के भीतर के सरकारी परिपत्रों और उस आधार पर प्रकाशित समाचारों का अध्ययन करने मात्र से संबंधित ग्रंथ की रचना हो सकती है। इसमें हास्य भी रहेगा। अर्थशास्त्र भी रहेगा। करामात का समावेश भी रहेगा। इससे यह भी पता चलेगा कि बालू से तेल निकालने वाले लोग कितने पिछड़े थे। बेचारे सिर्फ तेल निकाल कर ही रह गए। बालू से कुछ बढ़िया निकालने का हूनर उनके पास होता तो वे आज की तरह आलीशान मकान निकाल सकते थे। विधानसभा और लोकसभा का टिकट निकाल सकते थे। मतलब तेल से अधिक कीमती आइटम निकाल सकते थे, लेकिन ज्ञान के अभाव में बेचारे सिर्फ तेल निकाल कर रह गए। आजतक कहावत बनकर अपमानित हो रहे हैं। उस समय अधिक मूल्यवान वस्तु निकाल लिए होते तो उनकी पीढ़ियां ठाठ से जीवन बसर करतीं। अधिक से अधिक क्या होता? सजा मिलती। कुछ दिन जेल में रहते। आज भी लोग बालू के कारण जेल जा रहे हैं। कानून बनाने वाले एकाध लोग भी बालू लीला में लिप्त होकर जेल की सैर कर रहे हैं। मगर, इससे किसका स्वास्थ्य खराब हो रहा है। बालू के अवैध कारोबार पर नजर रखने वाली सरकारी एजेंसियां भी कहां पीछे रह रही हैं। सिपाही से लेकर कोतवाल तक बालू के खेल में फंसे हुए हैं। जेल जा रहे हैं। निलंबित हो रहे हैं। फिर भी कोई सरकारी मुलाजिम परहेज नहीं कर रहा है। सरकार का कानून है। कानून के तहत बालू का कारोबार होगा, ताकि आम और खास लोगों को आसानी से बालू मिल सके। सब हो रहा है। बस एक काम यही नहीं हो रहा है कि आसानी से बालू मिल जाए। लोगों को कालाबाजार में आसानी से बालू मिल जा रहा है। लोग तो अब उचित मूल्य पर बालू की मांग ही नहीं करते हैं। उन्हें पता है कि ऐसी मांगें अगर जोर पकड़ लें तो एक और परिपत्र जारी होगा।

# क्यों उदासीन हैं मतदाता

संजय गुप्त

**चुनाव लोकतंत्र की धुरी होते हैं, लेकिन यह धुरी तभी मजबूत होगी, जब चुनाव साफ-सुथरे होंगे और लोग बढ़-चढ़कर मतदान करेंगे**

अवधेश राजपूत

लोकसभा चुनाव के दो चरणों का मतदान होने के उपरांत यह और स्पष्ट है कि भाजपा के तमाम प्रत्याशी अपनी जीत के लिए प्रधानमंत्री मोदी की लोकप्रियता और छवि पर अधिक आश्रित हैं। उनका अपना कामकाज संतोषजनक नहीं। इसके अलावा स्थानीय नेताओं एवं कार्यकर्ताओं पर उनकी ऐसी पकड़ भी नहीं, जिसके बलबूते वे भाजपा समर्थकों में उत्साह का संचार कर सकें। इस पर आश्चर्य नहीं कि इस बार चुनावों में वैसा उत्साह नहीं दिख रहा, जैसे पिछले आम चुनावों में दिखता था। न तो भाजपा खेमे में उत्साह देखने को मिल रहा है और न ही विपक्षी खेमे में। मतदान के दोनों चरणों में पिछली बार के मुकाबले मतदान के कम प्रतिशत के लिए इस उत्साहहीनता को जिम्मेदार माना जा रहा है। इसके अलावा एक कारण यह भी माना जा रहा कि जहां भाजपा के नेतृत्व वाले राजग के समर्थक यह मानकर चल रहे हैं कि मोदी तो फिर से सत्ता में आ ही रहे हैं, वहीं कांग्रेस के नेतृत्व वाले आइएनडीआइए के समर्थक यह समझ रहे हैं कि इस गठबंधन के लिए सत्ता हासिल करना कठिन है।

इस बार पहले दो चरणों में मतदान का प्रतिशत पिछले लोकसभा चुनावों के मुकाबले कम रहा। मतदान प्रतिशत में कमी के मूल कारण जो भी हों, पिछले दो चरणों में कम मतदान के आधार पर सत्तापक्ष और विपक्ष को फायदा या नुकसान होने के जो निष्कर्ष निकाले जा रहे, उनका कोई ठोस आधार नहीं, क्योंकि कोई भी निश्चित तौर पर यह नहीं कह सकता कि किस पक्ष के मतदाताओं ने मतदान के लिए कम उत्साह दिखाया। कम मतदान से चाहे जिसे लाभ या हानि हो, इससे इन्कार नहीं कि भाजपा और उसके सहयोगी दलों के तमाम प्रत्याशी अपने कामकाज के बजाय मोदी की साख के भरोसे अधिक हैं। संभवतः मोदी भी यह जान रहे हैं और इसीलिए वे धुंआधार प्रचार कर रहे हैं। चूंकि दक्षिण भारत के एक बड़े हिस्से में मतदान हो चुका है, इसलिए उत्तर भारत पर निगाह अधिक है। पिछली बार भाजपा ने उत्तर भारत में ही शानदार सफलता पाई थी। इसी उत्तर भारत में एक बड़ी संख्या में भाजपा के सांसद फिर से चुनाव मैदान में हैं। इनमें से अनेक को सत्ता विरोधी रुझान का सामना करना पड़ रहा है। कई जगह उनके कामकाज से जनता संतुष्ट नहीं। लगता है ये सांसद यही मानकर चलते रहे कि इस बार भी मोदी नाम के सहारे उनकी नैया पार लग जाएगी। आखिर ऐसा कब तक चलेगा? इस पर हर दल को विचार करना चाहिए कि कैसे वही जनप्रतिनिधि चुनाव मैदान में फिर से उतरें, जो अपने क्षेत्र की जनता की समस्याओं का समाधान करने के लिए तत्पर रहें। जिताऊ उम्मीदवार के नाम पर जनता की समस्याओं से बेपरवाह या दलबदलू नेताओं को चुनाव मैदान में नहीं उतारा जाना चाहिए। इसी के साथ जनता की भी यह जिम्मेदारी बनती है कि वह जाति और मजहब के नाम पर अयोग्य, दागी और दलबदलू नेताओं को चुनाव जिताना बंद करे। यह एक तथ्य है कि अयोग्य जनप्रतिनिधियों के लिए दलों के नेतृत्व के साथ-साथ जनता भी एक हद तक जिम्मेदार है।

जैसे-जैसे मतदान का तीसरा चरण करीब आता जा रहा है, सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच आरोप-प्रत्यारोप का सिलसिला तेज होता जा रहा है। एससी-एसटी-ओबीसी आरक्षण में कटौती से लेकर मजहब आधारित मुस्लिम आरक्षण को लेकर तो आरोप-प्रत्यारोप लग ही रहे हैं। दोनों पक्ष यह भी प्रचारित कर रहे हैं कि उनसे संविधान और लोकतंत्र को खतरा है। जहां भाजपा कांग्रेस को घेरने के लिए संपत्ति के पुनर्वितरण का मुद्दा उठा रही है, वहीं कांग्रेस मोदी सरकार को चंद कारोबारियों के लिए काम करने का आरोप दोहरा रही है। दोनों ही पक्ष ध्रुवीकरण करने की भी कोशिश कर रहे हैं। इसका उदाहरण हैं मुस्लिम आरक्षण और वोट जिहाद की बातें। इस सबके बीच चुनावों को लेकर मतदाताओं की उदासीनता भी चर्चा में है।

मतदाताओं की उदासीनता इसलिए आश्चर्य का विषय है, क्योंकि युवा एवं शिक्षित मतदाताओं की संख्या बढ़ रही है। जो शहरी मतदाता सबसे अधिक मुखर रहता है, वही मतदान में कम हिस्सेदारी करता है। महानगरों और बड़े नगरों में मतदान का प्रतिशत ग्रामीण इलाकों से कम रहता है। इस बार भी ऐसा ही देखने को मिल रहा है। चूंकि तमाम मतदाता प्रलोभन में आकर मतदान करने लगे हैं, इसलिए राजनीतिक दल और प्रत्याशी अनुचित तरीके से उन्हें लुभाने का काम भी करने लगे हैं। वे पैसा, शराब और अन्य वस्तुएं उनमें गुपचुप रूप से बांटते हैं। इसके लिए कुछ प्रत्याशी तो अनाप-शनाप खर्च करते हैं। इसका पता इससे चलता है कि इस बार मतदाताओं के बीच चोरी-छिपे बांटे जाने वाले नशीले पदार्थ, आभूषण, नकदी बड़ी मात्रा में पकड़ी गई। यह मात्रा पिछले चुनाव से कहीं अधिक है, जबकि अभी मतदान के दो ही चरण हुए हैं। स्पष्ट है वोट खरीदे जा रहे हैं। ऐसा इसीलिए हो रहा है, क्योंकि लोग भी अपना वोट बेचने को तैयार हैं। क्या इससे बड़ी विडंबना और कोई हो सकती है कि प्रत्याशी वोट खरीद कर चुनाव जीतने में सफल रहें? चिंता की बात है कि यह समस्या बढ़ रही है। एक समस्या यह भी देखने को मिल रही है कि चुनावों में भावनात्मक और ध्रुवीकरण वाले मुद्दे अधिक उछलने लगे हैं। जब ऐसा होता है तो जनहित के वास्तविक मुद्दे पीछे छूट जाते हैं।

चुनाव परिणाम तो चार जून को ही पता चलेंगे, लेकिन भावी सरकार को इस पर गंभीरता से विचार करना होगा कि साफ-सुथरे चुनावों के लिए कानूनों में क्या सुधार किए जाएं? इस पर विचार करते समय एक साथ चुनाव भी प्राथमिकता में आने चाहिए, जिनकी चर्चा लंबे समय से हो रही है और जिनकी सिफारिश पूर्व राष्ट्रपति राम नाथ कोविन्द वाली समिति ने हाल में की है। एक साथ चुनाव की दिशा में आगे बढ़ने के साथ ही मतदान अनिवार्य करने को लेकर भी विचार-विमर्श होना चाहिए। चुनाव लोकतंत्र की धुरी होते हैं, लेकिन यह धुरी तभी मजबूत होगी, जब चुनाव साफ-सुथरे तरीके से होंगे और लोग बढ़-चढ़कर मतदान करेंगे। लोग वोट के जरिये केवल अगले पांच साल के लिए सरकार का ही चयन नहीं करते, बल्कि अपने भाग्य का भी निर्धारण करते हैं। मतदान में भाग न लेने वाले बाद में शिकायत करने के अधिकारी नहीं रह जाते।

response@jagran.com

# सेवा के इंतजार में नेताजी

हास्य-व्यंग्य

अतुल कुमार राय

**नेता चुनाव जीतकर जनता की सेवा करता है और जब हारता है तो सेवा करने की प्रतीक्षा करता है**

जहां चुनाव से पहले जिंदाबाद-जिंदाबाद के नारे गूंजा करते थे, वहां आज सन्नाटा पसरा है। जहां कार्यकर्ताओं की फौज राजनीतिक गर्मी में मस्त रहती थी, वहां आज सब पस्त दिख रहे हैं। खबर मिलने तक नेताजी का टिकट कट चुका था और वह भारी मन से इंटरव्यू देने जा रहे थे। इंटरव्यू लेने वाले पत्रकार का चैनल और हौसला, दोनों नए थे। उसने बुलंद आवाज में नेताजी से पूछा, 'आपने वर्षों पार्टी की सेवा की, लेकिन पार्टी ने आपका टिकट काट दिया। फिर भी मुस्कुरा रहे हैं, कैसे?' नेताजी ने अपनी मुस्कान को थोड़ा विस्तृत किया और कहा, 'यही तो साधना है जी। मैंने भले ही जनता का कोई काम टाइम से नहीं किया, लेकिन हर टाइम मुस्कुराने का काम किया है।' पत्रकार चौंका, 'तो आपकी इस रहस्यमयी मुस्कान का रहस्य क्या है, देश जानना चाहता है?' 'देखिए, नेता के चेहरे से उसकी जनता मुस्कुराती है। और जब नेता के चेहरे से जनता मुस्कुराती है तो हमारा यह लोकतंत्र मुस्कुराता है।'

जवाब सुनकर पत्रकार को रोना आ गया। उसने माइक को नेताजी के मुंह के और करीब कर दिया और पूछा, 'लेकिन आपके क्षेत्र की जनता तो आपसे बहुत दुखी थी। बिलावलपुर वालों ने आपको भगा दिया। लुट्टनपुर वालों ने आपके सामने ही मुर्दाबाद के नारे लगाए। फिर यह कौन-सी जनता है, जो आपसे खुश है?' यह सुन नेताजी के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं। उन्होंने अपनी मुस्कान को जरा कृत्रिम बनाकर कहा, 'देखिए, हमारा आंतरिक सर्वे कह रहा है कि हमसे आज भी सब खुश हैं। बिलावलपुर वाले विपक्षी पार्टियों से मिले हुए थे। लुट्टनपुर में तो मेरी ही पार्टी के कुछ लोगों ने साजिश की थी।' इस जवाब के बाद उस नए पत्रकार से रहा न गया। उसने पूछा, 'आप साजिश की बात कर रहे हैं, लेकिन आप पर आरोप है कि आपने पुल बनाने का ठेका अपने एक करीबी रिश्तेदार को दे दिया था और भारी कमीशन खाया।' नेताजी ने हंसते हुए कहा, 'कहां-कहां से सवाल लाते हैं आप। मैं तो जनता की सेवा में इतना मशगूल रहता हूं कि टाइम से खाना भी नहीं खा पाता, कमीशन कैसे खाऊंगा। रही बात रिश्तेदार की तो वह मेरा रिश्तेदार नहीं। मेरा कार्यकर्ता है। और मैं अपने हर कार्यकर्ता को अपना रिश्तेदार मानता हूं, क्योंकि एक नेता को उसका कार्यकर्ता ही पुल बनकर जनता से जोड़ता है। हमारे लिए हमारा कार्यकर्ता पुल है। अगर किसी कार्यकर्ता ने एक पुल बना ही लिया तो कौन-सा पहाड़ गिर गया?' पत्रकार ने अपने मोबाइल पर तस्वीर दिखाते हुए कहा, 'पहाड़ नहीं गिरा, देखिये समूचा पुल ही गिर गया। आपके फीता काटने के एक दिन बाद ही ढह गया और मकसूदन की चार बकरियां दबकर मर गईं। आरोप है कि आप न पुल देखने गए, न ही बकरियां।' नेताजी तमतमा गए। बोले, 'मधुसूदन जी आज से नहीं, हमेशा से हमारे विरोधी रहे हैं। बकरी का बिजनेस जब बढ़िया नहीं चला तो वह विरोधियों के साथ मिलकर मेरे खिलाफ साजिश रचने लगे।' पत्रकार खड़ा हो गया और बोला, 'वह बेकरी वाले मधुसूदन हैं, मैं तो बकरी वाले मकसूदन की बात कर रहा रहा हूं।' नेताजी भी खड़े हो गए और बोले, 'हमारे लिए चाहे कोई बकरी वाला हो या बेकरी वाला, सब बराबर हैं। हम अंतर ही नहीं करते।'

पत्रकार ने मामले को संभालते हुए कहा, 'अच्छी बात है आप सबको बराबर नजर से देखते हैं, लेकिन टिकट नहीं मिला अब आप क्या करेंगे?' नेताजी के चेहरे पर संवेदना का समंदर उतर आया। उन्होंने कहा, 'यह बहुत अच्छा सवाल पूछा आपने, मैं आपको बताता हूं। देखिए, नेता चुनाव जीतकर जनता की सेवा करता है और जब हारता है तो सेवा करने का इंतजार करता है। हम भी सेवा का इंतजार करेंगे।' पत्रकार ने कहा, 'लेकिन आप हारे कहां हैं, आपका तो टिकट कटा है, अब आप क्या करेंगे?' नेताजी ने इधर-उधर देखा और सिर खुजाते हुए कहा, 'आपका चैनल सब्सक्राइब करके देखते रहेंगे।' इस पर पत्रकार खुश हो गया।

response@jagran.com

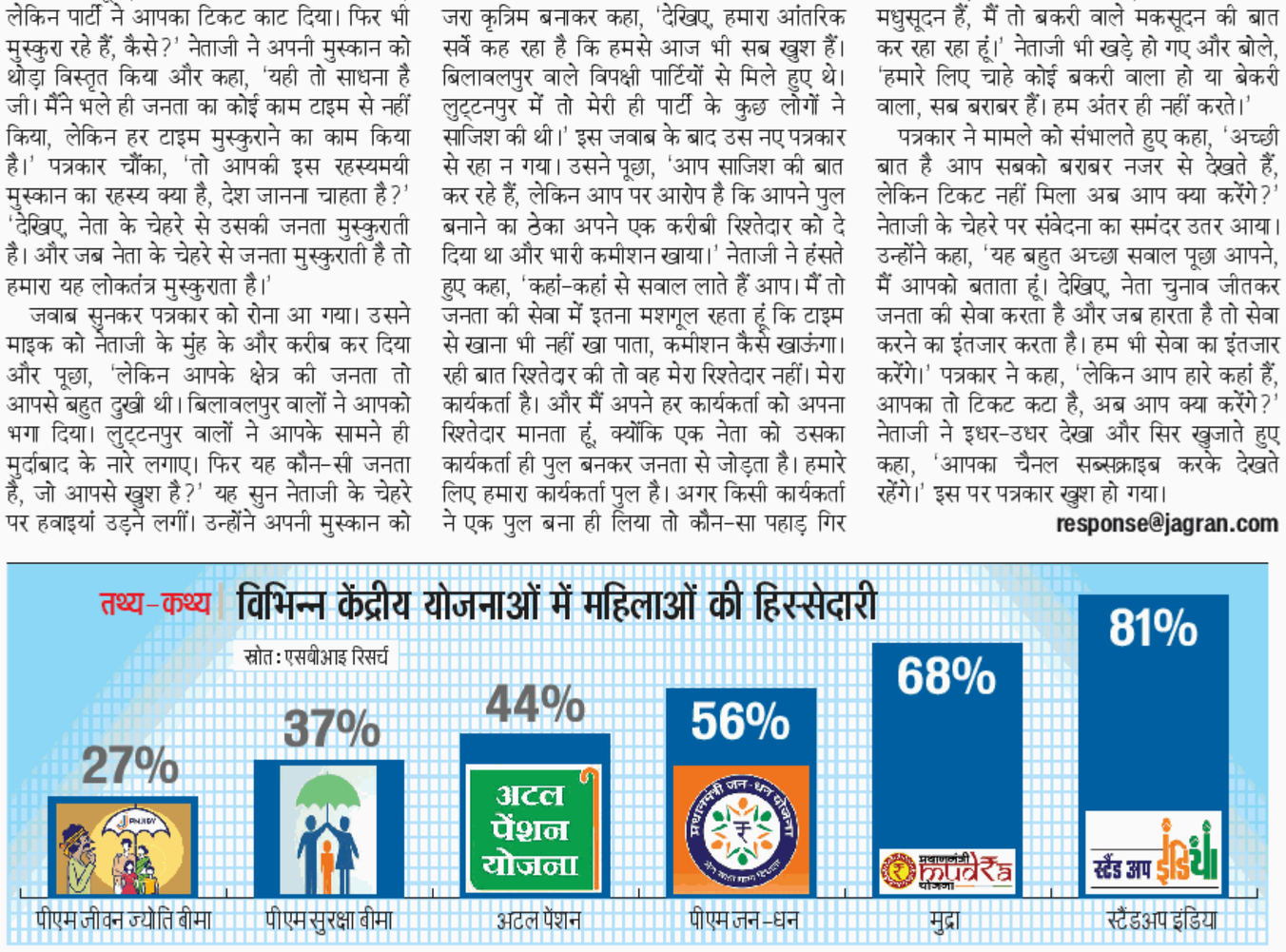


ऊर्जा

## अच्छी नींद

सुबह तरोताजा जगने के लिए रात्रि की निद्रा प्रकृति का अनुपम उपहार है। शरीर और मन को उचित विश्राम नहीं मिलेगा तो व्यक्ति की आगामी गतिविधियां भलीभांति संपन्न करने के लिए स्फूर्ति न मिलेगी, अस्वस्थ होने के आसार बढ़ेंगे। समस्त प्राणियों में मनुष्य ही दैनंदिन ऊर्जावान, जीवंत और स्वस्थ रखती निद्रा से सायास स्वयं को वंचित करता है। उचित नींद न लेने की अस्वस्थ प्रवृत्ति से कोई वर्ग अछूता नहीं है। स्कूली छात्रों को होमवर्क का दबाव, युवाओं को बेहतर करियर की बेसब्री, वयोवृद्धों को संतानों की शिक्षा, आजीविका, उनके विवाह आदि की भी चिंता नींद उड़ा देती है। इंटरनेट बहुतेरों की नींद हर रहा है। दूसरे का हथियाने वाला बेहतर खा सकता है, लेकिन अच्छी नींद देने वाले को ही आती है। मन उधेड़बुन में रहेगा तो नींद दुष्कर होगी। उचित विश्राम के बाद बहुधा समाधान प्रकट हो जाता है।

सामान्यतः रात्रि के लगभग दस बजे से छह-सात घंटे की नींद सर्वोत्तम मानी गई है। जिन्हें नींद नहीं आती उनके लिए सलाह है कि वे बिस्तर छोड़ कर काम में लग जाएं। जान लें कि वे अनिद्रा से नहीं, बल्कि चिंता के रोग से पीड़ित हैं। मनमंदिर में कोई बड़ा, स्पष्ट उद्देश्य प्रतिष्ठित होगा तो उस दिशा में निरंतर अग्रसर, कर्मशील रहेंगे, सार्थकता और संतुष्टि का भाव रहेगा और नींद अच्छी आएगी। जितना अहम एक बड़े उद्देश्य को साधना है उतना ही आवश्यक शरीर एवं मन को विश्राम देना है, ताकि दैनंदिन नई ऊर्जा मिलती रहे। गहरी नींद और खुला संवाद स्वास्थ्य के आधार हैं।

मन में जितना प्रेम और मेलजोल का भाव होगा तो विकार कम आएंगे, चिंताओं-समस्याओं से मुक्त रहेंगे और नींद अच्छी आएगी। जिस प्रकार भलाई में बिताया गया दिन खुशनुमा नींद लाता है, उसी प्रकार परहित और सत्कार्यों में बिताते व्यक्ति का अंतकाल शांतिप्रद और तृप्तिदाई होगा।

हरीश बड़थ्वाल

# शरीर पर व्यायाम का प्रभाव

मुकुल व्यास

**विज्ञानियों ने पता लगाया है कि शारीरिक गतिविधियों के कारण सभी अंगों में कई तरह के कोशिकीय और आणविक परिवर्तन होते हैं**

व्यायाम के फायदे सर्वविदित हैं, लेकिन नए शोध से पता चलता है कि व्यायाम के कारण शरीर के भीतर होने वाली प्रतिक्रिया कहीं ज्यादा दूरगामी होती है। अमेरिका के विज्ञानियों ने नए अध्ययन में पता लगाया है कि शारीरिक गतिविधियों के कारण जानवरों के सभी 19 अंगों में कई तरह के कोशिकीय और आणविक परिवर्तन होते हैं। व्यायाम कई बीमारियों के खतरे को कम करता है, लेकिन विज्ञानी अभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं कि व्यायाम शरीर को आणविक स्तर पर कैसे बदलता है। अधिकांश पिछले अध्ययनों ने एक ही अंग या लिंग पर ध्यान केंद्रित किया।

व्यायाम के जीव विज्ञान पर अधिक व्यापक नजर डालने के लिए अमेरिका के विज्ञानियों ने चूहों में शारीरिक गतिविधि से होने वाले आणविक परिवर्तनों का विश्लेषण करने के लिए प्रयोगशाला में तकनीकों की एक शृंखला का उपयोग किया। ये चूहे कई हफ्तों तक गहन व्यायाम के दौर से गुजरे थे। विज्ञानियों ने उनके हृदय, मस्तिष्क और फेफड़े का अध्ययन किया। उन्होंने देखा कि प्रत्येक अंग व्यायाम के साथ बदल गया। इससे शरीर को प्रतिरक्षा प्रणाली को विनियमित करने और तनाव का जवाब देने में मदद मिली। व्यायाम लीवर, हृदय रोग और ऊतक की चोट से जुड़े मार्गों को नियंत्रित करने में भी मददगार साबित हुआ। विज्ञानियों द्वारा एकत्र डाटा से मानव स्वास्थ्य की अलग-अलग स्थितियों के बारे में महत्वपूर्ण सुराग मिल सकते हैं। उदाहरण के लिए व्यायाम के दौरान लीवर कम फैटी क्यों हो जाता है? इससे फैटी लीवर के लिए नए उपचार के विकास में मदद मिल सकती है। टीम को उम्मीद है कि उनके निष्कर्षों का उपयोग एक दिन किसी व्यक्ति की स्वास्थ्य स्थिति के अनुरूप व्यायाम निर्धारित करने या व्यायाम करने में असमर्थ लोगों के लिए शारीरिक गतिविधि के प्रभावों की नकल करने वाले उपचार विकसित करने के लिए किया जा सकता है।

विज्ञानियों ने रक्त और 18 ठोस ऊतकों पर लगभग 1.5 करोड़ माप लेने के लिए लगभग 10,000 परीक्षण किए। उन्होंने पाया कि व्यायाम ने हजारों अणुओं को प्रभावित किया। एड्रिनल ग्रंथि में सबसे चरम परिवर्तन देखे गए। ध्यान रहे कि यह ग्रंथि कुछ खास हार्मोन का उत्पादन करती है, जो प्रतिरक्षा, मेटाबोलिज्म और ब्लड प्रेशर जैसी कई महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं को नियंत्रित करते हैं। शोधकर्ताओं ने कई अंगों में प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया से संबंधित लिंग अंतर को भी उजागर किया। मादाओं के मामले में इम्यून रिस्पांस का संकेत देने वाले अणुओं ने एक और दो सप्ताह के प्रशिक्षण के बीच स्तर में परिवर्तन दिखाया, जबकि नर में चार और आठ सप्ताह के बीच अंतर देखा गया।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

## दार्जिलिंग मिस्ट्री

पूर्व विदेश सचिव हर्ष श्रृंगला को पूरी उम्मीद थी कि उन्हें दार्जिलिंग से चुनाव लड़ने का टिकट भाजपा से मिल ही जाएगा। पिछले छह महीने से वह दार्जिलिंग में ही आफिस बना कर चुनाव प्रचार में जुटे हुए थे, लेकिन कूटनीति के इस पुराने खिलाड़ी को राजनीति के पिच का अंदाजा नहीं था। यहां अंतिम पलों में दांव पलट जाते हैं। वादा करने के बावजूद उन्हें टिकट नहीं मिला। कहने की जरूरत नहीं कि हर्ष श्रृंगला काफी निराश होंगे, लेकिन उनसे भी ज्यादा निराश दिल्ली में बैठे उनके कुछ शुभचिंतक होंगे, जो उनके लिए चुनाव प्रचार करने दार्जिलिंग जाने की तैयारी में थे। उनमें से कुछ कूटनीति की दुनिया के पुराने धुरंधर खिलाड़ी भी हैं, जो हर्ष श्रृंगला को भावी सरकार में मंत्री बनते हुए देख रहे थे। बहरहाल अब ये मित्रजन उनको फोन कर ढांढस बंधा रहे हैं।

## ये कैसी आंख-नाक

अमेठी-रायबरेली से गांधी परिवार की उम्मीदवारी को लेकर अंतिम दिन तक रहा सस्पेंस अब भले ही दूर हो गया हो। मगर इन दोनों सीटों पर निर्णय की भनक आखिरी समय तक जिस तरह पार्टी के करीबी लोगों तक को नहीं मिली, उसे लेकर कांग्रेस के अंदरूनी गलियारे में चटकारे लेकर चर्चा की जा रही है। खासकर उन नेताओं की दस जनपथ से निकटता पर तंज कसा जा रहा, जो अंतिम क्षण तक यही दावा करते रहे कि राहुल गांधी अमेठी से तो प्रियंका गांधी वाड्रा रायबरेली से चुनाव लड़ेंगी। चूंकि उन नेताओं का नेतृत्व से लगभग रोजाना रूबरू होने का वास्ता है, ऐसे में उनकी बातों को खारिज करना मुश्किल था, पर जब नामांकन के आखिरी दिन सुबह पौने आठ बजे औपचारिक घोषणा हुई तो उनके दावे ध्वस्त हो गए। अब पार्टी के बाहरी सर्किल के नेता उन नेताओं पर तंज मारने का मौका नहीं छोड़ रहे कि वे हाईकमान की कैसी आंख-नाक हैं, जिन्हें उनके सबसे अहम निर्णयों की भनक तक नहीं लगी।

## खापों की सियासत

जब भी कोई नेता चुनावी परेशानी में होता है तो उसे अपने समुदाय की खूब याद आती है। खापों के दखल ने कई बार राजनीतिक समीकरणों को बदला है, लेकिन राजनीति में कब कोई गणित उल्टी पड़ जाए, कहा नहीं जा सकता। पश्चिमी उत्तर प्रदेश से जुड़े राष्ट्रीय स्तर के एक मौजूदा नेता अपनी चुनावी मुश्किलों के निवारण के लिए कई बार खाप की शरण में गए। मगर इस बार हुआ यह कि जवाब में दूसरे प्रभावशाली समुदाय का खाप भी मैदान में उतर गया। राजपूतों के अपमान पर उठे विवाद में इससे जुड़े सामुदायिक संगठनों की सक्रियता इन दिनों तेज है। राजस्थान के एक संगठन ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कई इलाकों में भी अपना ढांचा तैयार कर लिया है। एक समुदाय के जवाब में दूसरे वर्ग के खाप की इस सक्रियता ने भी पश्चिमी उत्तर प्रदेश के चुनावी रोमांच को बढ़ाने में अपनी भूमिका निभाई है।

## तोल-मोल के बोल

'तोल मोल के बोल' की मर्यादा यूं तो नेताओं के लिए हमेशा जरूरी है, लेकिन जब चुनाव चल रहे हों तो यह हिदायत आचार संहिता से कम नहीं है। भीषण गर्मी के मौसम में चुनावी ताप ऐसा बढ़ा है कि जुबान का 'सेफ्टी वाल्व' पिघल गया है और बोल बवाल या फजीहत करा दे रहे हैं। इन दिनों संविधान में बदलाव के मुद्दे को विपक्ष खूब तूल देने में जुटा है। भाजपा नेतृत्व बार-बार स्पष्ट कर रहा है कि ऐसा कुछ नहीं होने जा रहा, लेकिन इधर-उधर से कोई न कोई बेमेल तान छेड़ ही देता है। गत दिवस पार्टी के एक वरिष्ठ पदाधिकारी ऐसा ही कुछ बोल गए, जिसे जैसे-तैसे दूसरे नेताओं ने रफू किया। इसी तरह सपा मुखिया के चाचा शिवपाल यादव ने मंच से भाजपा को जिताने की अपील कर डाली। यह जुबान की फिसलन थी, लेकिन विरोधी लपकने में न चूके।

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए; नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग,रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।

********

उस्तरा



बेढब बनारसी

फुटकर

वस्ल की भी रात कैसी रात है,
मैं हूं, बिस्तर हैं व उनकी लात हैं।
हमारी प्रेमिका की देखने में उम्र छोटी है,
मगर लड़ती हैं ऐसे वह गोया कैरम की गोटी है।
जो जग में जर चाहियतु, जाए कचहरी बैठ,
पीछे हाथ पसारि के धीरे-धीरे ऐंठ।
सारद-बारद से लसे, नील बरन आकाश,
मानहुं भारत देश में अंगरेजन को बास।
'बेढब' या संसार में कबहुं न मिलिए धाय,
का जाने केहि भेष में सीआईडी मिल जाए।



## चूरण

मुर्गियों के फार्म में एक बार
जांच के लिए इंस्पेक्टर आया...
इंस्पेक्टर : तुम मुर्गियों को क्या खिलाते हो?
पहला मालिक : बाजरा
इंस्पेक्टर : खराब खाना, इसे गिरफ्तार कर लो!
दूसरा मालिक : चावल
इंस्पेक्टर : गलत खाना, इसे भी गिरफ्तार कर लो!
अब गोलू की बारी आई,
उसने डरते-डरते कहा,
"हम तो जी, मुर्गियों को ही 5-5 रुपये दे देते हैं,
जो तुम्हारी मर्जी है, जाकर खा लो!"

---------

एक बार चींटी ऑटो में बैठकर कहीं जा रही थी,
थोड़ी देर बाद उसने अपना एक पैर
ऑटो से बाहर निकाल लिया...
ऑटो वाला बोला, "मैडम, पैर अंदर कर लो!"
चींटी ने जवाब दिया, "तुम चुप करो,
मुझे हाथी को लात मारनी है,
उसने कल मुझे आंख मारी थी!"

---------

कहते हैं,
जहां आदमी को एक बार धोखा मिले,
वहां कभी दोबारा नहीं जाना चाहिए,
पर क्या करें भाई,
ससुराल तो जाना ही पड़ता है!

amarujala.com

Sunday हास्यरंजनी

काश ! गूगल मेरा दोस्त होता, हम दोनों मिलकर पेपर देते और टॉप करते।

*इधर, लोकसभा के चुनाव में उम्मीदवार जिस तरह अपनी संपत्ति की घोषणा कर रहे हैं, उसे देखकर कलेजा मुंह को आ रहा है। ऐसी मासूमियत देखकर गालिब याद आते हैं। लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं।*

# इस मासूमियत के क्या कहने !

मासूमियत दो तरह की होती है। एक जो प्रकृति ने जन्म से आपको दी है। यह निश्छल और निष्प्रयोजन किस्म की होती है। दूसरी ओढ़ी हुई मासूमियत, जो अक्सर नकली साधुओं, फिल्मी कलाकारों, नेताओं और कुछ साहित्यकारों में पाई जाती है। मंच पर आपकी बखिया उधेड़ी जा रही है और आप ऐसे मासूम बने बैठे हैं, जैसे किसी और की बखिया उधेड़ी जा रही हो! यह मासूमियत बड़े अभ्यास के बाद आती है।



अरविंद तिवारी

जो प्रकृति प्रदत्त मासूमियत है, वह वंदनीय होती है, बाकी निंदनीय। प्रकृति वाली मासूमियत लोगों को खूब भाती है। अगर आप घर पर हाथ की चक्की से आटा पिसवा कर खाने का दावा कर रहे हैं तो यह ओढ़ी हुई मासूमियत है। इस मशीनी युग में यह संभव नहीं लगता। प्रकृति प्रदत्त मासूमियत हमने खूब देखी है। एक ऐसे भामाशाह ने हमारे सामने गांव के स्कूल के लिए बीस लाख रुपये दान कर दिए, जिसके पैरों में चप्पल तक नहीं थी। अपनी पूरी पूंजी दान करने वाले ने उसमें से जूतों लायक पैसे भी अपने पास नहीं रखे।

इधर, लोकसभा के चुनाव में उम्मीदवार जिस तरह अपनी संपत्ति की घोषणा कर रहे हैं, उसे देखकर कलेजा मुंह को आ रहा है। ऐसी मासूमियत देखकर गालिब याद आते हैं। लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं। महिला उम्मीदवार घोषित करती है, उसके पास रहने के लिए अपना कोई मकान नहीं है। पति के पास दो करोड़ का मकान जरूर है। मोहतरमा आप उसी मकान में रह सकती थीं। वह भी आपका ही है। एक उम्मीदवार ने घोषित किया, उसके पास तीस साल पुरानी टाटा सूमो गाड़ी है, जिसे नियमानुसार वह चला नहीं सकता। अरे भाई, उसे किसी कबाड़ी को बेच देते तो आपका बैंक बैलेंस थोड़ा बढ़ जाता। एक अन्य उम्मीदवार ने घोषित किया, उसके पास चार पहिये की गाड़ी नहीं है, परंतु बैंक में अस्सी लाख रुपये पड़े हैं। यह तो पाखंड है। आप बारह लाख की एक सस्ती कार खरीद लेते। उधर, एक उम्मीदवार ने घोषणा की कि उसके पास नकद सिर्फ दो हजार हैं, जबकि बैंक में करोड़ों रुपये हैं। अरे भैया, बैंक से निकाल क्यों नहीं लेते। डिजिटल पेमेंट हर जगह नहीं चलता। चुनाव में तो जेब भरी होनी चाहिए।

मासूमियत की इंतहा तब हो गई, जब एक उम्मीदवार ने घोषित किया कि उसके पास बीस साल पुरानी मारुति एट हंड्रेड कार के अलावा एक स्कूटी भी है। बैंक में सिर्फ बीस हजार रुपये हैं। एक टूटा-फूटा पैतृक मकान भी है। दो तोला सोना भी है। अरे भाई, इतनी रकम से आप सरपंच का चुनाव भी नहीं जीत सकते और आप लोकसभा के चुनाव में खड़े हो गए! जमानत की राशि से मकान की मरम्मत ही करवा लेते। आपके पुरखे खुश हो जाते। पुरखों ने कभी नहीं कहा, आप कोई चुनाव लड़ें। आपका मुकाबला अन्य प्रत्याशियों के साथ नोटा से भी तो है। आपकी इस सादगी की भविष्य में मिसाल दी जाएगी। एक प्रत्याशी ने घोषित किया कि उसके पास चार लाख रुपये ही बैंक में हैं और चार करोड़ के शेयर। कमाल करते हैं, जनाब! अभी शेयर बाजार में जितनी तेजी है, पहले कभी नहीं देखी गई थी। कुछ शेयर बेच क्यों नहीं देते। आप कैसे चुनाव लड़ेंगे, यह सोचकर मतदाता हलकान हैं। एक उम्मीदवार ने घोषित किया है कि उसके पास फॉरचुनर सिग्मा कार के अलावा दो ऑडी कार भी हैं। एक विदेशी कार की बुकिंग करवा रखी है, पर एक मकान के अलावा कोई संपत्ति नहीं है। अरे भाई, आपको महंगी गाड़ियों का शौक है तो चुनाव क्यों लड़ रहे हैं। महंगे शौक के साथ सस्ती राजनीति नहीं चल सकती।



बात-बेबात

चुनाव लड़ने का शौक आपको कहीं का नहीं छोड़ेगा। हो सकता है, आपका मकान बिक जाए। चुनाव में चमचे आपकी महंगी गाड़ियों का कचूमर निकाल देंगे।

चुनाव प्रचार के लिए कई प्रत्याशियों ने अपनी मासूमियत के नए रिकॉर्ड बनाए हैं। कोई सुबह घूमने के बहाने मतदाताओं के बीच पहुंच रहा है तो कोई जॉगिंग करने के बहाने। लोग हैरत से उन्हें देख रहे हैं। पूछने पर बताते हैं, पैदल आपको पहली बार देखा है। आपकी गाड़ी रोज दिखाई देती थी। मतदाता चाहता है, चुनाव लड़ने वाला पैदल हो जाए! इसे कृपया मुहावरे में न लें। कोई मजदूरों के साथ गेहूं की फसल काटने का वीडियो बनवा रहा है तो कोई ईंटें ढोने का। मगर पांच मिनट से ज्यादा का वीडियो बनाना नेता जी के बूते की बात नहीं। उधर, नेताओं की सुविधा के लिए सोशल मीडिया भी पांच मिनट का वीडियो ही पसंद करता है। नेता और सोशल मीडिया की यह मासूमियत काबिले-गौर है। इसी मासूमियत के लिए चचा गालिब ने कहा है- 'बेखुद बेसबब नहीं है गालिब, कुछ तो है जिसकी पर्दा-दारी है।'

# चाटुकारिता भी एक कला है

*कविता कला पर जब प्राचीन ग्रंथ मिलते हैं तो चाटुकारिता कला पर एक भी प्रामाणिक ग्रंथ क्यों नहीं मिलता?*

**खुशामद** के अनेक रूप हैं और इसके द्वारा बड़े-बड़े कठिन कार्य भी सरल हो जाते हैं। इसने अब एक 'कला' का रूप ग्रहण कर लिया है और सभ्य समाज में अब इसका विशेष प्रचलन है। परंतु इस कला से अनभिज्ञ व्यक्ति यदि इसका प्रयोग करे तो संकट में फंस सकता है।

बरसाने लाल चतुर्वेदी

चाटुकारिता का अर्थ है खुशामद। इस अद्वितीय कला को हम और भी नामों से पुकारते हैं, जैसे चापलूसी, चिलम भरना, चमचागिरी, मक्खनबाजी आदि।

इस कला का जन्म कब हुआ, इसकी निश्चित तारीख नहीं बताई जा सकती, परंतु यह अधिकारपूर्वक कहा जा सकता है कि यह एक प्राचीन कला है। आप पूछना चाहेंगे कि साहित्य कला, कविता कला, शिल्प कला इत्यादि पर जब प्राचीन ग्रंथ मिलते हैं तो चाटुकारिता कला पर एक भी प्रामाणिक ग्रंथ क्यों नहीं मिलता? दरअसल, इस कला की यही विशेषता है। यह सर्वथा गुप्त कला है। प्राचीन चाटुकार जो इस कला के पारखी थे, उन्होंने इसे गुप्त ही रखा। वे नहीं चाहते थे कि इस महान कला का प्रचार अनधिकारी व्यक्तियों में हो, जिससे इसका महत्व कम हो जाए। उनकी इतनी दूरदर्शिता के होते हुए भी इस कला ने इतनी उन्नति की कि खुशामद कला के पारंगतों की संख्या जितनी आज है, उतनी पहले कभी नहीं थी। क्या किसी भी कला के लिए यह कम गौरव की बात है?

*कवियों तथा शास्त्रकारों ने इस कला की हृदय से प्रशंसा की है। खुशामद करने वाला क्या नहीं कर सकता, उसके लिए क्या कठिन है?*

इधर-उधर से

चाटुकारिता हवा की तरह है, हवा चलती रहती है, पर उसका प्रत्यक्ष रूप नहीं होता। ठीक उसी प्रकार खुशामद होती रहती है, परंतु दिखलाई नहीं देती। खुशामद करने वाला यह नहीं कहता कि खुशामद कर रहा है। जिसकी खुशामद की जा रही है, वह समझते हुए भी यह नहीं कहता कि उसकी खुशामद की जा रही है और वही जी खुशामद करा रहा है, तीसरे की खुशामद करने वाला बन जाता है। खुशामद का यह पहिया दिन-रात घूमता रहता है, बिना रुके, बिना ठहरे। ('मिस्टर चोखेलाल' से)

आड़े-तिरछे

रेखांकन : दुर्गादत्त पांडेय




# Job Alert

Real-time job alerts
amarujala.com/jobs

## UPSSSC ने जारी किया विज्ञापन

सहायक विकास अधिकारी व अवर अभियंता आदि के पद खाली



2847 पद

आवेदन की अंतिम तिथि : 07 जून, 2024
योग्यताएं : 10वीं, इंजीनियरिंग में डिप्लोमा व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें : http://upsssc.gov.in

## NIT, दुर्गापुर में नौकरी के मौके ■ 43 पद

असिस्टेंट प्रोफेसर, प्रोफेसर व अन्य पदों पर भर्ती

आवेदन की अंतिम तिथि
11 जून, 2024
वेतनमान
रुपये 52,00 से लेकर रुपये 34,800 प्रतिमाह
यहां आवेदन करें
https://nitdgp.ac.in

## SAIL में आवेदन आमंत्रित ■ 55 पद

मैनेजर, डिप्टी मैनेजर व अन्य पदों पर मौके

आवेदन की अंतिम तिथि
18 मई, 2024
योग्यताएं
बीई, बीटेक एवं अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें
www.sailcareers.com

## BCAS में रोजगार के अवसर ■ 108 पद

संयुक्त निदेशक, सहायक निदेशक व अन्य पदों पर रिक्तियां

आवेदन की अंतिम तिथि : 03 जुलाई, 2024
आयु-सीमा : पद के अनुसार अधिकतम उम्र 52 व 56 वर्ष निर्धारित
यहां आवेदन करें : https://bcasindia.gov.in

## DRDO में योग्य अभ्यर्थी करें आवेदन ■ 20 पद

जूनियर रिसर्च फेलो के विभिन्न पदों पर करें अप्लाई

आवेदन की अंतिम तिथि
31 मई, 2024
योग्यताएं
बीई, बीटेक व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें
www.drdo.gov.in

## पावरग्रिड में नौकरी के मौके ■ 12 पद

कंपनी सचिव के विभिन्न पदों पर संभावनाएं

आवेदन की अंतिम तिथि
11 मई, 2024
वेतनमान
रुपये 30,000 से लेकर रुपये 1,20,000 तक प्रतिमाह
यहां आवेदन करें
www.powergrid.in

### योग्य अभ्यर्थी करें आवेदन ...

- राष्ट्रीय परीक्षण शाला : युवा पेशेवरों के कई पदों पर आवेदन आमंत्रित।
  आवेदन की अंतिम तिथि : 18 मई, 2024
  ■www.nth.gov.in
- राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण : सहायक सलाहकार का पद खाली।
  आवेदन की अंतिम तिथि : 24 मई, 2024 तक आवेदन करें ■https://ndma.gov.in

अपनी प्रतिक्रियाओं और सुझावों के लिए हमें udaan@amarujala.com पर ई-मेल करें।

## SCHOLARSHIP ALERT

### 9वीं से 12वीं की छात्राओं के लिए स्कॉलरशिप

**ओमरोन** हेल्थकेयर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड की ओर से छात्राओं के लिए ओमरोन हेल्थकेयर स्कॉलरशिप 2024-25 की शुरुआत की गई है। यह स्कॉलरशिप मान्यता प्राप्त संस्थान में पढ़ने वाली 9वीं से 12वीं की छात्राओं के लिए आरंभ की गई है। स्कॉलरशिप प्रोग्राम में आवेदन करने के लिए आवश्यक है कि आवेदकों ने पिछले शैक्षणिक वर्ष में न्यूनतम 75% अंक प्राप्त किए हों। इस स्कॉलरशिप के लिए पूरे भारत की छात्राएं आवेदन की पात्र हैं। ओमरोन हेल्थकेयर स्कॉलरशिप प्रोग्राम के तहत आवेदकों की पारिवारिक वार्षिक आय 8,00,000 रुपये से कम होनी चाहिए। स्कॉलरशिप प्रोग्राम के लिए अनाथ, दिव्यांग और सिंगल पेरेंट्स चाइल्ड छात्राओं को प्राथमिकता दी जाएगी। आवेदकों का चयन शैक्षणिक योग्यता, वित्तीय पृष्ठभूमि और टेलिफोनिक इंटरव्यू के आधार पर किया जाएगा। चयनित छात्राओं को 20,000 रुपये की स्कॉलरशिप प्रदान की जाएगी। आवेदकों के पास पिछली कक्षा के प्रमाण-पत्र, एडमिशन लेटर, आय प्रमाण-पत्र व अन्य निर्धारित दस्तावेज होने चाहिए। स्कॉलरशिप के लिए आवेदन ऑनलाइन माध्यम से स्वीकार किए जाएंगे।

- **आवेदन की अंतिम तिथि :** 31 मई, 2024
- **आवेदन लिंक :** https://tinyurl.com/spd2c5ys

### विदेश में पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति

**ऑक्सफोर्ड** और कैंब्रिज सोसाइटी ऑफ इंडिया की ओर से ऑक्सफोर्ड और कैंब्रिज विश्वविद्यालयों में स्नातक और शोध करने वाले भारतीय छात्रों के लिए ऑक्सफोर्ड और कैंब्रिज सोसाइटी ऑफ इंडिया स्कॉलरशिप (ओसीएसआई)-2024 की शुरुआत गई है। स्कॉलरशिप प्रोग्राम में आवेदन करने के लिए छात्र को भारत का नागरिक होना चाहिए। आवेदकों की आयु 30 वर्ष से कम होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त आवेदक भारत के किसी मान्यता प्राप्त संस्थान से स्नातक होना चाहिए। आवेदकों का चयन उनकी प्रेजेंटेशन स्किल्स, समाज पर उनका प्रभाव व अन्य शैक्षणिक गतिविधियों के आधार पर किया जाएगा। स्कॉलरशिप प्रोग्राम के अंतर्गत चयनित छात्रों को तीन भागों में स्कॉलरशिप प्रदान की जाएगी। ओसीएसआई केके लूथरा मेमोरियल स्कॉलरशिप के तहत 3,00,000 रुपये की स्कॉलरशिप, ओसीएसआई अनिता बनर्जी मेमोरियल स्कॉलरशिप और ओसीएसआई निर्मल लूथरा मेमोरियल स्कॉलरशिप के तहत 4,00,000 रुपये की स्कॉलरशिप प्रदान की जाएगी। स्कॉलरशिप हेतु छात्र ऑनलाइन माध्यम में आवेदन कर सकते हैं।

- **आवेदन की अंतिम तिथि :** 31 मई, 2024
- **आवेदन लिंक :** https://tinyurl.com/2c3ur25z

### छात्राओं के लिए स्कॉलरशिप पाने का अवसर

**न्यूटैनिक्स** और एक अमेरिकन क्लाउड कंप्यूटिंग कंपनी की ओर से छात्राओं के लिए न्यूटैनिक्स हर्ट वुमेन इन टेक्नोलॉजी स्कॉलरशिप-2024 की शुरुआत की गई है। इस स्कॉलरशिप के लिए केवल छात्राएं ही आवेदन की पात्र हैं। स्कॉलरशिप प्रोग्राम में आवेदन करने के लिए छात्राएं किसी मान्यता प्राप्त संस्थान से शैक्षणिक वर्ष 2024-2025 में सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, कंप्यूटर साइंस विषय से स्नातक कर रही हों। आवेदक को भारत या किसी अन्य देश जैसे अमेरिका, मैक्सिको, ऑस्ट्रेलिया, यूके, फ्रांस, सर्बिया, नीदरलैंड और स्पेन के किसी संस्थान में नामांकित होना चाहिए। आवेदकों का चयन पात्रता मानदंड के आधार पर किया जाएगा। स्कॉलरशिप प्रोग्राम के अंतर्गत चयनित छात्राओं को 2,000 अमेरिकी डॉलर प्रदान किए जाएंगे। न्यूटैनिक्स हर्ट वुमेन इन टेक्नोलॉजी स्कॉलरशिप-2024 के तहत मिलने वाली इस स्कॉलरशिप के लिए आवेदकों से आवेदन ऑनलाइन माध्यम में स्वीकार किए जाएंगे।

- **आवेदन की अंतिम तिथि :** 31 मई, 2024
- **आवेदन लिंक :** https://tinyurl.com/3m5tzxrv

## आज का दिन

05 मई, 1949

यूरोपीय काउंसिल की स्थापना हुई थी। यह संगठन यूरोपीय एकीकरण के लिए काम करने वाला पहला संगठन था। इसके 47 सदस्य देश हैं। यह यूरोपीय संघ (ईयू) से पूरी तरह से अलग इकाई है।




- 1916 : भारत के पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह का जन्म हुआ था।
- 1956 : हिंदी फिल्मों के प्रसिद्ध निर्माता-निर्देशक गुलशन कुमार का जन्म हुआ था।
- 2006 : फिल्म संगीतकार नौशाद अली का निधन हुआ था।
- 2017 : इसरो ने साउथ एशिया सैटेलाइट को सफलतापूर्वक लॉन्च किया था।

## व्रत त्योहार

आज : वैशाख कृष्ण पक्ष द्वादशी। कल : पंचक समाप्त 17.42 बजे, ग्रीष्म ऋतु, सूर्य उत्तरायणे, उत्तर गोले।
राहुकाल : प्रातः 07.30 से 09.00 तक।

## कल का पंचांग

सूर्योदय : 05.40
सूर्यास्त : 18.55
(भारतीय मानक समयानुसार)

विक्रमी संवत 2081, 16 वैशाख मास शाके 1946, वैशाख मास 24 प्रविष्टे, 26 सव्वाल हिजरी 1445, वैशाख कृष्ण पक्ष त्रयोदशी 14.40 तक उपरांत चतुर्दशी, रेवती नक्षत्र 17.42 तक उपरांत अश्विनी नक्षत्र, प्रीति योग 24.27 तक उपरांत आयुष्मान योग, वणिज करण 14.40 तक उपरांत विष्टि (भद्रा) करण, चंद्रमा मेष राशि में 17.42 बजे।

amarujala.com/astrology

## राशिफल

■ पं. विनोद त्यागी

**मेष :** स्वास्थ्य प्रतिकूल रहेगा। नौकरी में तबादला संभव है। आर्थिक दबाव बना रहेगा। व्यवसाय में लाभ कम होगा।

**वृष :** धैर्य बनाए रखें। अटके कार्य बनेंगे। भूमि भवन पर व्यय संभव है। पुराने मित्र से भेंट हो सकती है।

**मिथुन :** पूर्वनियोजित कार्य में व्यस्त रहेंगे। कार्यक्षेत्र में सम्मान बढ़ सकता है। व्यवसाय में विस्तार होगा।

**कर्क :** व्यक्तिगत संबंध सहायक रहेंगे। किसी परेशानी का हल मिल सकता है। व्यवसाय में धन लाभ होगा।

**सिंह :** दिनमान प्रतिकूल रहेगा। वाद-विवाद से दूरी बनाए रखें। व्यावसायिक लेन-देन में सावधानी बरतें।

**कन्या :** इष्ट मित्रों का सहयोग मिलेगा। आय के नए साधन बनेंगे। आजीविका प्राप्ति हो सकती है।

**तुला :** नई नौकरी प्राप्ति संभव है। किसी समस्या का निदान होगा। व्यवसाय में लाभ होगा। स्वास्थ्य में सुधार आएगा।

**वृश्चिक :** मन अशांत रहेगा। बनते कार्य में परेशानी होगी। व्यवसाय में लाभ होगा। सुख साधनों पर व्यय संभव है।

**धनु :** स्वश्रम और विवेक से योजना सफल होगी। संतान से सुख मिलेगा। व्यवसाय में लाभ होगा। स्वास्थ्य प्रतिकूल रहेगा।

**मकर :** मानसिक तनाव में कमी आएगी। विकास का नया मार्ग मिल सकता है। सहोदरों की चिंता बनी रहेगी।

**कुंभ :** घरेलू साज-सज्जा में व्यस्त रहेंगे। व्यवसाय के प्रति चिंता बनी रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। मन अशांत रहेगा।

**मीन :** समाज में सम्मान बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति से संतुष्ट रहेंगे। व्यवसाय में अचानक लाभ संभव है।

## जन्मदिन

विशाखा सिंह, अभिनेत्री



आज जन्मे जातक बुद्धिमान, तार्किक और गहन विश्लेषक होते हैं। 23वें या 32वें वर्ष में लक्ष्य प्राप्ति में सफल होते हैं। इस वर्ष भाग्य अनुकूल रहेगा। आध्यात्मिक क्षेत्र में रुचि बढ़ेगी। चली आ रही परेशानियों से मुक्ति मिलेगी। भू-संपत्ति के अटके कार्य पूर्ण होंगे। विरोधी परास्त होंगे। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

## सुडोकू

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | | 3 | | 9 | | | 6 | |
| | 4 | 2 | 5 | | 8 | | 1 | 9 |
| 8 | 5 | | 3 | | | | 7 | |
| | 6 | 8 | | | | | 5 | |
| | | 5 | | | | 7 | | |
| | 2 | | | | | 9 | 8 | |
| | 8 | | | | 4 | | 9 | 5 |
| 9 | 3 | | 6 | | 1 | 8 | 2 | |
| | 7 | | | 8 | | 6 | | 4 |

सुडोकू 81 वर्गों का ग्रिड है, जो 9 वर्गों के ब्लॉक में बंटा हुआ होता है। कुछ वर्गों के अंक लिखे हैं और खाली वर्गों में 1 से लेकर 9 तक के अंक लिखने होते हैं। कोई नंबर 1 पंक्ति, कॉलम या 9 वर्ग वाले छोटे ब्लॉक में दोबारा नहीं आ सकता है।

उत्तर

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | 1 | 3 | 4 | 9 | 2 | 5 | 6 | 8 |
| 6 | 4 | 2 | 5 | 7 | 8 | 3 | 1 | 9 |
| 8 | 5 | 9 | 3 | 1 | 6 | 4 | 7 | 2 |
| 3 | 6 | 8 | 9 | 4 | 7 | 2 | 5 | 1 |
| 1 | 9 | 5 | 8 | 2 | 3 | 7 | 4 | 6 |
| 4 | 2 | 7 | 1 | 6 | 5 | 9 | 8 | 3 |
| 2 | 8 | 6 | 7 | 3 | 4 | 1 | 9 | 5 |
| 9 | 3 | 4 | 6 | 5 | 1 | 8 | 2 | 7 |
| 5 | 7 | 1 | 2 | 8 | 9 | 6 | 3 | 4 |

## डेली हेल्थ कैप्सूल

### याददाश्त तेज करने के लिए एक्सरसाइज

*बढ़ते तनाव को कम करने के लिए कुछ जरूरी व्यायामों को अपनी दिनचर्या में शामिल करें, साथ ही खानपान भी सुधारें।*

दिनचर्या में कुछ जरूरी व्यायामों को जोड़कर आप मानसिक सेहत को बेहतर बना सकते हैं। शारीरिक गतिविधि मस्तिष्क में रक्त का प्रवाह दुरुस्त करती है, न्यूरोजेनेसिस को बढ़ावा देती है और याददाश्त को बढ़ाती है। साफ-सुथरे



वातावरण में रहने से महत्वपूर्ण कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने में मदद मिलती है। मस्तिष्क को स्वस्थ बनाए रखने के लिए अपने आहार में एंटीऑक्सीडेंट, ओमेगा-3 फैटी एसिड और विटामिन से भरपूर खाद्य पदार्थों को शामिल करें। याददाश्त सुदृढ़ीकरण और संज्ञानात्मक कार्य के लिए गुणवत्तापूर्ण नींद आवश्यक है, इसलिए प्रति रात 7-9 घंटे सोने की आदत डालें। उन गतिविधियों में संलग्न रहें, जो आपके मस्तिष्क को चुनौती देती हैं, जैसे कि पहेलियां, पढ़ना या कोई नया कौशल सीखना। लगातार तनाव में रहने से याददाश्त खराब हो जाती है। तनाव कम करने के लिए ध्यान या गहरी सांस लेने जैसे आराम देने वाले अभ्यास कर सकते हैं। इनको जीवनशैली में शामिल करने से याददाश्त और क्षमताओं में वृद्धि हो सकती है, जिससे मस्तिष्क कार्य और कार्यक्षमता में सुधार होगा।

#### क्या कहते हैं विशेषज्ञ

शारीरिक गतिविधि मस्तिष्क में रक्त के प्रवाह को ठीक करती है और न्यूरोजेनेसिस के साथ याददाश्त को बढ़ाती है। एंटीऑक्सीडेंट, ओमेगा-3 फैटी एसिड और विटामिन से भरपूर खाद्य पदार्थों का सेवन करें।
-डॉ. भारती शर्मा
फिटनेस एक्सपर्ट

आपको देरी हो सकती है, लेकिन समय को नहीं।
- बेंजामिन फ्रेंकलिन

समय को हमेशा ही अनंत और निरपेक्ष माना गया है, यानी एक ऐसी डोर, जो अतीत को भविष्य से जोड़े हुए है। माना जाता है कि जो त्रिकालदर्शी हैं, वे समय की इस डोर का ओर-छोर देख सकते हैं। लेकिन आइंस्टीन कहते हैं कि दूसरी चीजों की तरह समय भी सापेक्ष है। यह गति के सापेक्ष है। जब आप ज्यादा तेज गति से चल रहे होते हैं, तब आप समय पर नियंत्रण कर रहे होते हैं। लेकिन क्या समय को समझना बस इतना ही है?

# क्या वक्त एक धोखा है

अंग्रेज तर्कशास्त्री मैक्टेगार्ट ताश के पत्तों के प्रयोग से एक तर्क गढ़ते हैं कि वक्त दरअसल कुछ है ही नहीं। यह एक भ्रम है। हालांकि उनके प्रयोग ने समय के रहस्य के समाधान के बजाय उसे और उलझा दिया है।

मैतयास मार्वेक
गिल्फोर्ड पोस्ट डॉक्टरल फेलो, सेंट एंड्रयूज यूनिवर्सिटी

हम हर चीज पर संदेह कर सकते हैं, लेकिन अपने जन्म, जीवन और मृत्यु पर संदेह नहीं कर सकते। इस यात्रा में उम्र के कई पड़ाव भी हम पार करते हैं, जिन्हें समय की समझ के बगैर नहीं समझा जा सकता। लेकिन भौतिक विज्ञानियों में यह संदेह है कि जिस तरह हम समय का अनुभव करते हैं, वह मौजूद है भी या नहीं? अल्बर्ट आइंस्टीन का सापेक्षता का सिद्धांत कहता है कि समय निरपेक्ष न होकर सापेक्ष है। इसे एक उदाहरण से समझें। दिल्ली से लखनऊ के बीच की करीब साढ़े पांच सौ किलोमीटर की दूरी अगर सौ किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से तय करें, तो हमें लखनऊ पहुंचने में साढ़े पांच घंटे लगते हैं। लेकिन अगर यही दूरी इससे ज्यादा तेज गति से तय की जाए, तो यात्रा में लगने वाला समय कम हो जाता है। जाहिर है कि आप कितनी तेजी से यात्रा कर रहे हैं, इसके आधार पर यह तेज या धीमा हो सकता है। इस आधार पर ही आधुनिक भौतिकी कहती है कि समय एक भ्रम भी हो सकता है।

### ■ वर्तमान क्षण जैसा कुछ नहीं

वैज्ञानिक लंबे समय से मानते आ रहे हैं कि समय पूर्ण और सार्वभौमिक है, जो हर किसी के लिए एक समान, हर जगह और स्वतंत्र रूप से अस्तित्व में है। आइंस्टीन के सिद्धांतों के अनुसार, ब्रह्मांड एक स्थिर, चार आयामी ब्लॉक है, जिसमें सभी देश व काल एक साथ अस्तित्व में हैं और जिसमें किसी खास वर्तमान क्षण जैसी कोई चीज नहीं है। किसी के लिए जो अतीत है, वही दूसरे के लिए भविष्य हो सकता है। इसका अर्थ यह भी है कि समय अतीत से भविष्य की ओर यात्रा नहीं करता, जैसा अमूमन समझा जाता है। भौतिक विज्ञान के विभिन्न हिस्सों में जैसे क्वांटम यांत्रिकी में समय के विचार को लेकर एक टकराव दिखता है। तो क्या वाकई समय एक भ्रम है, यह पता लगाने का एक ही तरीका है कि तर्क का उपयोग कर यह साबित किया जाए कि समय अवास्तविक है।

### ■ मैक्टेगार्ट का तर्क

1908 में, एक अंग्रेज दार्शनिक जे.एम. ई. मैक्टेगार्ट ने तर्क दिया कि हम केवल तार्किक सोच का उपयोग करके समय के भ्रम को समझ सकते हैं। मान लीजिए, किसी ने आपको ताश के पत्तों का एक बॉक्स दिया है, जिनमें से प्रत्येक कार्ड एक घटना का प्रतिनिधित्व करता है। एक पत्ता वर्ष 2024 का, दूसरा महारानी विक्टोरिया की मृत्यु का, और तीसरा 2026 में सूर्य ग्रहण को दर्शाता हो। ताश के इन पत्तों को मिला दिया गया है। आपको इन पत्तों को इस तरह से व्यवस्थित करने के लिए कहा गया है, जो समय का प्रतिनिधित्व करे। आप यह कैसे करेंगे?

### ■ पहला विकल्प बी-शृंखला

मैक्टेगार्ट इसका पहला तरीका बताते हैं, बी-शृंखला। इसमें आप पहला पत्ता चुनते हैं और उसे जमीन पर रख देते हैं। अब आप दूसरा पत्ता चुनते हैं और उसकी तुलना पहले से जमीन पर रखे पत्ते से करते हैं। अगर दूसरा पत्ता उससे पहले की घटना है, तो इसे जमीन पर रखे पत्ते के बाईं ओर रख देते हैं और अगर बाद की घटना है, तो दाईं ओर रख देते हैं। आप देखेंगे कि रानी विक्टोरिया की मृत्यु वाला पत्ता 2026 के सूर्य ग्रहण वाले पत्ते के बाईं ओर रखा जाएगा। 2024 वाला पत्ता 2026 के सूर्य ग्रहण वाले पत्ते के बाईं ओर, लेकिन रानी विक्टोरिया की मृत्यु वाले पत्ते के दाईं ओर रखा जाएगा। आप यह प्रक्रिया तब तक दोहराते रहें, जब तक कि आप एक क्रम में पत्ते न पा लें। लेकिन जब आप एक क्रम में पत्ते पा लेते हैं, तब आपको किसी कमी का एहसास होता है। अब पत्तों की पंक्ति स्थिर है, अब उनमें किसी बदलाव की जरूरत नहीं। अब आप कैसे कह सकेंगे कि समय बदलाव को दिखाता है? आखिर भौतिक विज्ञान भी तो यही कहता है कि समय बदलाव को मापने का जरिया है। कोई भी उपकरण जो समय को मापता है, वह बदलाव पर ही निर्भर होता है। जैसे घड़ी अपनी सुइयों की गति पर। याद कीजिए, आपका मूल काम पत्तों को इस क्रम में व्यवस्थित करना था, जो समय का सही ढंग से प्रतिनिधित्व करता हो। लेकिन अंत में आप वहां पहुंच गए, जो नहीं बदलता। अब इस आधार पर यह कहना कि समय नहीं बदलता, तो अजीब होगा। जाहिर है कि बी-शृंखला समय को कैप्चर नहीं करती।

### ■ ए-शृंखला की सीमाएं

एक और भी विकल्प है। आप फिर से शुरू कर सकते हैं। इसे मैक्टेगार्ट 'ए-शृंखला' कहते हैं, जिसका उपयोग करके आप फिर से ताश के पत्तों को व्यवस्थित कर सकते हैं और समय को भी समझ सकते हैं। आप पत्तों के तीन ढेर बनाएं। बाईं ओर की ढेरी अतीत में घटी घटनाओं को दर्शाती है, जैसे रानी विक्टोरिया की मृत्यु। बीच में वे घटनाएं, जो वर्तमान में घटित हो रही हैं, जैसे वर्ष 2024 और दाईं ओर, वे जो भविष्य में घटित होंगी, जैसे-2026 का सूर्य ग्रहण। बी-शृंखला के विपरीत, यह व्यवस्था स्थिर नहीं है। जैसे-जैसे समय बीतता है, आपको पत्तों को दाएं (भविष्य) से मध्य (वर्तमान) और फिर बाएं (अतीत) ढेर में लाना होगा। क्या इसका मतलब यह कि ए-शृंखला समय का वर्णन करती है? मैक्टेगार्ट के अनुसार, ए-शृंखला गोलाकार है। आपके हाथ द्वारा पत्तों को बाएं ढेर से मध्य और फिर दाएं ढेर में ले जाना एक ऐसी प्रक्रिया है, जो समय में पहले ही हो चुकी है और आप उसका अनुकरण भर कर रहे हैं। इस व्यवस्था को चलाने के लिए आपको केवल समय पर रहना होगा। लेकिन समय को पकड़ने के लिए आपको समय से पहले होना होगा।

धूप आने दो

### ■ मैक्टेगार्ट का निष्कर्ष

जाहिर है कि बी-शृंखला समय को विश्लेषित नहीं कर सकती, क्योंकि उसमें बदलाव नहीं है। ए-शृंखला भी नहीं कर सकती, क्योंकि यह बदलाव तो करती है, लेकिन यह वृत्ताकार है, जिसमें पहले चीजें समय में घटती हैं, और आप सिर्फ अनुकरण करते हैं। इस आधार पर मैक्टेगार्ट इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि समय वास्तविक नहीं है, यह एक भ्रम है।

### ■ सौ साल बाद

सौ साल से भी ज्यादा वक्त बीतने के बाद भी समय को लेकर उठा सवाल आज भी अनुत्तरित है। ए और बी शृंखलाओं की सीमाओं के बाद एक सी-शृंखला की बात की जाने लगी, जिसके सिद्धांतकार कहते हैं, पत्तों की अतीत या भविष्य जैसी कोई दिशा नहीं होती। वर्ष 2024, रानी विक्टोरिया की मृत्यु और 2026 के सूर्य ग्रहण के बीच आता है। लेकिन सी-सिद्धांत के अनुसार ऐसा कोई क्रम नहीं है, यह केवल एक मानसिक आदत है। यह दीवार पर चित्र उकेरने जैसा है। आप कितने ही चित्र उकेर लें, दीवार की अपनी कोई दिशा नहीं होती। ए, बी या सी कौन-सी शृंखला सही है, या कोई भी सही नहीं है, यह तो समय ही बताएगा। महत्वपूर्ण यह है कि मैक्टेगार्ट ने बगैर किसी वैज्ञानिक निष्कर्ष का सहारा लिए समय की समस्या के समाधान के तर्क को आगे बढ़ाने का प्रयास किया।

जानना जरूरी है
संस्कृति के पन्नों से



आशुतोष गर्ग
लेखक एवं अनुवादक

शिबि ने एक बड़ा-सा तराजू और छुरा मंगवाया। फिर उसने कबूतर को तराजू के एक पलड़े में रखा और छुरे से अपने बाएं पैर के मांस का टुकड़ा काटकर तराजू के दूसरे पलड़े में रख दिया।

# शिबि ने क्यों काटकर चढ़ाया अपना मांस



**राजा** उशीनर के पुत्र शिबि का यश दिनों-दिन बढ़ता जा रहा था। यहां तक उसके चारित्रिक गुणों की प्रशंसा का डंका ऐसा बजा कि उसकी ध्वनि देवलोक तक जा पहुंची। देवराज इंद्र को यों भी किसी की प्रशंसा सुनना पसंद नहीं था, तिस पर जब उन्होंने शिबि के विषय में सुना, तो इंद्रदेव ईर्ष्या से व्याकुल हो उठे। उन्होंने शिबि की परीक्षा लेने का निर्णय किया।

एक दिन शिबि के दरबार में एक कबूतर उड़कर आया और शिबि की गोद में छिपकर बैठ गया। शिबि कुछ समझ पाता, उससे पहले ही एक बाज भी आ घुसा और शिबि के सामने आकर बैठ गया। बाज को देखकर कबूतर डर गया। उसने शिबि से कहा, 'महाराज, मेरी रक्षा कीजिए! यह बाज मुझे खाना चाहता है।'

शिबि ने बाज से कबूतर को छोड़ देने का आग्रह किया। परंतु बाज भला हाथ में आया भोजन क्यों छोड़ता! उसने कहा, 'महाराज, किसी से भोजन छीनना अधर्म है! राजा को पक्षपात नहीं करना चाहिए।'

शिबि ने कबूतर के प्राण बचाने के लिए बाज से कहा, 'कबूतर से तुम्हारी भूख शांत नहीं होगी। मैं तुम्हें इसके बदले कोई बड़ा पशु देने को तैयार हूं।' परंतु बाज ने शिबि की बात नहीं मानी।

शिबि ने कुछ सोचकर अंतिम प्रयास किया। 'कबूतर को छोड़ दो; तुम जो चाहोगे, मैं तुम्हें दूंगा।'

बाज ने कहा, 'ठीक है। यदि आप कबूतर के वजन के बराबर अपना मांस काटकर मुझे दें, तो मैं कबूतर को छोड़ सकता हूं!'

बाज की बात सुनकर शिबि स्तब्ध रह गया। फिर भी महान शिबि ने बाज की बात मान ली। शिबि ने एक बड़ा-सा तराजू और छुरा मंगवाया। फिर उसने कबूतर को तराजू के एक पलड़े में रखा और छुरे से अपने बाएं पैर के मांस का टुकड़ा काटकर तराजू के दूसरे पलड़े में रख दिया। किंतु कबूतर का पलड़ा भारी था। शिबि ने मांस का एक और टुकड़ा काटकर तराजू पर रख दिया।

● कबूतर का पलड़ा अब भी भारी था। शिबि का चेहरा पीड़ा से लाल हो रहा था। कबूतर और बाज भी राजा शिबि को आश्चर्य से देख रहे थे।

शिबि ने फिर से छुरा उठाया और इस बार दूसरे पैर से मांस का टुकड़ा काटकर तराजू पर रख दिया। तराजू थोड़ा-सा हिला, किंतु कबूतर का वजन अब भी ज्यादा था। शिबि ने धीरे-धीरे अपने शरीर के विभिन्न स्थानों से इतना मांस काट दिया कि वह स्वयं मांस का टुकड़ा रह गया!



शिबि ने अपने क्षत-विक्षत तन को देखा। वह सोचता रहा कि शरीर के किस स्थान से मांस काटकर तराजू पर रखे। आखिर, जब शिबि के पास मांस नहीं बचा, तो वह स्वयं ही तराजू पर चढ़ गया। परंतु कबूतर का पलड़ा फिर भी भारी था!

शिबि ने बाज से कहा, 'मैं तुम्हारी शर्त पूरी नहीं कर सका, इसलिए अपनी पराजय स्वीकार करता हूं। परंतु मैं समझ गया हूं कि तुम साधारण पक्षी नहीं हो। मैं तुम्हारा असली रूप देखना चाहता हूं'

तब, कबूतर और बाज असली रूप में प्रकट हो गए। बाज के स्थान पर देवराज इंद्र और कबूतर की जगह अग्निदेव खड़े थे।

इंद्र ने शिबि से कहा, 'महाराज, मैं आपकी परीक्षा ले रहा था और आप परीक्षा में सफल हुए हैं। मैंने जितना सुना था, आप उससे कहीं अधिक उदार और धर्म-परायण हैं। मैं आपको प्रणाम करता हूं।' फिर इंद्र ने शिबि को स्पर्श करके उसे आशीर्वाद दिया, तो शिबि पहले की तरह कांतिमय और स्वस्थ हो गया। फिर अग्निदेव ने भी शिबि को आशीर्वाद दिया, 'महाराज, आपने जो किया है, उसके सामने धर्म और उदारता के समस्त कृत्य तुच्छ हैं। संसार में युगों-युगों तक आपकी ख्याति रहेगी!' यह कहकर इंद्र और अग्निदेव अंतर्धान हो गए। शिबि की ख्याति सभी दिशाओं में फैली और उसने अनेक वर्षों तक धरती पर शासन किया।

# उम्र बढ़ने के साथ संगीत की रुचि घट जाती है

इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ फोटोग्राफिक इंडस्ट्री के अनुसार, दुनिया भर में लोग प्रति सप्ताह औसतन 20.1 घंटे संगीत सुनने में बिताते हैं। अमूमन माना जाता है कि संगीत सुनने की कोई उम्र नहीं होती है। जब, जैसे और जिसने चाहा, अपने मूड के अनुसार संगीत सुन लिया। शोध बताते हैं कि करीब 11 वर्ष तक की आयु के बच्चे संगीत को पसंद ज्यादा करते हैं, पर वे उससे अनजान होते हैं। लेकिन जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है, वैसे-वैसे संगीत के प्रति रुझान बढ़ता जाता है। 2013 में ढाई लाख से भी ज्यादा लोगों के साथ एक प्रयोग किया गया, जिसमें लोगों के संगीत को लेकर बदलते व्यवहारों की जांच की गई। इस शोध में पाया गया कि किशोरावस्था में सुबह के समय संगीत सुनने की इच्छा 20 फीसदी से घटकर वयस्कता में 13 फीसदी रह जाती है। अब इसकी वजह को लेकर शोधकर्ता कई विचार सामने लाते हैं। किशोर युवा संगीत को अपनी पहचान के रूप में इस्तेमाल करते हैं, ताकि इसकी मदद से वे सामाजिक समूह से जुड़ सकें और अपने व्यक्तित्व को उसके अनुरूप गढ़ सकें। एक व्याख्या यह दर्शाती है कि संगीत सुनने की इच्छा में आने वाली गिरावट का कारण उम्र के बढ़ने के साथ आने वाली जिम्मेदारियां हैं, क्योंकि युवाओं से अधिक जिम्मेदारियां वयस्कों पर होती हैं, जिसकी वजह से वे संगीत की अधिक खोज नहीं कर पाते हैं। यह तर्क भी दिया जाता है कि किशोर इस बात को लेकर ज्यादा जागरूक होते हैं कि वे क्या सुन रहे हैं। वहीं वे वयस्क, जो व्यायाम या अपने दैनिक कार्यों के समय संगीत सुनते हैं, नया संगीत सुनने के प्रति कम जागरूक होते हैं। न्यूरो साइंटिस्ट डेनियल लेवटिन अपनी पुस्तक *दिस इज योर ब्रेन ऑन म्यूजिक* में लिखते हैं कि 'जब हम संगीत के एक हिस्से को पसंद करते हैं, तो यह हमें अन्य सुने हुए संगीत की याद दिलाता है, और यह हमारे जीवन में अतीत की स्मृतियों को फिर से सक्रिय कर देता है।' संगीत सुनते समय जिसे हम अपनी 'पसंद' समझते हैं वह मस्तिष्क से उत्पन्न हुई महज एक प्रतिक्रिया है, जो अतीत के सुखों के आधार पर खुशी की उम्मीद पैदा करती है। जब हम नया संगीत सुनना बंद कर देते हैं, तो संगीत और आनंद के बीच का संबंध भी टूट जाता है। हालांकि इस स्थिति तक पहुंचने में एक से दो दशक तक लग जाते हैं, लेकिन अंततः परिणाम यह निकलता है कि युवाओं का संगीत अलग-थलग हो जाएगा और इसे सुनने में भी आनंद की अनुभूति नहीं होगी। हालांकि, हाल के शोध से पता चलता है कि संगीत की चाहत को शांत नहीं किया जा सकता, बल्कि यह जीवन भर विकसित होती रहती है।

टिमोथी मैकेनरी
संगीत के प्रोफेसर, ऑस्ट्रेलियाई कैथोलिक विश्वविद्यालय

संगीत सुनते समय जिसे हम अपनी 'पसंद' समझते हैं, वह मस्तिष्क से उत्पन्न हुई महज एक प्रतिक्रिया है, जो अतीत के सुखों के आधार पर खुशी की उम्मीद पैदा करती है।

यदृच्छालाभसंतुष्टो
द्वंद्वातीतो विमत्सरः।
समः सिद्धावसिद्धौ च
कृत्वापि न निबध्यते।।

अर्थात जो स्वतः होने वाले लाभ से संतुष्ट रहता है, जो द्वंद्व से मुक्त है और ईर्ष्या नहीं करता, जो सफलता तथा असफलता, दोनों में स्थिर रहता है, वह कर्म करता हुआ भी कभी नहीं बंधता।

- भीष्म पर्व, गीता 4/22
(अर्जुन के प्रति साक्षात भगवान श्रीकृष्ण का गीतोपदेश)

प्रस्तुति : विवेक चौरसिया

अध्ययन कक्ष

# आजादी के आंदोलन के कम मशहूर चेहरों की भी कहानी थी

स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े ज्यादातर दस्तावेजों में गांधी, नेहरू और पटेल का ही वर्चस्व दिखता है। पर जो कम दिखे, वे भी वास्तविक लोग थे, जिन्होंने आजादी के संघर्ष में अपनी छाप छोड़ी। यह पुस्तक उन्हीं के बारे में है।

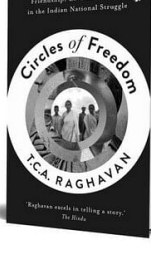





**सर्कल ऑफ फ्रीडम**
**फ्रेंडशिप, लव ऐंड लॉयल्टी इन द इंडियन नेशनल स्ट्रगल**
लेखक-टीसीए राघवन
प्रकाशक- जगरनॉट
मूल्य-रुपये 591
पेपरबैक

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का कभी कोई एक चेहरा नहीं रहा। लाखों लोगों ने इसमें भाग लिया। महत्वपूर्ण धाराओं और व्यक्तित्वों ने इसे आकार दिया। यह दीगर बात है कि इससे जुड़े ज्यादातर दस्तावेजों में गांधी, नेहरू, पटेल और आंबेडकर के अलावा भारत सरकार अधिनियम, गोलमेज और जन आंदोलन जैसी घटनाओं का ही वर्चस्व दिखता है। लेकिन जो कम दिखे, वे भी वास्तविक लोग थे, जिन्होंने देश की आजादी के महान संघर्ष में अपने तरीके से छाप छोड़ी। राजनयिक से इतिहासकार बने टीसीए राघवन की यह पुस्तक *सर्कल ऑफ फ्रीडम : फ्रेंडशिप, लव ऐंड लॉयल्टी इन द इंडियन नेशनल स्ट्रगल* ऐसे ही कुछ चरित्रों के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन की कहानी बताने का महत्वाकांक्षी प्रयास है। देश की स्वतंत्रता की कहानी में बड़े और मशहूर नेताओं के बीच के संबंधों के बारे में हम सभी ने जरूर सुना है। लेकिन स्वतंत्रता आंदोलन की कहानी वास्तव में कभी भी व्यक्तिगत मित्रता के चश्मे से नहीं बताई गई है। राघवन अपनी पुस्तक में बिल्कुल यही करते हैं। मूल रूप से, यह किताब तीन शख्सियतों और सरोजिनी नायडू के साथ उनकी दोस्ती के बारे में है। ये तीन शख्सियतें हैं, वकील-राजनेता आसफ अली, जो अमेरिका में पहले भारतीय राजदूत बने; सैयद महमूद, जो विदेश मामलों के उप मंत्री बने और पत्रकार सैय्यद हुसैन, जो मिस्र में भारत के पहले राजदूत थे। पुस्तक के केंद्र में आसफ अली हैं, जिनकी कहानी राष्ट्रीय आंदोलन में उदारवादी मुस्लिमों की दुर्दशा को दिखाती है। उन्हें कांग्रेस में कई लोग संदेह से देखते हैं और उनके अपने समुदाय के कई लोग विद्रोही के रूप में देखते हैं। तेज-तर्रार अरुणा आसफ अली के साथ उनके विवादित विवाह ने न केवल हिंदू-मुस्लिम संबंधों को लेकर उठ रहे सवालों को उठाया, बल्कि यह भी कि बदलाव का रास्ता सांविधानिक होना चाहिए या फिर क्रांतिकारी। सरोजिनी नायडू एक दूसरी पात्र हैं, जिनके जीवंत व्यक्तित्व और हिंदू-मुस्लिम एकता की उनकी जोशपूर्ण वकालत ने उन्हें राष्ट्रीय आंदोलन के शुरुआती वाहकों में से एक बना दिया। यह किताब उनकी भीतरी दुनिया की एक झलक पेश करती है, जिसमें मुहम्मद अली जिन्ना जैसे दोस्त भी शामिल थे। ऐसी अफवाह थी कि वह और जिन्ना प्रेमी थे, लेकिन अंततः वह 'रूट्टी (उर्फ रतनबाई, जिन्ना की पत्नी) के लिए भावनात्मक समर्थन का स्तंभ' बन गईं। पुस्तक में नायडू की बीमारी का उल्लेख है, जो अब भी एक रहस्य बना हुआ है। इंग्लैंड में अपने बच्चों में से एक 11 वर्षीय राणाधीरा को लिखे एक पत्र में, नायडू लिखती हैं, 'तुम जानते हो, परिवार मशीनरी के एक टुकड़े की तरह है। मशीनरी के चालू रहने के लिए प्रत्येक हिस्से को अच्छी स्थिति में होना चाहिए। इस पुस्तक में आसफ और उनके दोस्तों की आंखों से हमें स्वतंत्रता संग्राम की उन घटनाओं का एक अलग नजरिया मिलता है, जो हम बचपन से सुनते आ रहे हैं। सहानुभूति और गहरी अंतर्दृष्टि से लिखी गई यह पुस्तक एक चुस्त-दुरुस्त कथा है, जिसमें एक राजनयिक के रूप में राघवन का अनुभव उन स्थानों पर हल्के हस्तक्षेप की अनुमति देता है, जो पाठकों को तथ्यों से अवगत कराते हैं। ये छोटे-मोटे हस्तक्षेप हैं, जो पूरी प्रक्रिया से लेखक के जुड़ाव को दर्शाते हुए उसकी प्रामाणिकता का एहसास कराते हैं।

अभियान
amarujala.com
अमर उजाला



“कोई भी सफलता एक रात में नहीं मिलती है। उसके पीछे जाने कितने वर्षों की कड़ी मेहनत होती है।
- स्टीव जॉब्स

## गोल चबूतरा

Hindi@mithelesh

■ मिथिलेश बारिया

कार के बंद शीशों से
गरीबी छनकर दिखाई देती है,
वो जैसे काला चश्मा लगा लेने से
सूरज मद्धम हो जाता है न, ठीक वैसे...

जो बातें कही नहीं जातीं,
वो कहीं नहीं जातीं!

सब तजुर्बे नहीं थे,
कुछ गलतियां भी थीं...

## 22 किमी में तय हुई देश की रफ्तार

**झरोखा**
**5 मई**

**आज** के ही दिन सन 1835 में बेल्जियम में पहली रेल यात्रा सफलतापूर्वक शुरू हुई थी। बेल्जियम की राजधानी ब्रुसेल्स से तीन भाप वाली रेलगाड़ी को ग्रोएन्ड्रीफ स्टेशन से रवाना किया गया था। ट्रेन में नौ सौ यात्री सवार थे। करीब एक घंटे से अधिक समय के बाद ट्रेन मेकलेन शहर पहुंची थी। पहले रेल सफर को सुचारू बनाने के लिए सावधानीपूर्वक तैयारियां की गई थीं। बेल्जियम के तत्कालीन राजा ने व्यक्तिगत रूप से इंजनों का निरीक्षण किया था, हालांकि राजा ने स्वयं 22 किलोमीटर लंबे मार्ग पर यात्रा नहीं की थी। ट्रेन में ब्रिटिश इंजीनियर जॉर्ज स्टीफेंसन सवार थे, जिन्होंने भाप इंजन का आविष्कार किया था। इतिहासकारों के अनुसार, ब्रुसेल्स से मेकलेन तक की ट्रेन यात्रा दुनिया की पहली रेल यात्रा नहीं थी। ब्रिटेन में रेलगाड़ियां कई वर्षों से दौड़ रही थीं, लेकिन बेल्जियम के लिए यह गर्व की बात थी। एक युवा देश के लिए रेलवे नेटवर्क का निर्माण खुद को एक आधुनिक राज्य के रूप में पेश करने और अपनी औद्योगिक महत्वाकांक्षाओं पर जोर देने का शानदार तरीका था। बेल्जियम को आजाद हुए बमुश्किल चार साल ही हुए थे, जब सरकार ने एक राष्ट्रीय रेलवे नेटवर्क बनाने का फैसला किया था।

■ गुरुग्राम से कोमल गुप्ता

संस्कार है तो संस्कृति है। संस्कृति है तो जीवंत समाज है। जीवंत समाज ही देश को एक नई दिशा दे सकता है। हम कुरीतियों का विरोध करें, लेकिन अपने संस्कारों के साथ तो खड़े रहें।

# संस्कार के साथ खड़ा होना पड़ेगा

## विवाह भी तो एक संस्कार है

चिट्ठी 1

**स**नातन संस्कृति में मुख्यतः 16 संस्कारों का विधान किया गया है। इन संस्कारों में कुछ संस्कार व्यक्तिगत स्तर के होते हैं, जबकि कुछ संस्कार सामाजिक स्तर के होते हैं। इन्हीं सामाजिक संस्कारों में विवाह संस्कार भी शामिल है। इसमें परिवार, रिश्तेदार, शुभचिंतक और मित्रमंडली सभी शामिल होते हैं। विवाह कार्यक्रमों में दहेज की समस्या तो थी ही, अब तड़क-भड़क और फिजूलखर्ची भी बढ़ती जा रही है। आए दिन इस संबंध में चिंता व्यक्त की जाती है, लेकिन हालात नहीं सुधरते। फिजूलखर्ची से परिवारजनों का जो पैसा नवदंपति के भावी जीवन की योजनाओं को क्रियान्वित करने और स्वावलंबी बनने के काम आ सकता है, वह नाच-गाने, सजावट से लेकर महंगे मेनू में खर्च हो जाता है। इस पर नियंत्रण के लिए सबसे पहले समाज के उन लोगों को आगे आना चाहिए, जो खुद को अमीर और सबल मानते हैं। होता यह है कि निर्धन और कम आय वाले लोग जब सादगी से विवाह करते हैं तो उसका असर समाज में कम पड़ता है। संस्कारों को मजबूत करने के लिए समाज के उन लोगों को आगे आना चाहिए, जो खुद को समाज का अग्रणी और रहनुमा मानते हैं। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट द्वारा विवाह में संस्कारों के महत्व और सनातन संस्कृति में उल्लिखित व्यवस्था को बनाने का जो फैसला दिया गया है, वह स्वागत योग्य है। इसके लिए स्थायी नियम-कानून बनाए जाने चाहिए। वैवाहिक पंजीकरण में विवाह के वक्त का वीडियो लगाने का विधान भी बनाया जाना चाहिए। भले अंतरजातीय विवाह हो, लेकिन इसमें माता-पिता की सहमति भी शामिल करने का नियम होना चाहिए। कम अवस्था में युवाओं के विवाह के निर्णय से परिवार के लोगों की भावनाओं पर प्रतिकूल असर तो पड़ता ही है।

■ सलिल पांडेय, मिर्जापुर

## हर बूंद का हिसाब हमें रखना होगा

चिट्ठी 2

**'ज**ल ही जीवन है' की कल्पना सदियों पहले कर ली गई थी। वह भी तब, जब संरक्षित पर्यावरण, जल उगलते नदी-नाले और भरपूर बरसता पानी धरती के उदर में समाता था। मगर आज आधुनिकता की आबो-हवा ने हालात एकदम विपरीत कर दिए हैं। पर्यावरण और जल संरक्षण महज एक दिखावा बनकर रह गया है।

पक्की सड़कों और सीमेंट-कंक्रीट के निर्माण ने प्राकृतिक सुंदरता के साथ ही जल को भी जी का जंजाल बना दिया है। कभी तालाबों के शहर माने जाने वाले कई शहर आज बूंद-बूंद पानी के लिए तरस रहे हैं। ये हालात अनुचित जल दोहन और उसके अपव्यय से उपजे हैं। देश में ऐसे हालात लगातार आम होते जा रहे हैं। लोग धरती का सीना छलनी करते जा रहे हैं, मगर वे यह नहीं सोच रहे कि जब उसके उदर में कुछ पहुंचेगा, तभी तो वह कुछ उगलेगी। गरमी के बाद बरसात का मौसम शुरू होगा, ऐसे में जल संरक्षण के लिए प्राथमिक संरचनाओं का निर्माण होना चाहिए। अगर बरसात के दो माह पूर्व कुछ मेहनत करके जल संरचनाओं का निर्माण कर लिया जाए तो बारिश का बहता जल सीधे धरती के उदर में समा जाएगा। फिर सालभर लोगों को पानी के लिए तरसना नहीं पड़ेगा। आज फिर वही कहावत सिद्ध हो रही है कि 'जल है तो कल है'। ऐसे में हम सबकी भी जिम्मेदारी बनती है कि जितनी जरूरत हो, हम केवल उतने ही पानी का उपयोग करें। ध्यान रहे कि अगर हम आज जल की चिंता नहीं करेंगे तो कल हमारी आने वाली पीढ़ियों को इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा।

■ अमृतलाल मारू 'रवि', धार

## सिर्फ बात ही करते रहेंगे हम?

चिट्ठी 3

**भा**रत में प्रदूषण का स्तर कम होने का नाम नहीं ले रहा है। हमें समझना होगा कि सदियों से मानव और प्रकृति का गहरा सबंध रहा है। इन्सान ने प्रकृति की गोद में जन्म लिया, तभी उसका विकास संभव हो पाया। लेकिन आज मनुष्य अपने विकास की होड़ में हरी-भरी गोद यानी प्रकृति को उजाड़ने पर तुला है। विकास के नाम पर धड़ल्ले से जंगलों को काटा जा रहा है और पेड़ों पर आरियां चलाई जा रही हैं। वहीं अपने हित के लिए आजकल पहाड़ी राज्यों में भी पहाड़ों और जंगलों में आग लगाने की खबरें आम हो गई हैं। कहीं परालियां जलाई जाती हैं तो कहीं उद्योगों की चिमनियां प्रदूषण कर रही हैं। आलम यह है कि हर ओर धुंध छाई है और आंखों में जलन होने लगी है। वहीं, इन्सानों में भी अस्थमा जैसी बीमारी का खतरा बढ़ने लगा है। पेड़-पौधे सदियों से ऑक्सीजन छोड़कर हमें प्राण-वायु दे रहे हैं। अब वे भी दयनीय स्थिति से जूझ रहे हैं। क्या यह प्रकृति के साथ खिलवाड़ नहीं है? पेड़-पौधे प्रकृति की वह देन हैं, जिनका कोई विकल्प नहीं है। आज के समय में जिस प्रकार से पेड़ काटे जा रहे हैं, क्या उतने ही पेड़ हम लगा रहे हैं? शायद नहीं! हम जानते हैं कि पेड़-पौधे हमारे जीवन का अविभाज्य अंग हैं तो फिर क्यों हम उन अंगों को धीरे-धीरे खुद से अलग कर रहे हैं? क्या विकास के चक्कर में हम अपना विनाश नहीं कर रहे हैं? अभी भी समय है, हमें इस संबंध में गहराई से सोचना होगा और प्रकृति की रक्षा के लिए आवश्यक कदम उठाने होंगे।

■ लछ्मण पुण्डीर, श्रीनगर गढ़वाल

**इनकी चिट्ठियां भी सराहनीय रहीं**

पटना से सरिता प्रसाद, दिल्ली से विजय किशोर तिवारी, फिरोजाबाद से नितिन रावत, पटना से मुकेश कुमार मनन, शाजापुर से एमएम राजावतराज, फिरोजाबाद से शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी, आजमगढ़ से अवनीश कुमार गुप्ता, देहरादून से निधि मल्ल, मोहाली से अभिलाषा गुप्ता, बरेली से दिलीप कुमार गुप्ता, बड़वानी से डॉ. विकास पंडित, गाजियाबाद से ललित शंकर।

**हमें लिखें**
abhiyan@amarujala.com

## कुछ अलग

### पहलवान रुलाए बच्चा रोए

एक मुकाबले में सूमो पहलवान बच्चों को रुलाते हैं। जो बच्चा सबसे पहले और सबसे जोर से रोता है, वही बच्चा बाजी जीतता है।

**जापान** में 'नाकिजुमो क्राइंग बेबी' नाम के फेस्टिवल का आयोजन होता है। यह एक अनोखा सांस्कृतिक पर्व है, जो हर साल मनाया जाता है। सदियों पुराने इस त्योहार का उद्देश्य नवजात शिशुओं को जोर-जोर से रोने के लिए प्रोत्साहित करना है। इसके साथ ही उनके अच्छे स्वास्थ्य और सौभाग्य की कामना की जाती है। आयोजन के दौरान रंग-बिरंगे पारंपरिक परिधानों में सजे सूमो पहलवान शिशुओं को गोद में लेते हैं और उन्हें पालने में बिठाते हैं। सूमो पहलवान बच्चों को रुलाने की कोशिश करते हैं, वहीं रिंग असिस्टेंट भी उनको रुलाने के लिए 'डरावने मुखौटे' पहनते हैं। मान्यता है कि बच्चा जितनी जोर से रोता है, उसका भविष्य उतना ही स्वस्थ और समृद्ध होता है। यह उत्सव लगभग 400 साल पुराना है। नाकिजुमो क्राइंग बेबी फेस्टिवल जापान में महत्वपूर्ण सांस्कृतिक महत्व रखता है। यह इस विश्वास पर आधारित है कि शिशुओं के आंसू जीवन शक्ति लाते हैं और बुरी आत्माओं को दूर भगाते हैं। महज प्रतिस्पर्धा से परे यह आयोजन परिवारों के लिए अपने बच्चों को आशीर्वाद दिलाने और जीवनभर की यादें बनाने का एक यादगार अवसर होता है। यह फेस्टिवल इतना लोकप्रिय है कि इसमें भाग लेने वाले प्रतिभागी लॉटरी प्रणाली के माध्यम से स्थान सुरक्षित करते हैं। प्रत्येक वर्ष लगभग सौ भाग्यशाली शिशुओं को ही इस आयोजन में भाग लेने का मौका मिलता है। जब माता-पिता, बच्चे, रिश्तेदार, दोस्त और पर्यटक इस कार्यक्रम को देखने के लिए आते हैं तो कार्यक्रम स्थल दर्शकों से भर जाता है। यह फेस्टिवल अपनी स्थायी परंपराओं और गहन मूल्यों को प्रदर्शित करके जापानी संस्कृति को जीवंत बनाता है।

■ किरण सिंह, पटियाला

## इतिहास का एक आनंद

साल 1971 में आई फिल्म 'आनंद' बॉक्स ऑफिस पर हिट हुई थी। फिल्म में राजेश खन्ना और अमिताभ बच्चन के अभिनय को खूब सराहा गया था। तस्वीर में दोनों फिल्म का मुहूर्त शॉट फिल्मा रहे हैं।

■ दिल्ली से राम नारायण

## छायानट

### आखिर क्रिकेटर क्यों नहीं बन पाए अन्ना



**सुनील** शेट्टी का नाम बॉलीवुड के बड़े अभिनेताओं में गिना जाता है। कम ही लोग जानते हैं कि वह पहले क्रिकेटर बनना चाहते थे। उन्हें लगता था कि वह अच्छा क्रिकेट खेलते हैं, लेकिन कुछ समय बाद उन्हें अहसास हुआ कि दुनिया में टैलेंट की कमी नहीं है। उन्होंने क्रिकेट के लिए मार्शल आर्ट भी सीखना शुरू किया था। ऐसे में वह क्रिकेटर तो नहीं बन सके, मगर मार्शल आर्ट की वजह से राजीव राय ने उन्हें फिल्म ऑफर कर दी। 'आरजू' नाम की यह फिल्म करीब 99 प्रतिशत पूरी हो गई थी। आखिर में प्रोड्यूसर और डायरेक्टर के बीच मतभेद हो गया और फिल्म रिलीज नहीं हो पाई, लेकिन यहीं से सुनील शेट्टी के लिए फिल्मों का रास्ता खुल गया। सुनील शेट्टी की पहली रिलीज फिल्म 'बलवान' थी। कई हीरोइनों ने इस फिल्म में सुनील शेट्टी के साथ काम करने से इनकार कर दिया था। कोई भी एक्ट्रेस एक डेब्यू करने वाले एक्टर के साथ काम करने को तैयार नहीं थी। किस्मत से स्टार अभिनेत्री दिव्या भारती के साथ उनकी पहली फिल्म रिलीज हुई।

■ अमन सिंह, जम्मू

# विज्ञान और धर्म

विज्ञान को धर्म के अंतर्गत लाने की कोशिश खतरनाक है। जिस तरह बहुत पहले रूस में राजनीतिक हठधर्मिता ने रूसी विज्ञान को दशकों पीछे धकेल दिया और नाजियों की कट्टरता ने जर्मन विज्ञान को नष्ट कर दिया था, ऐसी स्थिति भारत में नहीं होनी चाहिए।



रामचंद्र गुहा
जाने-माने इतिहासकार

**वर्ष** 2009 में दो प्रसिद्ध शिक्षाविदों एवं शीर्ष वैज्ञानिक अनुसंधान केंद्रों के निदेशकों ने मुझे बताया था कि उन्हें विदेश में रहने वाले भारतीय शोधकर्ताओं से नौकरियों के लिए सबसे अच्छे आवेदन मिल रहे थे। यह दिलचस्प था, वे भारतीय वैज्ञानिकों के विदेश में नौकरी करने वाले स्वभाव से कहीं अधिक परिचित थे। दरअसल, वैज्ञानिकों की प्रतिभा एक बड़ी संख्या में पश्चिम देशों से वापस भारत की ओर लौट रही थी। प्रतिभा पलायन के इस आंशिक उलटफेर के कई कारण थे। वैश्विक वित्तीय संकट के कारण पश्चिमी विश्वविद्यालय धन की कमी का सामना कर रहे थे, वहीं भारत अनुसंधान और छात्रवृत्ति पर अधिक खर्च कर रहा था। केंद्र सरकार ने उच्च गुणवत्ता वाले अनुसंधान केंद्रों की एक श्रृंखला स्थापित की, जिन्हें भारतीय वैज्ञानिक शिक्षा और अनुसंधान संस्थान (आईआईएसईआर) के रूप में जाना जाता है। इसके अलावा कई नए आईआईटी भी खुले। इन सभी ने अपने संकाय में शामिल होने के लिए प्रतिभाशाली व्यक्तियों को आकर्षित किया।

1940-50 के दशकों में विदेशों से पीएचडी किए कुछ विद्वान भारत लौट आए थे, जिनमें ई.के.जानकी अम्मल, होमी भाभा, एम.एस. स्वामीनाथन, सतीश धवन और ओबैद सिद्दीकी जैसे विश्व स्तरीय वैज्ञानिक शामिल थे। उनके भारत लौटने की पहली वजह थी, अपनी मातृभूमि से प्रेम। ये सभी उस समय बड़े हुए थे, जब यहां राष्ट्रीय आंदोलन चल रहा था। जब भारत स्वतंत्र हो गया तो वे इसके भविष्य को आकार देने में मदद करने के लिए अपनी मातृभूमि में लौटना चाहते थे। हालांकि बाद के दशकों में जिन लोगों ने विदेश में पीएचडी की, काम करने के लिए उनके वहीं रहने की संभावना अधिक थी। वजह यह कि अधिकांश वैज्ञानिक अनुसंधान करने की स्वतंत्रता और अच्छा जीवन जीने के लिए बेहतर सामाजिक वातावरण चाहते हैं, जिसमें वे परिवार का पालन-पोषण कर सकें। अगर अपने देश में भी इसी तरह के मानदंड हों तो वे यहां भी काम करना चाहेंगे।

2009 में जब बेंगलुरु में मैंने बात की थी, भारतीय वैज्ञानिक पारिस्थितिकी तंत्र हाल के दिनों की तुलना में अधिक आशाजनक लग रहा था। अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रही थी, जिससे शैक्षणिक वेतन में वृद्धि हुई। समाज भी पिछले दशकों की तुलना में अधिक सहिष्णु और अधिक मिलनसार दिखाई दिया। ऐसा लगता है कि 1990 और 2000 के दशकों की शुरुआत में सांप्रदायिक ध्रुवीकरण समाप्त हो गया था। स्वतंत्र अनुसंधान करने की इच्छा रखने वाले युवा वैज्ञानिक के लिए 1999, 1989 या 1979 की तुलना में 2009 भारत में नौकरी की तलाश करने के लिए कहीं बेहतर समय था। पंद्रह सालों के बाद क्या विदेश से पीएचडी करके भारत लौटने के इच्छुक युवा वैज्ञानिकों के लिए स्थिति अब भी उतनी ही आकर्षक होगी? मुझे इस पर भारी संदेह है। इसका मुख्य कारण यह है कि मोदी के नेतृत्व वाली वर्तमान सरकार, डॉ. मनमोहन सिंह की सरकार की तुलना में वैज्ञानिक अनुसंधान के प्रति कहीं अधिक प्रतिकूल है। प्रधानमंत्री मोदी हार्वर्ड में पढ़ने वालों की तुलना में कड़ी मेहनत को प्राथमिकता देते हैं।

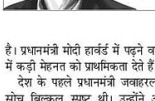

देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की सोच बिल्कुल स्पष्ट थी। उन्होंने आईआईटी की स्थापना की और टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च का पुरजोर समर्थन किया था। डॉ. मनमोहन सिंह ने भी आईआईएसईआर की स्थापना में मदद की। नेहरू से लेकर डॉ. सिंह के बीच के सभी प्रधानमंत्रियों ने इसी तरह बुनियादी अनुसंधान को बढ़ावा दिया। लेकिन 2014 के बाद से ये सब बदल गया है। एक तो वैज्ञानिक और तकनीकी अनुसंधान को बढ़ावा देने में नरेंद्र मोदी की रुचि बहुत कम है, दूसरे उन्होंने हिंदुत्व विचारकों को आईआईटी के कामकाज में हस्तक्षेप करने की अनुमति दे रखी है। पहले इन संस्थानों के निदेशकों को उनके अकादमिक साथियों द्वारा चुना जाता था, लेकिन अब इन संस्थानों के निदेशकों के नामों की दक्षिणपंथी विशेषज्ञों द्वारा जांच की जाती है और उनकी विचारधारा का पालन करने वालों को ही चुना जाता है।

कुछ समय पहले विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) के सचिव द्वारा जारी किए गए नौ ट्वीट्स की एक श्रृंखला में भारतीय विज्ञान में हिंदुत्व की वैचारिक पैठ को स्पष्ट रूप से चित्रित किया गया। इन्होंने बेंगलुरु के भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान की एक ऐसी प्रणाली तैयार करने के लिए प्रशंसा की, जिससे राम नवमी पर अयोध्या के नए मंदिर में भगवान की मूर्ति पर सूरज की रोशनी पड़ सके। उनके ट्वीट को लेकर सोशल मीडिया पर तीखी टिप्पणियां हुईं। कुछ आलोचक तो यहां तक कहने लगे कि सचिव महोदय जिस बात की भारतीय विज्ञान में महान योगदान के रूप में प्रशंसा कर रहे थे, वह कार्य हाईस्कूल के किसी तेज छात्र द्वारा भी किया जा सकता था। मैं इस मामले को लेकर अपने उस दोस्त के पास गया, जिसने अमेरिकी विश्वविद्यालय से भौतिकी में पीएचडी की थी। उन्होंने धैर्यपूर्वक मुझे समझाया कि किस तरह से लेंस और दर्पणों को कलात्मक रूप से डिजाइन करके और उन्हें रणनीतिक रूप से सही जगहों पर रखकर सौर और चंद्र चक्रों के बीच विच्छेदन/संयोजन की गणना करके अयोध्या में मूर्ति पर सूर्य के प्रकाश को चमकाया गया था। इस तरह से विज्ञान को थोड़ा परिष्कृत किया गया था, लेकिन यह अभूतपूर्व तो किसी भी तरह से नहीं था। यह संभव है कि डीएसटी सचिव कट्टर हिंदू हों, फिर भी वह यह तो निश्चित रूप से जानते हैं कि प्रधानमंत्री द्वारा राम मंदिर का उद्घाटन आम चुनाव से कुछ दिन पहले आध्यात्मिक कारणों से नहीं, बल्कि राजनीतिक कारणों से किया गया था। उन्होंने स्वयं को इसके सर्जक और प्रेरणास्रोत के रूप में प्रस्तुत किया। इसके बावजूद डीएसटी सचिव ने इस बात को उजागर करना उचित समझा कि किसी प्रतिष्ठित संस्थान द्वारा अब तक किया गया सबसे कमजोर वैज्ञानिक कार्य क्या हो सकता है। यह मामला पीएम की पसंदीदा राजनीतिक परियोजना से संबंधित है और चुनाव शुरू होने से कुछ ही दिन पहले हुआ, यह संयोग नहीं है।

यह अत्यंत दुखद है कि प्रेस पर मोदी सरकार के हमले, सिविल सेवाओं और राजनयिक कोर का राजनीतिकरण, सशस्त्र बलों को धर्मनिरपेक्ष न रहने देने की कोशिश और स्वतंत्र नियामक संस्थानों को अपने अधीन करने का प्रयास किया गया है। इस बात की किसी को चिंता नहीं कि यह भारत में विज्ञान के अध्ययन को कमजोर कर रहा है। नाजियों के नस्ल सिद्धांत ने जर्मन विज्ञान को नष्ट कर दिया था। मार्क्सवाद की राजनीतिक हठधर्मिता ने रूसी विज्ञान को दशकों पीछे धकेल दिया। अब हमारे देश में सर्वोत्तम संस्थानों के शोधकर्ताओं के काम को हिंदुत्व और नरेंद्र मोदी की महिमा के अनुरूप ढालने की कोशिश हो रही है। इसका भारत में वैज्ञानिकों के मनोबल पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

जब विज्ञान पूरी तरह धर्म और राजनीति के हितों के अधीन है तो यहां काम करने वाले कौन से प्रतिभाशाली शोधकर्ता विदेशों से आने वाले आकर्षक प्रस्तावों का विरोध करेंगे और इस स्थिति में विदेशों में प्रशिक्षित किन वैज्ञानिकों के अपने देश में काम पर लौटने की संभावना है?

## हंसने के लिए मौका देखें, बस!

डॉ. लोकेन्द्रसिंह कोट



**खुला आकाश**

*मुस्कुराने और हंसने के बीच जो फासला है, वह व्यक्तित्व का भी परिचायक है। मुस्कान के पास बड़े कारण होते हैं, लेकिन हंसी के पास कोई बड़े कारण नहीं होते।*

**आज** विश्व हास्य दिवस है। हल्की प्रकृति के बावजूद हास्य वास्तव में एक परिष्कृत तनाव-निवारण तंत्र है, जो मनुष्यों में विशिष्ट रूप से विकसित होता है। अधिकांश लोग अनुभूति की सराहना करते हैं और उसकी तलाश करते हैं। शायद इसलिए कि यह मजेदार है। अच्छी हंसी का आनंद लेना कभी-कभी एक निरर्थक, यहां तक कि तुच्छ गतिविधि के रूप में देखा जाता है। हंसी इन्सान का सामाजिक संकेत देने का जरिया है। हंसी का मतलब रिश्तों से है। हंसी के जरिये हमारा अवचेतन मन यह संकेत देता है कि हम सुकून में हैं और सुरक्षित महसूस कर रहे हैं। हमारा दिमाग सुकून में होता है, तो हमारे जेहन में ज्यादा अच्छे विचार आते हैं। हम खुलकर काम करते हैं तो बेहतर नतीजे निकलते हैं।

ऐसा भी कहा जाता है कि हृदय के लिए कोई विशेष व्यायाम नहीं है, लेकिन हंसने से हृदय की एक्सरसाइज होती है। रक्त का संचार बेहतर होता है। इन्सान के अंदर बनने वाले स्ट्रेस हार्मोन में कमी आती है और तनाव घटने लगता है। शारीरिक और रासायनिक रूप से हंसना और रोना आपस में घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं। वैज्ञानिक लंबे समय से मानवीय भावनाओं की जटिल संरचना में हास्य की भूमिका के बारे में अनुमान लगाते रहे हैं। क्या आप जानते हैं कि जब किसी व्यक्ति में अल्जाइमर रोग की शुरुआत होती है तो उसके प्रियजनों में सबसे पहला बदलाव जो नोटिस किया जाता है, वह है व्यक्ति के हास्य की भावना में अंतर?

ब्रेन इमेजिंग से पता चलता है कि मस्तिष्क के कई क्षेत्र हास्य की धारणा उत्पन्न करने के लिए जटिल तरीके से एक साथ काम करते हैं। कई शोधकर्ताओं का मानना है कि हास्य को समझने से मानव अनुभूति के कुछ बुनियादी सिद्धांतों की अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में मदद मिलती है। बौद्धिक कार्य को बनाए रखने के लिए हास्य एक उपकरण है। यह शारीरिक, भावनात्मक और सामाजिक कल्याण का समर्थन करता है, जो मस्तिष्क स्वास्थ्य के तीन महत्वपूर्ण निर्माण खंड हैं। इन लाभों के अलावा हास्य हमारे दिमाग को अच्छी कसरत भी दे सकता है। कम या यहां तक कि बचकानी सोच के रूप में अपनी प्रतिष्ठा के बावजूद हास्य वास्तव में एक उच्च विकसित मानसिक व्यायाम हो सकता है, जो हमें विचारों को विभिन्न और वैज्ञानिक तरीकों से देखने के लिए प्रशिक्षित करता है।